आज़ादी का अमृत महोत्सव

मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 62 | अंक : 11-12 | मई-जून, 2022 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

प्रवेशोत्सव : 2022-23

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा),
संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा,
(पंचायती राज के अधीनस्थ), कला,
साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

ग्रीष्मावकाश में करें सार्थक प्रयास

गत दो वर्षों में कोरोना काल में लॉकडाउन के कारण विद्यालयों में नियमित अध्ययन अध्यापन बाधित रहा, ऑनलाइन शैक्षिक गतिविधियों पर जोर रहा। कुछ विद्यार्थियों के पास ऑनलाइन अध्ययन के लिए पर्याप्त सुविधाएँ नहीं थी। विद्यार्थियों की लिखने की आदत, लिखावट व लिखने की गति भी प्रभावित हुई है। विद्यार्थियों की फिजीकल, न्यूरोमस्क्यूलर गतिविधियों में भी कमी आई है। मुझे महसूस हो रहा है कि इससे लर्निंग गैप बढ़ा है। 17 मई, 2022 से ग्रीष्मावकाश आरम्भ होने जा रहा है अतः ग्रीष्मावकाश को देखते हुए इन सबके सुधार के लिए सार्थक प्रयास करने है।

मेरी सदेच्छा है कि शिक्षक एवं अभिभावक परस्पर समन्वय से काम लें। धैर्य के साथ विद्यार्थियों के व्यवहार का अवलोकन कर उन्हें मार्गदर्शन एवं संबलन प्रदान करें। उन्हें पढ़ने के लिए अच्छी पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएँ उपलब्ध करवाई जाए। विद्यालय पुस्तकालय से भी अच्छी पुस्तकें विद्यार्थियों को दी जा सकती है, जिससे उनमें नियमित पढ़ने एवं पढ़ कर लिखने की आदत पड़े। इसके लिए अलग से उत्तर पुस्तिका बनवाई जा सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब ग्रीष्मावकाश के बाद विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका को आरम्भ से अंत तक देखेंगे तो सकारात्मक अंतर उनको स्वयं ही नजर आएगा बस जरूरत है तो स्वयं से वादा कर एक ईमानदार प्रयास की।

मेरा शिक्षकवृन्द से आग्रह है कि वे स्वयं भी ग्रीष्मावकाश में स्वाध्याय करें जितना अधिक आप पढ़ेंगे उतना ही आपका शब्द ज्ञान और शब्दावली समृद्ध होगी, आप बेहतर लिख पाएंगे, बोल पाएंगे। इसके साथ ही आपकी विषय पर पकड़ मजबूत होगी और आप विषय की नवीन जानकारियों से अद्यतन रहेंगे। संस्थाप्रधान, शिक्षक बीते शैक्षिक सत्र का सूक्ष्म एवं सदाशय मूल्यांकन करें कि उनकी क्या योजनाएं थी, क्या उपलब्धियाँ रही और कहाँ कमी रह गई। इन सब को ध्यान में रखते हुए आगामी शैक्षिक सत्र की यथार्थ योजना आपको बनानी होगी। उसे पूरा करने के लिए आपको गंभीर प्रयास भी करने होंगे तभी योजना को साकार कर पाएंगे। गत सत्रों में हमारे राजकीय विद्यालयों में नामांकन में वृद्धि हुई है साथ ही साथ भामाशाह भी ज्ञान, संकल्प पोर्टल एवं मुख्यमंत्री विद्यादान कोष के माध्यम से विद्यालय की आधारभूत संरचना में सुधार एवं भौतिक संसाधनों को उपलब्ध करवाने में अपना योगदान दे रहे है।

संस्थाप्रधानों से कहना चाहूँगा कि वे विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए काम करें। अभी राज्य सरकार द्वारा 5587 शारीरिक शिक्षकों की नियुक्ति के लिए मंजूरी दी गई है, 115 राजकीय बालिका प्राथमिक विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत हुए है। इस घोषणा से निस्संदेह जहाँ विद्यालयों में स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के माध्यम से स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण होगा, वहीं बालिका शिक्षा को और अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।

समस्त संस्थाप्रधान, पीईईओ अधीनस्थ विद्यालयों में नामांकन वृद्धि अभियान की सफलता के लिए विशेष चेष्टा करें। जन साधारण को राजकीय विद्यालयों की विशेषताओं, राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थी हित में जारी विभिन्न योजनाओं की जानकारी एवं राजकीय विद्यालयों के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम की जानकारी देकर आस-पास के बच्चों को अपने विद्यालय से जोड़ने का प्रयास करें।

नए शैक्षिक सत्र की आप सभी को शुभकामनाएँ.........! स्वस्ति।

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

“मेरा शिक्षकवृन्द से आग्रह है कि वे स्वयं भी ग्रीष्मावकाश में स्वाध्याय करें जितना अधिक आप पढ़ेंगे उतना ही आपका शब्द ज्ञान और शब्दावली समृद्ध होगी, आप बेहतर लिख पाएंगे, बोल पाएंगे। इसके साथ ही आपकी विषय पर पकड़ मजबूत होगी और आप विषय की नवीन जानकारियों से अद्यतन रहेंगे। संस्थाप्रधान, शिक्षक बीते शैक्षिक सत्र का सूक्ष्म एवं सदाशय मूल्यांकन करें कि उनकी क्या योजनाएं थी, क्या उपलब्धियाँ रही और कहाँ कमी रह गई। इन सब को ध्यान में रखते हुए आगामी शैक्षिक सत्र की यथार्थ योजना आपको बनानी होगी।”

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

मेरा संदेश

शुरूआत करें स्वयं से...

गत शैक्षिक सत्र विदा हो चुका हैं। हमें नए शैक्षणिक सत्र 2022-23 का स्वागत नई योजनाओं, नए संकल्पों के साथ समर्पित भावना से विद्यार्थियों के जीवन को एक नया आकार, नई दिशा देकर करना होगा।

अपनी मातृभाषा सीखने के साथ-साथ विद्यार्थियों को अन्य भाषाएँ भी सीखनी चाहिए। राज्य में महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की स्थापना की पीछे राज्य सरकार की यही भावना रही है कि हमारे विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा के साहित्य एवं ज्ञान की जानकारी रखे ताकि आज के प्रतिस्पर्धा के युग में वे स्वयं को बेहतर साबित कर सके।

दैनिक जीवन में प्लास्टिक का उपयोग हम विभिन्न रूपों में कर रहे है। इसके हानिकारक प्रभावों के बारे में अक्सर सुनते और पढ़ते रहते हैं। प्लास्टिक अप्राकृतिक एवं कृत्रिम है। इसका विघटन नहीं होता है, इस कारण इसका निपटान मुश्किल होता है। इसे सस्ता, सुंदर एवं सुविधाजनक मानकर इसका उपयोग अधिक होता है। नए शैक्षणिक सत्र में हमें विद्यार्थियों को प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों को बताते हुए इसके उपयोग के निषेध का संकल्प लेना है। इसकी शुरूआत पॉलीथीन की थैलियों के उपयोग को यथासंभव बंद करके कर सकते हैं। जब भी बाजार सामान खरीदने जाएँ कपड़े का थैला अपने साथ रखने की आदत हम सब को डालनी होगी ताकि पॉलीथीन का इस्तेमाल बंद किया जा सके। समय-समय पर सरकारों द्वारा पॉलीथीन पर प्रतिबंध लगाए जाते रहे हैं। लेकिन जब तक आमजन सकारात्मक होकर इसकी पालना नहीं करेंगे तब तक इसके सार्थक परिणाम सामने नहीं आएंगे। इसकी शुरूआत हमें स्वयं से करनी होगी।

21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस है। भारत में योग का इतिहास बहुत पुराना है। योग शरीर के अंगों के साथ-साथ मस्तिष्क एवं आत्मा में भी संतुलन स्थापित होता है। योग हम सब की जीवन शैली में शामिल होना चाहिए। विद्यालय में यदि विद्यार्थियों को सरल योगासन/योग क्रियाएँ करवायी जाएँ तो निःसंदेह प्रकृति से जुड़ पाएंगे। वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

ग्रीष्मावकाश शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए विशेष है। इस दौरान आप स्वयं को तरोताजा, कुछ नया सोचें एवं परिवार के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करें। इससे परिवार में परस्पर संबंध समरस और प्रगाढ़ होंगे। अभिभावक अपने बच्चों के साथ समय व्यतीत करें। उनमें अच्छी आदतों एवं संस्कारों को रोपने का प्रयास करें। बच्चों में कोई कौशल जैसे संगीत, चित्रकला, पेंटिंग आदि विकसित करवाने से उनमें आत्मविश्वास का संचार होगा।

Zahida

(जाहिदा खान)

> “नए शैक्षणिक सत्र में हमें विद्यार्थियों को प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों को बताते हुए इसके उपयोग के निषेध का संकल्प लेना है। इसकी शुरूआत पॉलीथीन की थैलियों के उपयोग को यथासंभव बंद करके कर सकते हैं।”

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षा से संस्कार एवं ज्ञान के नए अंकुर....

जीवन को सही मार्ग देने और सफल समृद्ध करने तथा सत, चित्त और आनंद प्राप्त करने में शिक्षा का महत्त्व है। शिक्षा को हम एक शब्द में व्यक्त नहीं कर सकते हैं। शिक्षा से हमारा जीवन है, जो हमें जीना सिखाती है। शिक्षा हम सभी के जीवन में सकारात्मक विचार लाकर नकारात्मक विचारों को हटाती है। साधारण शब्दों में शिक्षा का अर्थ पढ़ाई या किसी काम के लिए सुशिक्षित होने को माना जाता है, लेकिन शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान का अर्जन नहीं बल्कि ज्ञान का निर्माण करना है। शिक्षा जीवन में सर्वांगीण सफलता और सम्पन्नता प्रदान करने के लिए संस्कार और सुरुचि के अंकुर उत्पन्न कर व्यक्तित्व निर्माण करती है। समाज में शिक्षा का महत्त्व उतना ही है, जितना जीवन में जल का है। शिक्षा के उपयोग तो अनेक हैं परन्तु उसे सही और नई दिशा देने की आवश्यकता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि एक व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सके। हम अपने जीवन में शिक्षारूपी साधन का उपयोग करके सफलता के मार्ग में आगे बढ़ सकते हैं। मेरे प्यारे विद्यार्थियों यदि जीवन में कुछ अच्छा करना चाहते हैं तो उनको सीखने का जज्बा पैदा करना होगा।

सीखने के लिए एक जुनून पैदा कीजिए,
यदि आप कर लेंगे तो आपका विकास कभी नहीं रूकेगा।''

समाज में शिक्षक की महत्ता सदा रही है। शिक्षक का कार्य समाज का पथ प्रदर्शक के रूप में, सिखाने वाला एवं आदर्श व्यक्तित्व के रूप में रहा है। शिक्षक समाज का दर्पण है, एक प्रकाशपुंज है जो कि विद्यार्थियों को अंधकार से उजाले की तरफ ले जाता है। शिक्षण एक त्रिस्तरीय धारा है, जिसमें शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। सभी शिक्षकों के लिए मैं यह कहना चाहूँगा कि वे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के कथन ''इस देश में सबसे अच्छे दिमाग क्लास की लास्ट बेंच पर मिल सकते हैं' को आत्मसात करते हुए अपना शिक्षण करावें।

“शिक्षण एक त्रिस्तरीय धारा है, जिसमें शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। सभी शिक्षकों के लिए मैं यह कहना चाहूँगा कि वे पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के कथन ''इस देश में सबसे अच्छे दिमाग क्लास की लास्ट बेंच पर मिल सकते हैं' को आत्मसात करते हुए अपना शिक्षण करावें।”

ग्रीष्मकालीन अवधि में शिक्षक एवं विद्यार्थियों से मेरा यह अनुरोध रहेगा कि गत दो वर्षों में कोरोना काल से शिक्षण एवं सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में जो अंतर रहा है, उसे पूर्ण करने का प्रयास करें। आगामी माह से प्रारंभ होने वाले नवीन सत्र 2022-23 के अवसर पर सभी संस्थाप्रधानों, अध्यापकों एवं प्यारे विद्यार्थियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ एवं बधाई के साथ....

आपका अपना
(गौरव अग्रवाल)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 62 | अंक : 11 | चैत्र-वैशाख २०७९ | मई-जून, 2022

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल

वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला

सम्पादक
मनीष कुमार गहलोत

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

मेरा संदेश
- शुरूआत करें स्वयं से... 3

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- शिक्षा से संस्कार एवं ज्ञान के नए अंकुर 4

आलेख
- लर्निंग लॉस : एक चुनौती 7
  डॉ. प्रमोद कुमार चमोली
- सिद्धार्थ से सिद्धि तक - एक अनुपम यात्रा 11
  देवेन्द्र पण्ड्या
- गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता 13
  डॉ. महेश चन्द्र शर्मा
- विश्व योग दिवस : 21 जून 2022 15
  विनोद जोशी योगसाधक
- संगीत और योग 16
  ज्ञानेश्वर सोनी
- महाराणा प्रताप का जीवन वृत्तान्त 17
  विनोद कुमार महात्मा
- गाँधीजी के मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक विचारों की उपादेयता 19
  डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
- महादेवी के मूक साथी 21
  आशा शर्मा
- आओ पुनः सजायें-बचपन में छुट्टियों के रंग 23
  विकास चन्द्र 'भारू'
- Telecast Schedules of PM e-Vidya 30
- सौहार्द का पर्व ईद-उल फितर 31
  मौहम्मद अकरम सम्मा
- English for Communication at School 32
  Dr. Ram Gopal Sharma
- संघर्ष : सफलता का सोपान 34
  अनिता चौधरी
- खिलौना आधारित शिक्षण एवं खिलौना क्षेत्र 35
  विनीत कुमार लोढ़ा
- आनंददायी और ज्ञानवर्धक ग्रीष्मावकाश 36
  मनोज कुमार पारीक
- एसपीसी टूर - एक उर्वर व उत्पादक यात्रा 37
  कमल किशोर पीपलवा
- स्वस्थ व स्वच्छ आदतों के विकास का कार्यक्रम है-वेस्ट टू बेस्ट 38
  तुलसी राम
- धैर्य एवं सद्भावना से मिली सफलता 39
  राजेश जोशी
- विनम्र प्रार्थना 40
  शिवशंकर सुमन

रपट
- माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय चेनपुरा में संबलन 10
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुन्तासर, श्री डूंगरगढ़ 42

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!
- मेरा विद्यालय : मेरा अभिमान 41
  भागीरथ राम

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : अप्रेल, 2022 25-29
- बाल शिविरा 44-45
- शाला प्रांगण से 46-47
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 48-49
  मांगीलाल तेली
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 43
- कमर मेवाड़ी
  सम्पादक : माधव नागदा
  समीक्षक : **रत्नकुमार सांभरिया**
- मेरा गधा : गधों का लीडर
  लेखक : देवकिशन राजपुरोहित
  समीक्षक : **डॉ. मूलचंद बोहरा**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

▼ परिचय

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

भारतीय प्रशासनिक सेवा (RR. 14) के ऊर्जावान युवा प्रशासनिक अधिकारी श्री गौरव अग्रवाल ने 15 अप्रेल 2022, शुक्रवार को निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म 15 अगस्त 1984 को भरतपुर जिले में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जयपुर में हुई, आपने देशभर में 45वीं रैंक हासिल कर IIT कानपुर से B.Tech. (Computer Science) में उपाधि प्राप्त की है। इसके बाद आपने लखनऊ IIM से प्रबंधन का डिप्लोमा किया। तत्पश्चात आप सिविल सर्विसेज परीक्षा (UPSC) की तैयारी में जुट गए। आपकी मेहनत, आत्मविश्वास, देश सेवा की इच्छा और दृढ़ संकल्प से प्रथम प्रयास में ही आप IPS बन गए और फिर हैदराबाद से ट्रेनिंग करने लगे, परन्तु IPS की नौकरी आपकी प्राथमिकता में नहीं थी। आपने दूसरे प्रयास में सिविल सर्विसेज परीक्षा में टॉप कर 1st रैंक हासिल की।

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक संस्थान मंसूरी से प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत आप सहायक जिलाधीश एवं कार्यकारी मजिस्ट्रेट झालावाड; एसिस्टेंट सेक्रेटरी मिनिस्ट्री ऑफ कोऑपरेशन एंड फार्मर वेलफेयर, भारत सरकार नई दिल्ली; सबडिवीजन ऑफिसर एंड सबडिवीजनल मजिस्ट्रेट माउंट आबू (सिरोही), बाली (पाली); चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर जिला परिषद करौली; कमिश्नर जोधपुर डेवलपमेंट अथॉरिटी जोधपुर; कमिश्नर अजमेर डेवलपमेंट अथॉरिटी अजमेर, कलेक्टर एण्ड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट टोंक; अजमेर में पदस्थापित रहते हुए आपने अपनी विलक्षण नेतृत्व क्षमता, प्रशासनिक सूझबूझ एवं अनुशासनप्रिय कार्यशैली से कार्य निष्पादन करते हुए आमजन के हृदय में आपने विशिष्ट पहचान बनाई। शिक्षा विभाग राजस्थान में माध्यमिक शिक्षा निदेशक के रूप में आपका हार्दिक अभिनंदन! सम्पूर्ण शिक्षा विभाग आपको निदेशक के रूप में देखकर सम्मानित व गौरान्वित महसूस कर रहा है।

राज्य का प्रत्येक शिक्षक एवं कार्मिक आपके ओजस्वी नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में कार्य करने के लिए तत्पर है। आपके ऊर्जस्वी नेतृत्व एवं अनुशासित कार्यशैली से यकीनन शिक्षा विभाग राजस्थान श्रेष्ठतम उपलब्धियों को प्राप्त कर देशभर में विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगा। -वरिष्ठ संपादक

- शिविरा का 62वें वर्ष का 10वाँ अंक प्राप्ति पश्चात आद्योपांत पढ़ा। गत अर्द्ध सदी से लगभग नियमित प्रयास रहता है कि शिविरा पढ़ूँ। 42 वर्षों से 'शिक्षण सेवा से जुड़ा हूँ।' दूरस्थ इंडो-पाक सीमांत थार मरु मध्य ग्रामीण क्षेत्र। डाक यदा-कदा अनियमित हो जाती है, फिर भी खुद के या अन्य विद्यालय से अंक प्राप्त कर पढ़ता हूँ। अंकों के सुंदर कलेवर हेतु साधुवाद। विद्वान प्रकाशन। संपादन मंडल। संचार क्रांति के प्रभाव से पाठक रुचि, अन्यत्र हुई है, तो पत्रिका विषय सामग्री, लेख भी सीमित हो चले हैं। अप्रैल 2022 अंक संविधान निर्माता डॉ. अंबेडकर जी के बारे में नवीन जानकारी लिए है, तो राज्य के भामाशाहों के बड़े दिल भी दिखाता है। दानवीरों को कोटिशः धन्यवाद। राज्य बजट की बिन्दुवार जानकारी ज्ञानप्रद हैं तो OPS घोषणा गुरुजनों व कर्मचारियों में आह्लाद खुशी है। अपनों से अपनी बात, दिशाकल्प, मेरा संदेश विभागीय संरक्षकों का आशीर्वचन है। समावेशी शिक्षा को ग्रहणीय स्पष्ट किया है। अगर हम विषय सामग्री में प्रतिमाह विभागीय आदेश पर प्रतिक्रिया, गुरुजन समस्याएँ जिनका निराकरण सरलता से संभव है, दीर्घ शिक्षण अनुभव व अपेक्षाएँ स्तंभ रूप में प्रकाशित करें, तो लाभप्रद रहेगा व ज्यादा पाठक वर्ग जुड़ेगा।

एम.आर. बिश्नोई, जैसलमेर

- सामाजिक समरसता के प्रतीक बाबा अम्बेडकर और विश्व पृथ्वी दिवस का महत्त्व शिविरा पत्रिका के मुख कवर पृष्ठ के माध्यम से प्रदर्शित करने के लिए शिविरा प्रभाग की टीम एवं संपादक महोदय को कोटि-कोटि साधुवाद। बैशाखी महापर्व का भारतीय समाज में महत्त्व और स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ाने का प्रयास बहुत ही सार्थक प्रयास है और स्वास्थ्य जागरूकता अग्रिम अंकों में भी अनवरत जारी रहेगी ऐसी संपादक महोदय से आशा रहेगी। राजस्थान के बजट में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा समस्त कर्मचारियों के लिए पूर्व पेंशन लागू करने का साहसिक निर्णय लिया जाना समस्त कर्मचारियों के सुरक्षित भविष्य के लिए एक सकारात्मक कदम है जिसका राजस्थान के समस्त कर्मचारी स्वागत करते हैं। भगवान महावीर के संदेशों की प्रासंगिकता आज के युग में भी कायम है, जो कई शताब्दियों तक मानव पथ को प्रशस्त करती रहेगी। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय की वार्षिकोत्सव में गरिमामयी उपस्थिति ने बालमनों पर अमिट छाप छोड़ी। शिक्षा विभाग में ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से दानदाताओं के समक्ष जो पारदर्शी एवं सुगम व्यवस्था स्थापित की गई है उससे न केवल एक अच्छा संदेश प्रसारित हुआ है, बल्कि दानदाताओं का दान के समुचित एवं विद्यार्थी हित में उपयोग होने की सुनिश्चितता की इच्छा भी बलवती हुई है।

तनुज शर्मा, बीकानेर

- माह अप्रेल, 2022 की शिविरा पढ़ने का अवसर मिला। शिविरा पत्रिका का मुख्य पृष्ठ बहुत ही आकर्षक एवं वर्तमान समय की माँग के अनुरूप लगा। 11वें पृष्ठ पर डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के सामाजिक एवं राजनीतिक सफर के विषय लिखा गया। मुझे बहुत अच्छा लगा क्यों जीवन जीने के लिए सच्चाई, ईमानदारी, नियमितता एवं दृढ़ता, संघर्ष का होना बहुत जरूरी है। शिविरा के अंतिम पृष्ठ के रंगीन चित्र हर किसी को प्रभावित करते है। साथ में उन चित्रों में बहुत कुछ भाव व संदेश छिपे हैं। रंगीन चित्रों के साथ बाल शिविरा का पृष्ठ भी सराहनीय है।

हजारीलाल रुदावल, भरतपुर

Rajasthan Education Department

लर्निंग लॉस : एक चुनौती

❒ डॉ. प्रमोद कुमार चमोली

यह सर्वविदित है कि कोविड-19 के प्रभाव ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया है। इसके कारण हमें बहुत सी हानियाँ हुई है। हमने अपनो को खोया है। कोई शहर से गाँव लौट गया है तो कोई गाँव से शहर लौट आया है। कोविड के कारण उभरे सामाजिक दूरी के मुद्दे ने समाज में सामूहिकता की भावना को गहरी क्षति पहुँचाई है। आर्थिक रूप से देखे तो लंबी तालाबन्दी से कई व्यवसाय बुरी तरह प्रभावित हुए हैं जिसके कारण रोजगार के अवसर भी कम हुए हैं।

इन सबसे इत्तर हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि कोविड परिस्थितियों ने शिक्षा को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। लंबी तालाबंदी के कारण विद्यालयों के आँगन सूने रहे। हमने बहुत प्रयास किए कि सब कुछ घर बैठे हो सके। ऑनलाइन शिक्षा के प्रयास भी किए। व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से स्माइल कार्यक्रमों के तहत अध्ययन सामग्री घर-घर तक पहुँचाई लेकिन विकट भौगोलिक क्षेत्रों में नेटवर्क की समस्या और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के चलते ये प्रयास सभी तक पहुँचने संभव नहीं थे। हमने रेडियो और टीवी का सहारा भी लिया फिर भी हमें ज्ञात है कि हमारी पहुँच सभी तक नहीं बन पाई। हमने आओ घर में सीखे कार्यक्रम चला कर शिक्षा को घर-घर पहुँचाया। हम सभी ने मिलकर बहुत से प्रयास किए लेकिन दो सालों में विद्यार्थियों के विद्यालय नहीं आ पाने के कारण पढ़ाई की हानि हुई। इस हानि की पूर्ति के लिए विद्यालय खुलने से पहले ही कुछ विशेष वर्कबुक्स के माध्यम से लर्निंग लॉस को कम करने के प्रयास किए।

यह सर्वमान्य है कि कक्षा का विकल्प डिजिटल कक्षा नहीं हो सकती लेकिन कोविड जैसी परिस्थिति में हमारे पास उपाय भी यही बचता है। कोविड-19 ने हमें कक्षा-शिक्षण के विकल्पों में ऑनलाइन कक्षा की ओर बढ़ने का अवसर दिया है लेकिन इसके चलते डिजिटल डिवाइड की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। बहरहाल जो भी हो कोविड-19 के कारण पढ़ाई के नुकसान को लेकर चिंता होना लाज़मी है। इस पढ़ाई के कारण ही लर्निंग लॉस शब्द शिक्षा के क्षेत्र में बहुतायत से प्रयोग में आने लगा। दरअसल पढ़ाई के नुकसान को ही लर्निंग लॉस की संज्ञा दी गई है। सबसे पहले तो हम इस टर्म लर्निंग लॉस को समझने का प्रयास करते हैं।

हालांकि यह टर्म नई नहीं है इसका प्रयोग हम पहले से करते आए हैं। गर्मियों की छुट्टियों के पश्चात जब विद्यालय पुन: खुलते हैं तो हम पाते है कि हमारे विद्यार्थी बहुत कुछ भूल जाते हैं। यदि आप लोगों को याद हो पहले पाठ्यपुस्तकों में पहला अध्याय पिछली कक्षा के रिवीजन का होता था। वह शायद लर्निंग लॉस के कारण ही रखा जाता होगा।

'लर्निंग लॉस' शब्द का तात्पर्य विद्यार्थी में उसके सीखने में कम रह गए या विस्मृत हो गए ज्ञान अथवा कौशल के नुकसान से है। दूसरे शब्दों में कहें तो उक्त के कारण विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति में वांछित प्रगति दिखाई नहीं देने से है। आमतौर पर लर्निंग लॉस विद्यार्थी का शिक्षा से लंबे अंतराल अथवा उसके सीखने की गति में अवरोध के कारण कक्षा से पिछड़ जाने के कारण हो सकता है। लर्निंग लॉस के सामान्यत: निम्नांकित कारण हो सकते हैं।

1. **लंबी गर्मी की छुट्टियाँ (Summer break):-** ग्रीष्मकालीन अवकाश इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में गर्मियों की छुट्टियाँ दो या ढाई महीने तक चलती है, इसलिए इस टर्म का प्रयोग 'समर लॉस' के रूप में किया जाने लगा।
2. **औपचारिक शिक्षा के बाधित होने के कारण (Interrupted formal education):-** कभी-कभी कतिपय विद्यार्थियों की औपचारिक शिक्षा उनके घरेलू और पारिवारिक कारणों के कारण बाधित हो जाती है। वे लंबे समय तक विद्यालय नहीं आ पाते। इसके साथ ही देशकाल की परिस्थितियाँ भी इसका कारण बनती है। वर्तमान में कोविड के कारण आया अंतराल इस तरह के लर्निंग लॉस का स्पष्ट उदाहरण है। इसके अलावा अन्य विभिन्न कारणों से उनकी औपचारिक शिक्षा बाधित हो सकती है। यथा- दंगा, बलवा, युद्ध, महामारी इत्यादि कारणों से यानी कुल मिलाकर यदि विद्यार्थी लंबी अवधि तक विद्यालय नहीं जा पाता तो वह एक कारण लर्निंग लॉस का होता है। इसके लिए एक विशेष टर्म "students with interrupted formal education," एसआईएफई, ऐसे विद्यार्थियों के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है।
3. **ड्रॉप आउट विद्यार्थियों का पुन: लौटना (Returning dropouts) :-** यदि कोई विद्यार्थी साल दो साल ड्रॉप आउट के बाद विद्यालय से पुन: जुड़ता है तो विद्यालय से दूर रहने के कारण उसके पूर्व के सीखे हुए कौशल विस्मृत होने के से भी एक प्रकार का लर्निंग लॉस अनुभव किया जा सकता हैं।

इसके अलावा विद्यार्थियों का समय-समय पर अनुपस्थित रहना, प्रभावी शिक्षण का अभाव तथा विद्यार्थियों में रहे लर्निंग गेप भी लर्निंग लॉस के कारण हो सकते हैं।

नए सत्र में पूर्व की भाँति विद्यालय खुलने पर पड़ने वाले प्रभाव :-

कोविड-19 के कारण विद्यार्थी के लंबे समय तक विद्यालय नहीं आ पाए हैं। अभी कुछ वक्त से वे विद्यालय आने लगे हैं। वे परीक्षाएँ भी दे रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बाद भी आगामी सत्र विद्यालय खुलने पर निम्नांकित प्रभाव दिखाई दे सकते हैं:-

1. विद्यार्थियों की दैनिक उपस्थिति कम होना।
2. विद्यार्थियों को कक्षा में लगातार बैठने में परेशानी होना।
3. विद्यार्थी का कक्षा में ध्यान कम होना।
4. कक्षागत दक्षताओं अथवा लर्निंग आउट कम की प्राप्ति में बाधा आना।
5. विद्यार्थियों में परीक्षा व परखों के प्रति भय व्याप्त होना।
6. कोविड जनित प्रोटोकाल के तहत व्यवहार करने में परेशानी आना।
7. विद्यार्थी और शिक्षकों के बीच आपसी तालमेल को पुन: पुराने स्तर तक लाने में परेशानी होना।
8. अभिभावकों की उदासीनता।
9. विद्यार्थियों के ड्रॉप आउट की संभावना।

Rajasthan Education Department

10. पिछली कक्षाओं की दक्षता कम रहने के कारण सीधे दो कक्षा आगे प्रमोशन के कारण कक्षा के लेवल पर नहीं होने से विद्यार्थियों की भावनात्मक एवं संवेगात्मक समस्या।

इसके अलावा अन्य कई परेशानियाँ विद्यालयों द्वारा अनुभूत की जा सकती है। उक्त समस्त परेशानियों के पीछे के कारणों को समझने की कोशिश करें तो एक कारण सार्वभौमिक रूप से उभर कर आता है वह है कोविड-19 के कारण आया लर्निंग लॉस। इस लर्निंग लॉस की पूर्ति नितान्त आवश्यक है। इस क्षति की पूर्ति नहीं करने की स्थिति में हम सम्पूर्ण शिक्षा को दो साल पीछे ले जाएंगे। समस्या बड़ी तो है लेकिन ऐसी नहीं जिसका समाधान नहीं किया जा सकता है।

लर्निंग लॉस की क्षतिपूर्ति के लिए क्या किया जा सकता है:-

लर्निंग लॉस की क्षतिपूर्ति हेतु विद्यालय और समाज को मिलकर काम करना जरूरी है। विद्यालयों को अपनी नई भूमिका निभानी होगी। उसे समाज से लगातार संवाद स्थापित करते हुए इस बारे में आगाह करना होगा। समाज से जुड़ने के लिए विद्यालय के पास कई साधन मौजूद हैं। वह एसडीएमसी/एसमसी, पीटीएम जैसी संस्थाओं के साथ बराबर संवाद बनाकर समाज और अभिभावकों का यथायोग्य सहयोग आवश्यक है। उक्त लर्निंग लॉस की पूर्ति हेतु शासन स्तर पर किए जा रहे प्रयासों यथा ब्रिज कार्यक्रम को विद्यालयों में योजनाबद्ध तरीके से पूरी ईमानदारी के साथ चलाए जाने की महत्ती आवश्यकता है। इस हेतु प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका जरूरी है। शिक्षा के सभी घटकों यथा- शिक्षक, विद्यार्थी और समाज को अपनी-अपनी भूमिकाएं प्रतिबद्धता के साथ निभाने की आवश्यकता है।

लर्निंग लॉस की पूर्ति हेतु संस्थाप्रधान की भूमिका:-

संस्थाप्रधान किसी भी संस्था का आदर्श होता है। संस्थाप्रधान का व्यवहार, प्रशासकीय कौशल और नेतृत्व क्षमता किसी भी संस्था की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण होती है। ऐसे में लर्निंग लॉस के लिए संस्थाप्रधान मूकदर्शक बना नहीं रह सकता। संस्थाप्रधान को लर्निंग लॉस की पूर्ति के लिए पहले उन्हें अपने आप को तैयार करना है ताकि वे साथी शिक्षकों की समस्याओं को हल कर सकें। कुल मिलाकर संस्थाप्रधान की सजगता इस कार्य के लिए नितान्त आवश्यक है। इस विपरीत परिस्थिति में उन्हें सतर्कता और सजगता से कार्य करते हुए अपने साथी शिक्षकों को उत्कृष्ट नेतृत्व प्रदान करते हुए व्यापक समर्थन प्राप्त करना है। इस हेतु वे निम्नांकित कार्य कर सकते हैं:-

1. नया सत्र आरम्भ होते ही ऐसे विद्यार्थियों को चिह्नित करना जो कोविड के दौरान घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कहीं काम करने लगे हैं अथवा अपने माता-पिता के साथ सहयोग करने लगे थे।
2. ऐसे विद्यार्थियों को ड्रॉप आउट से बचाने के लिए उनके अभिभावकों से सम्पर्क करना और उन्हें पुन: विद्यालय से जोड़ना।
3. कुछ ऐसे विद्यार्थी भी हो सकते हैं जो गत सत्र तो विद्यालय में आए लेकिन लर्निंग गैप की पूर्ति नहीं होने के निर्धारित दक्षताओं/आउटकम में कुछ ज्यादा पिछड़ गए उन्हें चिह्नित करना।
4. उक्त प्रकार के विद्यार्थी ड्रॉप आउट हो सकते हैं अत: ऐसे विद्यार्थियों के साथ संवेदनशीलता से कार्य करना। उन्हें भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक समर्थन देना।
5. सत्र के आरम्भ में ही शिक्षकों के साथ मीटिंग कर लर्निंग लॉस हेतु शासकीय निर्देशों के अनुरूप कार्ययोजना बनाना।
6. सत्र के आरम्भ में ही लर्निंग लॉस का पता लगाने के लिए समस्त शिक्षकों से मौखिक और लिखित बेसलाइन करवाकर विद्यार्थियों का स्तर निर्धारण करवाना।
7. कक्षा शिक्षण की योजनाओं में लर्निंग लॉस की पूर्ति हेतु तथा सामान्य कक्षा शिक्षण में व्यापक सामंजस्य स्थापित करना।
8. एसडीएमसी/एसएमसी तथा पीटीम की बैठकों में लर्निंग लॉस पर चर्चा करना विद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों से अवगत करवाते हुए सहयोग प्राप्त करना।
9. कक्षा शिक्षण का अवलोकन करते लर्निंग लॉस हेतु शिक्षक द्वारा किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा एवं उन्हें समर्थन देना।
10. सुनने और बोलने जैसी दक्षताओं हेतु प्रार्थना सभा में सभी विद्यार्थियों के साथ सामूहिक गतिविधियाँ करवाना।
11. विद्यार्थियों को मिलने वाली छात्रवृत्तियों और प्रोत्साहन योजनाओं का समुचित लाभ दिलवाना।
12. विद्यालय में खेल गतिविधियों का समुचित संचालन। ताकि विद्यार्थी तनाव से मुक्त रह सकें।
13. अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाओं का प्रभावी संचालन। इनके माध्यम से दक्षताओं/लर्निंग आउटकम में आई कमी को दूर करने का प्रयास करना।
14. छोटे बच्चों के लिए रोचक बालकथाओं की पत्रिकाएँ/पुस्तकें उपलब्ध करवाना ताकि वे पढ़ने के कौशल को रुचि के साथ प्राप्त कर सकें।
15. गणित जैसे विषय हेतु सहायक सामग्री शिक्षकों के माध्यम से तैयार करवाना अथवा ऐसी सामग्री उपलब्ध करवाना।
16. शिक्षा में समावेशन को ध्यान में रखते हुए विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए अलग से योजना बनाना।
17. FLN (Foundational Literacy & Numeracy) के तहत की जाने वाली गतिविधियों की समीक्षा करना। उन्हें विद्यालय में बराबर लागू करना।

लर्निंग लॉस की पूर्ति हेतु शिक्षकों की भूमिका:-

नया सत्र आरम्भ होने से पूर्व सभी विद्यार्थियों का गत वर्ष की परीक्षा और मूल्यांकन कार्य पूर्ण हो चुका है। आपको बच्चों के लर्निंग लॉस का अहसास तो हो चुका होगा। लर्निंग लॉस का सीधा संबंध कक्षा शिक्षण से है। इसलिए इस कार्य के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी शिक्षक है। शिक्षक की रुचि के बगैर लर्निंग लॉस को पूरा नहीं किया जा सकता। शिक्षक इन हालातों को ठीक-ठीक से समझते हैं। शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के लिए कुछ अधिक परिश्रम करने की जरूरत रहेगी और सभी शिक्षक विद्यार्थियों को इस घाटे से उबारने के लिए प्रतिबद्धता से कार्य भी करेंगे। यदि हम शिक्षक ठान लेंगे तो इस घाटे की शीघ्र पूर्ति कर विद्यार्थियों को उनके कक्षा स्तर तक ले भी आएंगे। प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों ने एसआईक्यूई के तहत इस कार्य को भली-भाँति

Rajasthan Education Department

समझ भी रखा है। शिक्षक को वर्तमान कक्षा की दक्षताओं/लर्निंग आउटकम तक विद्यार्थियों की पहुँच बनानी है तो आवश्यक यह है कि वह कोविड के कारण जिन दक्षताओं में विद्यार्थी की कमी रह गई उनकी पहचान करें। इस हेतु शिक्षक द्वारा निम्नांकित कार्य किए जा सकते हैं:-

1. बदली हुई परिस्थितियों में शिक्षकों को विद्यार्थियों को प्रेरणा देनी है कि वे सीख सकते हैं। अत: अपनी शब्दावली में से नकारात्मक उक्तियों और शब्दों के प्रयोग को रोकें। बच्चे खुश रहें। मुसीबतों का सामना डट कर करें ऐसी लाइफ स्किल संबंधित गतिविधियाँ नए सत्र के प्रारम्भ में की जानी आवश्यक है।
2. शिक्षक कक्षा में कुछ ही दिनों में यह ज्ञात कर लेते हैं कि अमुक विद्यार्थी किस स्तर का है। इस ज्ञात करने को ओर भी अधिक पुख्ता करने के लिए विद्यार्थियों से लगातार संवाद करना। उनसे समस्याओं पर चर्चा करना।
3. अपने अवलोकन द्वारा की गई पहचान को वैज्ञानिक तरीके से करने के लिए दक्षता/लर्निंग आउटकम वाइज मौखिक और लिखित प्रश्नों को तैयार करना। इनके आधार पर बेसलाइन कर यह ज्ञात करना कि विद्यार्थी ने गत कक्षाओं की किन दक्षताओं/लर्निंग आउटकम को आंशिक/सम्पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया।
4. बेसलाईन के उपरांत ऐसी दक्षताओं/लर्निंग आउटकम जो लगभग सभी विद्यार्थियों ने ही प्राप्त नहीं किए उनके लिए सामूहिक गतिविधियों का संचालन करना।
5. बेसलाईन के आधार पर कक्षा में समूहों का निर्माण किया जाए। उनके शिक्षण हेतु शिक्षण योजना का निर्माण करें। तद्नुसार सम्पूर्ण कक्षा और समूहवार व व्यक्तिगत गतिविधियों का कक्षा शिक्षण के दौरान संचालन करना।
6. प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता है। तो अपनी कक्षा शिक्षण योजना को तद्नुरूप तैयार करना।
7. गतिविधियों को आनन्दायी और रोचक तरीके से संचालित करना।
8. यह माना जाता है कि बच्चा अपने साथी से ज्यादा सीखता है। जिन विद्यार्थियों ने दक्षताएँ प्राप्त कर ली है उन्हें दूसरे विद्यार्थियों के साथ जोड़कर पीयर लर्निंग को प्रोत्साहित करना।
9. कक्षा शिक्षण के दौरान यह अवलोकन करें कि अमुक विद्यार्थी अमुक गतिविधि के प्रति उदासीन है। क्योंकि विद्यार्थी दो ही दशाओं में उदासीन रह सकता है एक उसका स्वास्थ्य ठीक न हो तथा दूसरा जो गतिविधि करवाई जा रही है उसके पहले की गतिविधि के प्रति उसकी समझ नहीं बनी हो। इस हेतु सजगता से अवलोकन करना।
10. प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों को और अधिक सतर्कता से कार्य करने की आवश्यकता है क्योंकि जो विद्यार्थी अभी तक विद्यालय में कुछ ही दिन पूर्व आया है वह सीधा कक्षा तीन में आएगा। ऐसे में उससे कक्षा तीन की दक्षताओं की अपेक्षा करना उसे हीन भावना से ग्रस्त कर सकता है। ऐसे विद्यार्थियों को संवेगात्मक और मनोवैज्ञानिक संबलन प्रदान करना।
11. प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण की दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए उनके स्तर के पाठों को धारा प्रवाह पढ़ पाना उनमें आत्मविश्वास का संचार करेगा। इसलिए भाषाओं के शिक्षण के दौरान इसका विशेष ध्यान रखा जाना जरूरी है। इसके लिए रोचक बालकथाओं की पत्रिकाओं, बालकथा की पुस्तकों से अभ्यास करवाना।
12. प्राथमिक कक्षाओं हेतु कक्षावार गणित की बुनियादी दक्षताओं/लर्निंग आउटकम को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करें। ताकि सभी अपनी कक्षाओं की बुनियादी दक्षताओं को सीख सकें। इस हेतु उपयोगी सहायक सामग्री को प्रयोग में लाना।
13. बड़ी कक्षाओं में अध्यापन के दौरान विषय वस्तु संबंधी पूर्व ज्ञान का निर्धारण करते हुए पहले पूर्व ज्ञान से अवगत करवाना।
14. कोविड परिस्थिति के चलते विद्यार्थी किस परिस्थिति से गुजरा इसका ध्यान करना आवश्यक है। हो सकता है कि कोविड के बाद कक्षा में आने वाला विद्यार्थी आर्थिक मजबूरियों के चलते अपने माता-पिता के साथ किसी काम में सहयोग करता हो। अत: अपने व्यवहार से उन्हें संबल प्रदान करते हुए। सीखने-सिखाने की गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करना।
15. विद्यार्थियों में लिखने के प्रति उदासीनता मिल सकने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है इसके लिए निरन्तर अभ्यास करवाना।
16. विद्यार्थियों के अभिभावकों से लगातार सम्पर्क में रहकर उन्हें विद्यार्थी का समर्थन करने के लिए प्रेरित करना।
17. विद्यार्थियों को सीखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करना। यह ध्यान रखना कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पिछड़ने के कारण उसमें हीनता की भावना पैदा न होने देना।
18. कक्षा के माहौल को जीवन्त बनाए रखने हेतु लगातार विद्यार्थियों से चर्चा करते रहना अथवा गतिविधियों के संचालन के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी को अवसर प्रदान करना।
19. गतिविधियों में स्वयं शामिल होकर विद्यार्थियों की झिझक को दूर करना।
20. ग्रीष्मावकाश के दौरान उन्हें सुनने, बोलने और पढ़ने की दक्षता हेतु कुछ अच्छी कहानियाँ व पठन सामग्री पढ़ने के लिए देना और उनसे इस प्रकार की कहानी बनाने हेतु प्रेरित करना।
21. एफएलएन के तहत की जाने वाली गतिविधियों का संचालन पूर्ण मनोयोग से करना।

लर्निंग लॉस की पूर्ति हेतु अभिभावकों की भूमिका:-

1. विद्यालय से लगातार सम्पर्क में रहना और अपने बच्चों की प्रगति के प्रति जागरूक रहना।
2. बच्चे की कक्षा में जाने के बाद पिछली कक्षाओं की दक्षता के आंशिक/सम्पूर्ण प्राप्त नहीं होने के कारण पढ़ने में अरुचि हो सकती है। उनमें रुचि जागृत करने हेतु प्रोत्साहित करना।
3. बच्चे की शिक्षा में हुई हानि को समझना

Rajasthan Education Department

और उससे आगामी कक्षा की दक्षता प्राप्त करने हेतु जल्दबाजी नहीं करना।

4. लंबे समय तक पूर्ण या आंशिक रूप से विद्यालय नहीं जा पाने के कारण उनकी विद्यालय जाने में अरुचि हो सकती है। अत: उन्हें विद्यालय नियमित विद्यालय जाने के लिए प्रेरित करना।
5. बच्चे दो साल बाद नियमित विद्यालय जाएंगे हो सकता है कि उन्हें लगातार बैठने में समस्या हो। अत: इस हेतु आवश्यक अभ्यास करवाना।
6. घर पर नियमित लिखने का अभ्यास करवाना।
7. प्रत्येक बालक अपने आप में विशिष्ट होता है उसकी तुलना दूसरों से कर उन्हें हतोत्साहित नहीं करें।
8. ग्रीष्मावकाश के दौरान उन्हें सुनने, बोलने और पढ़ने की दक्षता हेतु कहानियां सुनाना, प्रश्न करना व उनकी जिज्ञासाओं का जबाब देना।

कोविड परिस्थितियों के बाद उम्मीद है कि विद्यालय सामान्य रूप से चलने लगेंगे। विद्यालयों के सामान्य रूप से चलने में निश्चित रूप से चुनौतियां हमारे सामने होगी। विद्यालयों को इन चुनौतियों हेतु अपने आप को तैयार करना होगा। अभी भी कोरोना संक्रमण की अनदेखी नहीं की जा सकती। बच्चे जब विद्यालय आएं तो उन्हें पढ़ाई, परीक्षा और पाठ्यचर्या का दबाब नहीं हो। बच्चों के विद्यालय आने पर लर्निंग लॉस की पहचान और इसका निवारण किया जाना जरूरी है।

उन्हें विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण मिले कि वे अपनी सहज गति से सीखें। साथ ही उन्हें ऑनलाइन पद्धति से पढ़ने का अभ्यास भी करवाएं ताकि कभी इस तरह की परिस्थितियां फिर आएं तो लर्निंग लॉस कम से कम हो। अंत में इतना ही कि कोविड परिस्थितियों के कारण शिक्षा में जो हानि हुई है उसके लिए मिशन मोड पर कार्य करने की आवश्यकता है। शासन, विभाग, समाज और विद्यालय के हर घटक को अपनी पूर्ण क्षमता और सजगता से कार्य करने की आवश्यकता है।

राधास्वामी सत्संग के सामने
गली नं.-2, अम्बेडकर कॉलोनी
पुरानी शिवबाड़ी रोड, बीकानेर

रपट

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय चेनपुरा में संबलन

राष्ट्रीय शिक्षा सर्वेक्षण में द्वितीय स्थान प्राप्त राजस्थान राज्य ने महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय की अभिनव फ्लैगशिप योजना संचालित की है। इस योजना के माध्यम से चयनित राजकीय विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक से लेकर माध्यमिक स्तर की गुणात्मक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है। आम नागरिकों में इन विद्यालयों को लेकर भारी उत्साह है एवं विद्यालयों में प्रवेश हेतु लम्बी प्रतीक्षा सूची इसका परिणाम है।

राज्य सरकार द्वारा 2019 में समस्त जिला मुख्यालयों पर 33 महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों का शुभारंभ किया गया था। इन विद्यालयों में गुणात्मक शिक्षण सुनिश्चित करने हेतु विभाग द्वारा श्रेष्ठतम एवं अंग्रेजी भाषा में दक्ष शिक्षकों व संस्था प्रधानों का चयन साक्षात्कार माध्यम से किया गया है। राज्य सरकार की पारदर्शी चयन प्रक्रिया के कारण चयनित शिक्षण स्टाफ ने इन विद्यालयों में गुणात्मक शिक्षण सुनिश्चित किया है।

इसकी एक बानगी माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की दिनांक 01 अप्रैल 2022 की राजकीय यात्रा के दौरान देखी गई। मुख्यमंत्री महोदय द्वारा महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी विद्यालय एवं अमृतलाल गहलोत स्टेडियम चेनपुरा के तरणताल के निरीक्षण के समय आए उसी दौरान महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय चेनपुरा की स्थिति जानी स्टाफ से संवाद करते हुए प्रवेश स्थिति के बारे में जानकारी मांगी तब प्रतीक्षा सूची जो प्रवेश की रिक्त स्थानों से कई गुना रहती है।इसी दौरान महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय चेनपुरा, जोधपुर की कक्षा तीसरी की छात्रा आर्या गौड़ व छात्र हिमांशु कंवरिया की अंग्रेजी भाषा में सहज वार्तालाप सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना। इस वार्तालाप में नन्हे विद्यार्थियों का शुद्ध उच्चारण, आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति कौशल एवं अंग्रेजी भाषा पर नियंत्रण से प्रभावित होकर माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा अपने ट्विटर हैंडल व फेस बुक एकाउंट से साझा किया गया था। स्थानीय समुदाय व अभिभावकों द्वारा इस प्रकार के अधिकाधिक विद्यालय खोलने की मांग रखी गई। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने तत्काल सकारात्मक आश्वासन दिया। अगले दिन ही इसी वार्ड का एक और विद्यालय के अंग्रेजी माध्यम करने का प्रस्ताव मांग लिया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चेनपुरा का रूपांतरण महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, जिला मुख्यालय के रुप मे माह जुलाई 2019 में किया गया था। प्रथम सत्र में कक्षा 01 से 08 का संचालन आरम्भ किया गया था। इन कक्षाओं में प्रति कक्षा निर्धारित सीटों से कई गुना अधिक आवेदन के कारण प्रति कक्षा दो वर्ग आरम्भ किए गए। वर्तमान में कक्षा 01 से 10 तक अंग्रेजी माध्यम से कुल 712 विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे है। इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है कि आमजन की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए 16 फरवरी 2022 से जिला मुख्यालय पर संचालित महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का शुभारंभ किया गया। वर्तमान में चेनपुरा स्कूल में पूर्व प्राथमिक वर्ग में कुल 75 छात्र-छात्रा शिक्षा प्राप्त कर रहे है। विद्यालय स्टाफ से वार्ता में यह पाया गया कि महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की अप्रतिम सफलता के पीछे राज्य सरकार की शिक्षोन्मुख सोच एवं नवाचारी प्रयास, संस्थाप्रधानों व स्टाफ सदस्यों द्वारा निरन्तर प्रयास व एसडीएमसी का सहयोग प्रमुख आधार है। स्थानीय विद्यालय के कक्षा तृतीय के बहुप्रशंसित छात्र वार्तालाप वीडियो के कक्षाध्यापक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षक शेराराम के अनुसार विद्यार्थियों में निहित अन्तरगुणों को गतिविधि आधारित शिक्षण एवं टीएलएम के प्रभावी उपयोग से निखारने का प्रयास निरन्तर जारी रहेगा। कार्यवाहक प्रधानाचार्य नरेंद्र कुमार ने विद्यालय की सफलता का श्रेय स्टाफ सदस्यों को दिया है एवं बताया कि अंग्रेजी भाषा मे श्रेष्ठ शिक्षण ही विद्यालय का उद्देश्य है।

अमृतलाल, जि.शि.अ. (मुख्यालय)
माध्यमिक शिक्षा, जोधपुर

Rajasthan Education Department

बुद्ध पूर्णिमा

सिद्धार्थ से सिद्धि तक - एक अनुपम यात्रा

❒ देवेन्द्र पण्ड्या

मानव जीवन में यात्राओं का सदैव महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यात्राएँ कई लक्ष्यों से जुड़ी हुई होती हैं, परन्तु ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से की गई जनकल्याणकारी यात्राएँ दीर्घजीवी एवं सदैव वन्दनीय बन जाती है। ऐसी ही एक यात्रा संसार को दु:ख से मुक्ति दिलाने की उत्तम महत्त्वाकांक्षा से अनुप्रेरित होकर ज्ञान प्राप्ति के लिए आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व अर्थात ईसा से 515 वर्ष पूर्व वैशाख मास की पूर्णिमा को अर्धरात्रि में चन्द्रमा की स्निग्ध व निर्मल किरणों से युक्त शान्त वातावरण में प्रारम्भ हुई। यही यात्रा 'सिद्धार्थ से सिद्धि तक' की अमर यात्रा बन गई। नि:सन्देह यह यात्रा आध्यात्मिक अनुभव एवं आत्मविश्वास की एक अनुपम यात्रा थी। इस यात्रा के महान यात्री थे कपिलवस्तु गणतंत्र के शाक्यवंश के राजा शुद्धोधन एवं रानी महामाया के पुत्र सिद्धार्थ गौतम। माता पिता की सन्तान प्राप्ति की मनोरथ सिद्ध हो जाने से इन्हें सिद्धार्थ नाम दिया गया तथा यही नाम बाद में ज्ञान की सिद्धि हो जाने से चरितार्थ भी हो गया। मानव इतिहास में ऐसे विरले ही पुरुष होंगे जिनका जन्म व मृत्यु एक ही दिन हुआ हो तथा उसमें भी महात्मा बुद्ध का जीवन तो एक अद्भुत संयोग से भरा हुआ अद्वितीय ही कहा जा सकता है। बुद्ध का जन्म पूर्णिमा को हुआ, पूर्णिमा के दिन ही उन्होंने संसार को त्यागकर ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रयाण किया था, पूर्णिमा के दिन ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था तथा पूर्णिमा के दिन ही इनका निर्वाण हुआ। इसीलिए वैशाख पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा बन गई। यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बुद्ध पूर्णिमा एक ऐसी कहानी है जिसको पढ़ने से पूरी बौद्ध संस्कृति, पूरा बौद्ध धर्म व सम्पूर्ण बौद्ध इतिहास का ज्ञान हो जाता है। एक अर्थ में यह कहानी बुद्ध के जीवन की ही कहानी है, जिसमें उनके चरित्र-चित्रण के साथ साथ उनका जीवन दर्शन भी छिपा हुआ है। यह एक ऐसी कहानी है जिसमें बुद्ध के मन में चल रहे भावों के उतार-चढ़ाव तथा उनके विचारों का विश्लेषण झलक

रहा है। यह कहानी जीवन के रहस्यों को खोज निकालने में बाधक बन रही समस्याओं के उद्घाटन तथा उसके समाधान को भी प्रतिबिम्बित कर रही है। वास्तव में इस कहानी को पढ़नें में आनंद का अनुभव होता है क्योंकि यह यथार्थ के साथ साथ कौतुहल से भरी हुई है।

यह भी ध्यातव्य है कि महात्मा बुद्ध के जीवन को परिलक्षित करती बुद्ध पूर्णिमा की कहानी मानवजाति को कुछ जीवनोपयोगी संदेश भी दे रही है जिनको मनुष्य अपने जीवन में व्यवहृत करके व्यष्टि एवं समष्टि दोनों की सार्थकता सिद्ध कर सकता है। उन संदेशों को हम उनके जीवन के अनेकों प्रसंगों में से कुछ प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से निम्न प्रकार बयां कर सकते हैं-

(1) जीवदया का संदेश:- प्रसंग उस समय का है जब राजा बिम्बिसार के आदेश पर कुछ चरावाह तपते हुए दोपहर में 100 भेड़ें व उतनी ही बकरियाँ राजा की मनोकामना सिद्धि के लिए यज्ञ में बलिदान के उद्देश्य से ले जा रहे थे। संयोगवश पशुओं के उस झुण्ड में चोटग्रस्त व लहु-लुहान एक बकरी का बच्चा लंगड़ाता हुआ चल रहा था। बुद्ध ने दयावश उसे कंधे पर उठा लिया तथा बलिदान के लिए निर्धारित स्थल पर झुण्ड के साथ पहुँचे। जैसे ही बलिदान के लिए हथियार उठा तभी बुद्ध ने शान्त स्वर में बकरे को मारने से रोका एवं बकरे के बंधन खोल दिए। विरोध पर बुद्ध ने राजा को जो कहा वह यहाँ पर चिन्तन हेतु प्रेरित करता है। बुद्ध बोले, ''राजन जीवन लेना सरल है, परन्तु जीवन देना असम्भव है। प्रत्येक प्राणी को अपने प्राण प्यारे होते हैं, साथ ही हरेक को जीने का अधिकार है।'' यह सुनकर तेजस्वी व ओजस्वी व्यक्तित्व के आगे राजा नतमस्तक हो गया तथा उसी दिन से पशुबलि की प्रथा हमेशा के लिए समाप्त कर दी गई। सारांश यही है कि कोई भी व्यक्ति बलिदान के माध्यम से अपने किए हुए कर्मों के उत्तरदायित्व से छूट नहीं सकता। प्राणियों में परस्पर मैत्री भाव व स्नेह सम्बन्ध से ही पृथ्वी रहने योग्य बन सकती है।

(2) क्रोध व रागद्वेष के त्याग का संदेश:- एक बार जब गयासीस पर्वत पर भयानक आग लगी थी तथा संयोगवश बुद्ध भी अपने विशाल भिक्षुसंघ के सहित वहाँ से गुजर रहे थे। बुद्ध के संकेत पर दावाग्नि को बुझा दिया गया परन्तु इस अग्निशमन के बाद बुद्ध द्वारा अपने शिष्यों को अप्रत्यक्ष रूप में एक अमूल्य संदेश दिया गया वह सार्वकालिक बन गया। बुद्ध ने कहा कि इसी दावाग्नि की तरह इस संसार में बहुत कुछ रागाग्नि, क्रोधाग्नि, लोभ व द्वेषाग्नि के कारण जल रहा है। इन्हें शान्त करने हेतु हमें कुछ करना होगा।

(3) रक्त व आँसुओं की कोई जाति नहीं होती:- ज्ञान प्राप्ति के लिए किए गए तपश्चर्या के प्रारम्भिक चरण में जब बुद्ध का शरीर कृषकाय हो गया तथा उनका चेहरा भी कुम्हला गया था तब पास से गुजर रहे गडरिए ने दयावश उन पर पत्तियों से छाया की व्यवस्था की तथा भूख से त्रस्त व्यक्ति के मुख पर बकरी के स्तनों से ही सीधे दूध की धारा से छिड़काव किया। भगवद्कृपा से बुद्ध को होश आया तथा उन्होनें अपनी भूख व प्यास मिटाने सामने खड़े हुए दूध का लोटा लिए हुए गडरिए को दूध के लिए आग्रह किया। जब गडरिए ने स्वयं को अछूत जाति का होने के कारण संकोच व्यक्त किया तब बुद्ध द्वारा उसे कहे गए वाक्य मानव

मात्र के लिए पूँजी बन गए। बुद्ध के कथन थे – ''मानव मात्र भ्रातृत्व के बन्धन से बन्धा हुआ है। रक्त की कोई जाति नहीं होती, न ही जन्म के समय मनुष्य के ललाट पर तिलक होता है। जो शुभ कार्य करता है वह द्विज है और जो नीच कर्म करता है वह शूद्र। तुम्हारा भला हो।'' बुद्ध द्वारा दूध पी लेने के पश्चात गडरिया गद्‌गद् हो गया। संक्षेप में इस प्रकार के कई प्रेरक प्रसंग यथा वीणावादिनी का संदेश, पंचवर्गीय भिक्षुओं को दीक्षा, चिंचा की चाल, किसा गोतमी को सांत्वना, बिंबिसार का वेणुवन दान एवं अंगुलीमाल की कथा आदि बुद्ध की जीवन कहानी के अमूल्य अंश रहे हैं, जिन्हें जीवन में व्यवहृत करने की आवश्यकता है।

यद्यपि भगवान बुद्ध को पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि अवस्था में ज्ञान प्राप्ति के लिए जीवन की गम्भीरतम समस्याओं पर विचार करते समय भी कई प्रलोभन, शंकाएँ, भय, राग, तृष्णा, अभिमान आदि ने उन्हें प्रभावित करना चाहा तथापि गौतम विचलित नहीं हुए। अन्त में धीरे-धीरे जीवन के गहनतम रहस्य जिनके बारे में वह जानना चाहते थे सभी का रहस्योद्‌घाटन हो गया। सिद्धार्थ को वो ज्ञान मिल गया जिसे वो जानना चाहते थे। ज्ञानप्राप्ति के अनन्तर वे बुद्ध कहलाए तथा यही उनकी पूर्ण शान्ति की अवस्था थी।

वस्तुत: मुख्य बात ज्ञान प्राप्त कर लेने तक ही सीमित नहीं रहती है। ज्ञान प्राप्ति के अनन्तर अपने अनुभवों को आगे मानव कल्याण के लिए अपने उपदेशों के माध्यम से शिष्यों को समूची मानवजाति तक पहुँचाने के लिए तैयार करना ही प्रधान बात है। ज्ञान द्वारा जब अन्तरमन पवित्र हो जाता है तथा व्यक्तित्व मुखरित हो जाता है तब उस तेज से अपने आप ही आस पास का वातावरण एवं सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों के साथ अनुकूलन हो जाता है। तब बुद्ध के पूर्व के पाँच शिष्यों के अलावा भी अनेक शिष्य बनते गए। जीवन के अंतिम समय में बुद्ध द्वारा अपने सबसे प्रिय शिष्य आनन्द को जो शिक्षा दी गई उसमें ही बुद्ध के जीवन की कहानी का मर्म छिपा हुआ है। बुद्ध ने आनन्द को बुद्धि व विवेक से जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए कहा कि शारीरिक सुख, कामवासना तथा विलास ये अनिष्टकारी है तथा शरीर को अनावश्यक कष्ट देना भी उचित नहीं है। सत्य जिसे उन्होंने जान लिया था उससे शिष्यों को परिचित कराते हुए उन्होंने कहा कि – जीवन में दु:ख है तथा इसका कारण भी है वह है तृष्णा। तृष्णा पर विजय प्राप्त करने के लिए आठ प्रकार की युक्तियाँ है, इन्हीं युक्तियों को ही बुद्ध का अष्टांग मार्ग कहा जाता है।

इन युक्तियों को सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि मनुष्य को सदैव सत्य व असत्य एवं उचित-अनुचित में विवेक बुद्धि से व्यवहार करने की आवश्यकता है। हमेशा सन्मार्ग पर चलते हुए असत्य भाषण एवं प्रयोग न करके किसी को ठेस नहीं पहुँचाना भी हमारा कर्त्तव्य है। जीव हिंसा, चोरी व व्यभिचार से दूर रहकर जीविकोपार्जन हेतु अनैतिक आचरण नहीं करना। हर स्थिति में मानसिक सन्तुलन बनाए रखने हेतु स्वानुशासन को आधार बनाना। इन्हीं में मानव जाति का कल्याण है।

अस्तु आज बुद्ध संसार में भौतिक रूप में भले ही नहीं हैं परन्तु जनकल्याण के उनके उपदेश लोगों के दिलों में जीवित हैं। नि:सन्देह आदमी कितने समय तक जीवित रहा इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है उसके द्वारा किए गए सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय के कार्य। ऐसे हितकारी उपदेशक विश्व गुरु को बारम्बार नमस्कार है जिन्होनें अज्ञान रूपी अन्धता के दोष से मूक्ति देने के लिए ज्ञान के अंजन की शलाका से हमारे नेत्रों को देखने योग्य बनाया।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नम:।।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
सिविल लाइन्स, गढ़ी, बाँसवाड़ा (राज.)
मो: 9413015905

Rajasthan Education Department

भगवान बुद्ध

❐ केदार शर्मा 'निरीह'

दु:खों का घर है जग सारा, जीव यहाँ फँस जाता है।
तृष्णा ही कारण है उसका, छूट न उससे पाता है।।
निर्वाण प्राप्त कर गौतम ने, ज्ञान विश्व में फैलाया।
वह शांत निरीह मुद्रित मुद्रा, झलकी भीतर की छाया।।
राज पाट छोड़ा तुमने, लात मार सुख सुविधा को।
जिसके पीछे जग भाग रहा, गले लगाकर दुविधा को।।
मार्ग अमरता का दिखलाया, तिल-तिल जलते जीवन को।
मिली शांति इस तप्त विश्व को, अमृत मिला प्यासे मन को।।

हुए प्रकाशित अज्ञानी मन तब आलोक घनेरा था।
अपना दीपक खुद बन जाओ, यह बुद्धत्व बिखेरा था।।
बिना बोध के जीवन जैसे, बदतर ही बन जाता है।
युगों युगों का मैल इकट्ठा, शीशे पर जम जाता है।।
बुद्ध शुद्ध करता मन को, उज्ज्वल जीवन करता है।
मध्यम मार्ग सम दृष्टि से कष्ट सभी के हरता है।।

अन्नपूर्णा डूंगरी, बमोर रोड, टोंक, (राज.)-304001
मो: 9587615121

जयन्ती विशेष

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

❒ डॉ. महेश चन्द्र शर्मा

मानव सभ्यता के विकास की कहानी में शिक्षा मानव समाज का मेरुदण्ड है। यह हर युग में मानव जीवन को विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना और कौशल सम्पन्न बनाना ही नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य शिक्षार्थी को अच्छे और बुरे में अन्तर करने योग्य बनाना तथा उसमें अनुशासन और निष्ठा के साथ-चरित्र निर्माण पथ प्रदर्शित करना भी हैं।

शिक्षा मलय पर्वत से बहकर आने वाले उस शीतल वायु के झोंके की तरह है जो वर्तमान युग में भी मानव जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पत्ति और संतोष प्राप्ति का सर्वोच्च साधन हैं।

शिक्षा जगत में ऐसे अनेक कालजयी विचारक और दार्शनिक हुए हैं जिनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई हैं। मानव विकास की यह कहानी इन्हीं विचारकों और दार्शनिकों ने लिखी है जिसके माध्यम से ही व्यक्ति प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता हुआ आदि मानव के उस कन्दराओं के जंगली जीवन से इस विकसित भौतिकवादी युग तक की राह तय कर पाया है।

आज के युग में भी जिन व्यक्तियों के विचारों की प्रासंगिकता बनी हुई है, ऐसे व्यक्ति युग पुरुष कहलाते हैं। इन्हीं युग पुरुषों में गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर का नाम भी बहुत आदर के साथ लिया जाता है।

गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर एक ऐसे महान कवि, चिन्तक, विचारक, दार्शनिक और शिक्षा शास्त्री थे, जिन्होंने अपनी कविताओं, कहानियों, कथनों, लेखों और भाषणों के माध्यम से सम्पूर्ण जगत में मानववाद और प्रकृतिवाद के विचारों का प्रचार प्रसार किया। उनके विचार केवल वर्तमान युग में ही प्रासंगिक नहीं है बल्कि आने वाले कल के लिए भी उतने ही उपयोगी रहेंगे।

इस महान दार्शनिक का जन्म सन् 6 मई 1861 को बंगाल के एक धनी जागीरदार परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम महर्षि देवेन्द्र

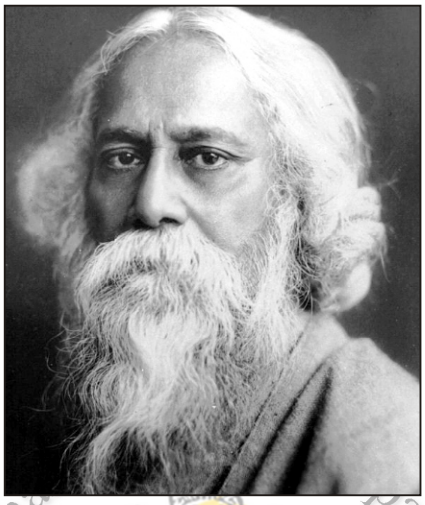

नाथ टैगोर तथा माता का नाम श्रीमती शारदा देवी था। टैगोर के शिक्षा दर्शन में भारतीय आध्यात्मिकता, प्रकृतिवाद और मानववाद का ऐसा उत्कृष्ट सम्मिश्रण है जो वर्तमान परिस्थितियों में भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना गुरुदेव के जीवन काल में था।

गुरुदेव ने देश काल की सीमाओं से परे उदारता, विश्वप्रेम और मानवता का संदेश प्रसारित किया। वे भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान दोनों को महत्त्वपूर्ण मानते थे, सदैव उसे प्राप्त करने को तत्पर रहते थे। उन्होंने भौतिक ज्ञान को इन्द्रियों द्वारा और आध्यात्मिक ज्ञान को योग तथा चिन्तन द्वारा प्राप्त करने पर जोर दिया था।

यही आधुनिक युग की माँग हैं। उन्होंने एक जगह लिखा है कि ''If you weep for the sun, you also miss the Stars. I always try to see and not to miss what there is ?''

जब व्यक्ति भौतिक जगत की चकाचौंध के पीछे भागता हुआ पुन: आध्यात्म की ओर लौटने की प्रबल इच्छा मन में लेकर इधर-उधर भटकता है तो ऐसी परिस्थितियों में गुरुदेव के शैक्षिक विचार उसे अपनी मंजिल तक पहुँचने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

टैगोर ने अपनी पुस्तक Personality में शिक्षा शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।'' यहाँ सम्पूर्ण सृष्टि से उनका अभिप्राय: संसार की समस्त चर-अचर, जड़-चेतन एवं सजीव-निर्जीव वस्तुओं से है। इन वस्तुओं से हमारे जीवन का सामंजस्य तब ही हो सकता है, जब हमारी सभी शक्तियाँ विकसित होती है और पूर्णता के उच्चतम बिन्दु तक पहुंचाती हैं। इसे ही टैगोर ने 'मनुष्यत्व' कहा।

टैगोर ने कहा है कि शिक्षा न केवल आवागमन से वरन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और मानसिक दासता से भी मुक्ति प्रदान करती है। उन्होंने लिखा है कि सच्ची शिक्षा संग्रह किए गए लाभप्रद ज्ञान के प्रत्येक अंग के प्रयोग करने से उस अंग के वास्तविक स्वरूप को जानने और जीवन के लिए सच्चे आश्रय का निर्माण करने में हैं।

टैगोर के शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में डॉ. एच. बी. मुखर्जी की यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उस समय थी जो उन्होंने कही है- 'टैगोर आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरुत्थान के सबसे महान पैगम्बर थे। उन्होंने देश के सामने शिक्षा के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्ष किया। उन्होंने अपनी शिक्षण संस्थाओं में अनेक शैक्षिक प्रयोग किए, जिन्होंने उनको आदर्श का सजीव प्रतीक बना दिया।

महात्मा गाँधी ने उनके शिक्षा दर्शन के लिए लिखा है कि ''टैगोर ने शान्ति निकेतन के रूप में अपनी विरासत पूरे राष्ट्र को वस्तुत: पूरे विश्व को दी हैं।''

इनके शिक्षा दर्शन के सम्बन्ध में एस.सी. सरकार के ये विचार अत्यन्त प्रासंगिक है कि ''टैगोर ने शिक्षा के उन सभी सिद्धांतों की खोज स्वयं ही की, जिनका प्रतिपादन उन्हें आगे चलकर अपने लिए ही करना था, जिन्हें शान्ति निकेतन में व्यावहारिक रूप देना था।''

टैगोर के शिक्षा दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों

को जानना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि उनके दर्शन की प्रासंगिकता से ही शांति निकेतन के रूप में शिक्षा की अनमोल धरोहर हमें मिली हुई है। उनके शिक्षा दर्शन के प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं–

1. प्रकृति की गोद में शिक्षा –टैगोर के अनुसार बालक की शिक्षा शहर से दूर प्राकृतिक वातावरण में होनी चाहिए। प्रकृति के साथ सम्पर्क स्थापित करने से बालकों को आनन्द की अनुभूति होती हैं। यह तथ्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जिसके कारण शहरी वातावरण से दूर अनेक आवासीय विद्यालयों की स्थापना हो रही हैं। अभिभावक भी अपने बच्चों को इन विद्यालयों में भेजना पसंद करते हैं।

2. शिक्षा में स्वतंत्रता– टैगोर ने लिखा है कि, ''जहाँ स्वतंत्रता नहीं वहाँ विकास नहीं और जहाँ विकास नहीं वहाँ जीवन नहीं।'' अत: शिक्षा प्राप्त करते समय बालक को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, उस पर कम से कम प्रतिबन्ध लगाने चाहिए। स्वतंत्रता और प्रसन्नता के द्वारा अनुभव की पूर्णता टैगोर की आदर्श शिक्षा का हृदय और आत्मा हैं। यही विचार आज की नई शिक्षा नीति के लिए भी लागू है, इसी कारण आज बालकेन्द्रित शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है।

3. मनुष्यत्व की पूर्णता की शिक्षा– टैगोर का मानना था कि ''वास्तव में मानव जातियों में स्वाभाविक अंतर है, जिन्हें सुरक्षित रखना है और सम्मानित करना हैं। शिक्षा का कार्य इस अन्तर के होते हुए भी एकता की अनुभूति कराना है, विषमताओं के होते हुए भी असंयम के बीच सत्य को खोजना है।'' वर्तमान परिस्थितियों में भी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानवता का विकास करना ही हैं।

4. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा– टैगोर के अनुसार ''कोई भी राष्ट्र सर्वोत्तम शिक्षा केवल अपनी मातृभाषा में ही प्रदान कर सकता है। विदेशी भाषा में चिरन्तन मूल्यों की प्राप्ति नहीं होती है, भाव प्रकाशन में बाधा पड़ती है और मौलिकता को प्रकट करने में कठिनाई होती है।''

उन्होंने अंग्रेजी भाषा का विरोध नहीं किया अपितु उसे मातृ भाषा के पूरक के रूप में पढ़ाने के लिए कहा था। आज यही बात हमारे देश के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के सभी राष्ट्रों के लिए प्रासंगिक है।

5. बालक का सर्वांगीण और सामंजस्य पूर्ण विकास– टैगोर ने कहा है कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की समस्त जन्मजात शक्तियों का विकास करके ही उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण और सामंजस्य पूर्ण विकास किया जाना चाहिए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी यह उतनी ही प्रासंगिक है।

6. भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय शिक्षा– टैगोर ने शिक्षा के द्वारा भारतीय समाज की पृष्ठभूमि और भारतीय संस्कृति का स्पष्ट ज्ञान कराने की पूरी तरह वकालत की है। आज जब पश्चिमी राष्ट्र भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर और विरासत के कायल हैं तो हम इसे शिक्षा के क्षेत्र से पृथक करने का सोच भी नहीं सकते। राष्ट्रीय शिक्षा के लिए उन्होंने कहा है कि भारत के अतीत और भविष्य का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

तेरा आह्वान सुने कोई ना आए,
तो तू चल अकेला!
चल अकेला, चल अकेला, चल तू अकेला!
तेरा आह्वान सुन कोई ना आए,
तो चल तू अकेला,
जब सबके मुँह पे पाश...
ओरे ओरे ओ अभागी!
सबक मुँह पे पाश,
हर कोई मुँह मोड़ के बैठे,
हर कोई डर जाय!
तब भी तू दिल खोल के,
अरे! जोश में आकर,
मनका गाना गूंज तू अकेला!
जब हर कोई वापस जाय...
ओरे ओरे ओ अभागी!
हर कोई वापस जाय...
कानन-कूचकी बेला पर सब
कोने में छिप जाय....

–रविन्द्रनाथ टैगोर

7. सामुदायिक जीवन और सामाजिक आदर्शों की शिक्षा–टैगोर के अनुसार ''शिक्षा को गतिशील और सजीव तब ही बनाया जा सकता है जब उसका व्यापक आधार हो तथा समुदाय का जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध हो।'' उन्होने कहा है कि ''शिक्षा के द्वारा बालकों को सामाजिक आदर्श, परम्पराओं, रीति रिवाजें और समस्याओं से अवगत कराना आवश्यक है।'' अत: पाठ्यक्रम में इनको सम्मिलित करना आवश्यक है। बालक को सामाजिक सेवा के अवसर मिलने चाहिए जिससे उसमें स्व अनुशासन और उत्तरदायित्व के भाव विकसित हो सके। यही आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

8. प्रत्यक्ष स्रोतों से ज्ञान और रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास–टैगोर का मानना था कि पुस्तकों की अपेक्षा जहाँ तक सम्भव हो बालक को प्रत्यक्ष स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। उन्हें शिक्षा के द्वारा अपनी रचनात्मक प्रवृत्तियों को विकसित करने के अवसर मिलना आवश्यक है। ये बालक के सर्वांगीण विकास के आधार स्तम्भ है।

9. रटने की आदत का अन्त– टैगोर ने लिखा है कि ''बालकों को रटने के लिए बाध्य नहीं किया जाए। यथासंभव शिक्षण विधि का आधार, जीवन, प्रकृति और समाज की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए।

नवीन शिक्षा नीति में सम्मिलित नवीन मूल्यांकन प्रक्रिया टैगोर के इन सिद्धांतों की पूरी तरह पुष्टि करती है।

10. अन्तर्राष्ट्रीयता की शिक्षा – टैगोर में शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों में मानवता का कल्याण करने और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने पर जोर दिया था।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि टैगोर के विचार हर पीढ़ी के लिए उतने ही महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं जितने उस काल खण्ड में रहे थे।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेखाला,
बावडी, जोधपुर (राज.)
मो: 9414918748

21 जून, 2022 विशेष

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

❒ विनोद जोशी योगसाधक

योग क्या है : योग मनुष्य के आध्यात्मिक एवं विज्ञान आधारित ज्ञान है जिसके माध्यम से तन, मन एवं आत्मा के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। योग स्वस्थ जीवन जीने की कला एवं विज्ञान है।

योग का इतिहास एवं विकास क्रम : योग भारत की हजारों वर्ष पुरानी विद्या है। श्रुति परम्परा के अनुसार भगवान शंकर योग के आदि गुरु हैं जिन्होंने हिमालय के क्रांति सरोवर झील के किनारे सप्त ऋषियों को योग का ज्ञान दिया और इन सप्त ऋषियों ने विश्व के समस्त भूभाग पर योग का प्रचार किया था। योग के प्राचीन होने की वजह से भारत के विभिन्न देवी देवताओं की योग मुद्रा में मूर्तियाँ एवं तस्वीरें मिलती है। योग पूर्व वैदिक काल में भी किया जाता था।

वर्तमान में प्रचलित योग महर्षि पतंजलि कृत योग कहलाता है। महर्षि पतंजलि ने लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व अपने अनुभव प्रचलित योग के ज्ञान को योग दर्शन के रूप में लिपिबद्ध किया। यह संस्कृत भाषा में रचित है जिसमें 195 छोटे-छोटे सूत्र है। महर्षि पतंजलि के पश्चात आसन, प्राणायाम एवं साहित्य के विकास में भारत के अनेक ऋषियों जैसे गुरु गोरखनाथ जी, महर्षि घेरंड, सुश्रुत आदि ने विकसित करने में योगदान दिया। ऐसा कहा जाता है कि भारत में प्रत्येक घर में योग किया जाता था। मध्य काल में विदेशी आक्रांताओं ने हमारी संस्कृति, ज्ञान व ग्रन्थों को नष्ट किया जिसके कारण योग परम्परा भी विलुप्त होने लगी और यह भ्रान्ति फैली की योग केवल साधू-संन्यासी व ब्रह्मचारियों के करने की विद्या है।

आधुनिक काल में योग क्रान्ति का काल कहा जाए तो अतिशियोक्ति नहीं होगी। महर्षि अयंगर, स्वामी रामदेव जी, श्रीश्री रविशंकर जी आदि ने भारत की ऋषि परंपरा का भारत ही नहीं विश्व के अनेक देशों में योग शिविरों के माध्यम से प्रचार प्रसार किया। आज योग स्मरण शक्ति बढ़ाने व आरोग्य की वैकल्पिक पद्धति के रूप में स्थापित हो चुका है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के वैज्ञानिक भी योग को चिकित्सा पद्धति के साथ प्रयोग करते हैं। धीरे-धीरे योग का व्यापक स्वरूप विश्व के सामने आया है। योग चिकित्सा पद्धति, साधना पद्धति, जीवन पद्धति एवं सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि व शान्ति का आधार बन रहा है। योग विश्व में स्वस्थ, हैपीनेस एवं शान्ति का वैज्ञानिक निर्दोष मार्ग के रूप में स्थापित हो चुका है।

अष्टांग योग : योग को प्रथमतः लिपिबद्ध महर्षि पतंजलि ने किया है अतः योग पतंजलि कृत योग के रूप में स्थापित है। पतंजलि रचित योग दर्शन में 195 संस्कृत के सूत्रों में योग की परिभाषा, योग के नियम, जीवन जीने की पद्धति, सामाजिक व्यवहार आदि का उल्लेख है। योग दर्शन में योग के आठ अंग बताए गए हैं; इसलिए योग को अष्टांग योग कहा जाता है। योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि है। आठ अंगों में यम व नियमों को आगे पाँच-पाँच भागों में विभाजित किया है जो निम्न है-

यम: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह

नियम : शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान

योग दर्शन की अधिक चर्चा न करते हुए सीधे विश्व योग दिवस एवं बालक-बालिकाओं को अपने जीवन में आत्मसात करने वाले योग पर आता हूँ।

विश्व योग दिवस : 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69 वें सत्र में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव किया। भारत के प्रस्ताव पर 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा 193 सदस्यों ने रिकार्ड 177 सह-समर्थक देशों के साथ सर्वसम्मति से 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का संकल्प अनुमोदित किया। पूरे विश्व में प्रथम योग दिवस 21 जून, 2015 को मनाया गया। यह आम भारतवासी के लिए गौरव का दिन था कि पूरे विश्व ने भारत की ऋषि परम्परा को स्वीकार किया। आज संपूर्ण विश्व में सभी जाति, मत, पंथ, संप्रदाय के लोग योग के महत्त्व को स्वीकार कर अपने जीवन में आत्मसात कर चुके हैं।

योग के सामान्य नियम :

1. योग प्रातः एवं शाम दोनों समय किया जा सकता है। यदि प्रातः करें तो शौच आदि से निवृत्त होकर करें एवं शाम को करें तो दोपहर के भोजन के पाँच घंटे बाद करें। योग का प्रातः सूर्योदय से आधे घंटे पहले व आधे घंटे बाद का समय उत्तम है।
2. योग दक्ष प्रशिक्षक के सान्निध्य में प्रारम्भ करना चाहिए।
3. योग करते समय ढीले वस्त्र पहनना सुविधाजनक रहता है।
4. योग विद्युत के कुचालक आसन दरी/कम्बल/मैंटिंग आदि पर बैठ करना चाहिए।
5. योग पेड़ के नीचे/साफ जल स्रोत के पास खुले स्थान पर बैठ कर करना चाहिए।
6. शीत काल में कमरे/हाल आदि में दरवाजा/खिड़की आदि खुली रखकर जहाँ वायु प्रवाह हो।
7. अस्वस्थता की स्थिति में उक्त अवधि में योग नहीं करना चाहिए।
8. योगाभ्यास के आधे घंटे तक कुछ भी खाना-पीना नहीं करना चाहिए।

हमारे विद्यालयों में योगाभ्यास : राज्य सरकार द्वारा प्रातः प्रार्थना के साथ योगाभ्यास कराने का आदेश जारी किया हुआ है। विद्यालयों में विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति बढ़ाने, लम्बाई बढ़ाने, जमीन में असानी से

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

बैठने एवं ध्यान एकाग्रचित कराने में उपयोगी प्राणायाम एवं आसन कराए जाने चाहिए। विद्यालयों में प्रतिदिन प्रार्थना सभा एवं स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा कालांश में योग करवाया जा सकता है। योग करने से परीक्षा परिणाम/अनुशासन में उल्लेखनीय लाभ मिलेंगे ऐसा मेरा व्यक्तिगत योगाभ्यास व प्रशिक्षण का बीस वर्ष का अनुभव रहा है। बालक-बालिकाओं को राज्य स्तर पर आधे घंटे का योग प्रोटोकाल बनाकर विद्यालय में योग को अनिवार्य करने का सुझाव है। मेरे अनुभव के आधार पर अष्टांग योग एवं योग के नियमों की सैद्धान्तिक जानकारी देने के उपरान्त निम्न प्राणायाम एवं आसन प्रत्येक विद्यार्थी आसानी से कर सकेंगे एवं उनके जीवन में लाभकारी भी होगाः-

1. हाथ-पैर, गर्दन, आँख, कान, कंधे के सूक्ष्म व्यायाम

2. सुखासन/पदमासन/बज्रासन में बैठ कर भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भ्रमरी, प्रणव ध्वनी एवं ध्यान आदि प्राणायाम का प्रशिक्षण एवं अभ्यास कराए जाने चाहिए। वर्तमान में बच्चों में जमीन पर बैठने का अभ्यास नहीं है तो जैसे भी बैठ सके बैठाकर योग प्रारम्भ कराना चाहिए धीरे-धीरे अभ्यास से ठीक हो जाएगा।

3. आसन में मरकटासन, पवनमुक्तासन, सर्वांगासन, हलासन, चक्रासन, भुजंगासन, नौकासन, वृक्षासन, ताड़ासन, कटिचक्रासन, हस्तपादासन, उष्टासन, अर्द्धचन्द्रासन, सूर्यनमस्कार, त्रिकोणासन आदि का अभ्यास कराया जा सकता है।

आओ हम सब मिलकर हमारी ऋषि परम्परा को पूरे विश्व ने अनुसरण किया उस पर गर्व करें एवं हम स्वयं अपने जीवन में योग को आत्मसात् करें एवं अन्यों को भी योग के लिए प्रेरित कर स्वयं शारीरिक/मानसिक/ आत्मिक रूप से स्वस्थ बनें समाज, देश एवं विश्व को स्वस्थ बनाने में सहयोगी बनें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत।।

सेवानिवृत सहायक लेखाधिकारी
7 स 2, पवनपुरी दक्षिण विस्तार कॉलोनी,
बीकानेर

संगीत और योग

❐ ज्ञानेश्वर सोनी

संसार की समस्त विधाओं में संगीत और योग अपना विशेष स्थान रखती है। यही दो विधाएँ ऐसी है जो लौकिक आनन्ददायी तथा फलदायी है। संगीत और योग दोनों ही नादात्मक विधा है। नाद जिसे हम सुन नहीं सकते। जो अति सूक्ष्म है, जो हमारे हृदय में हैं जिसे हठ योग क्रिया द्वारा ही जाग्रत किया जा सकता है। कान बन्द करने पर इसका सूक्ष्म अनुभव हो सकता है। योग एक अनाहत नाद है और संगीत का आहत नाद जो किसी घर्षण या आघात से उत्पन्न होता है। मनुष्य में वायु के आघात से हृदय व कंठ और ताल में जो नाद उत्पन्न होता है वह आहत नाद ही संगीतोपयोगी है। आहत नाद को ही जन साधारण प्रयोग में ला सकते हैं। अतः नाद रूपी वृक्ष की ही संगीत और योग रूपी दो डालियाँ है। आहत नाद सगुण है तो अनाहत निगुर्ण, आहत साकार है तो अनाहत निराकार। अनाहत नाद केवल साधक को ही सुनाई देता है और जब ध्वनी को हम वाणी द्वारा प्रकट करते हैं तो वह (संगीत का) आहत नाद हो जाता है। यह नाद ही मन को एकाग्र करने का एकमात्र साधन है। वह आहत हो या अनाहत। संगीत रत्नाकर में नादानन्द को अद्वितीय आनन्द कहा है और योग शास्त्र के वचन के अनुसार जब साधक का चित नाद में स्थिर हो क्रीड़ा करने लगता है। तब सब बाहरी विषय विस्मृत होकर नाद के साथ शान्त हो जाते हैं। यह लय ही योग है, समाधि है। अतः संगीत और योग में केवल ऊपरी साधन का अन्तर है। वास्तव में संगीत और योग दोनों ही एक ही नाद विधा के अन्तर्गत है। अतः गायक और योगी को दोनों विषयों का ज्ञान आवश्यक है। संगीत शास्त्र यह मानता है कि स्वर ब्रह्म का स्वरूप है। यही बात योगी भी मानते हैं। संगीत के द्वारा हम स्वर को उत्पन्न करते हैं। योगी योग क्रियाओं के द्वारा स्वर (शब्द) को सुनने की चेष्टा करता है। दोनों ही दशाओं में संगीत की स्वतंत्र सृष्टि नहीं होती किन्तु संगीत या शब्द जो प्रकृति में व्याप्त है उसे ग्रहण करने की विभिन्न क्रियाएँ हैं। स्वर प्रकृति का अंग है शब्द लय को जन्म देता है। संगीत के ज्ञाता लय शब्द से अच्छी तरह परिचित है। योगी का तो एकमात्र लक्ष्य ही लय होता है। चित्त की वृत्तियों को एकाग्र करके किसी निश्चित स्थान पर लगा देना योग है। बिल्कुल यही क्रिया संगीत में होती है। केवल एक अन्तर संगीत को दो भागों में विभक्त कर देता है। चित्त की वृत्तियों को स्वर में, व्याकरण में स्थिर कर देना और भावना में लय कर देना। प्रायः संगीत के नाम से जो शैली दृष्टि गोचर होती है वह संगीत शास्त्र इसमें वृत्ति शास्त्रीय परिधि में लीन रहती है। स्वर और लय से बनी राग की रूप रेखा चित्र बनकर गायक के सम्मुख खड़ी होकर तन्मयता देती है।

आत्मा एवं शरीर को एकीकृत करने वाली क्रिया को योग कहा गया है। योग का संन्यास में इसलिए महत्त्व है कि योग में दैविक शक्ति से साक्षात्कार करने की अलौकिक शक्ति है। हम संगीत को योग से महत्त्वपूर्ण मान सकते हैं। योग से तो वही व्यक्ति लाभान्वित होता है जो सिद्ध कर सके। किन्तु संगीत में वह दिव्य शक्ति है जो न केवल आराधक को बल्कि समस्त श्रोताओं को भी चमत्कृत कर एकाभूत कर देता है। संगीत में एक साथ कई शरीर, मन एवं आत्माओं को एकाभूत करने की अपूर्व क्षमता है तो हम संगीत को योग क्यों न कहें? महर्षि नारद संगीत के माध्यम से ही योग साधना करते थे। वे संगीत के माध्यम से अपनी आत्मा को परमात्मा में लीन करते रहते थे। कोई भी योगी जिसमें आत्मा को अनुशासित करने की शक्ति है। स्वभाव से त्रिकालज्ञ बन जाता है और उसे सहज ही कई शक्तियाँ उपलब्ध हो जाती है।

यदि संगीतकार सात्विक रूप से आत्मलीन हो जाए तो निश्चय ही नारद के समान त्रिकालज्ञ हो जाएगा। कितना ही विकराल सर्प हो वह बीन की मधुर तान के सामने झुक जाता है। कस्तुरी मृग भी संगीत के नाद को पाने के लिए छटपटाकर वन में भागता है। संगीत एक टूटे हृदय की औषधि है। योग के साथ संगीत का उपयोग करने से मस्तिष्क व्यस्त हो जाता है और हम दर्द को भूल जाते हैं। तनाव कम होता है, मन को सुकून सा मिलता है। जो व्यक्ति व्यायाम या कठिन परिश्रम नहीं करते उनके शरीरावयव ढीले तथा निर्जीव होते हैं। वाद्य तथा संगीत के साथ व्यायाम या योग किया जाए तो सोने में सुगन्ध हो जाए। यदि संगीत को एक दैनिक, शारीरिक व मानसिक आवश्यकता के रूप में स्वीकारा जा सके तो मनुष्य के मानसिक, शारीरिक, वैचारिक व नैतिक स्वास्थ्य का अभूतपूर्व रूप से हित साधन हो सकता है।

'संगीतज्ञ'
वरिष्ठ अध्यापक (सेवानिवृत्त)
असावत सोनारों की बीचली गवाड़, डागा पंचायत भवन के पास, बीकानेर (राज.)-334001
मो: 8005889818

Rajasthan Education Department

प्रताप जयन्ती विशेष

महाराणा प्रताप का जीवन वृत्तान्त

❒ विनोद कुमार महात्मा

मेवाड़ प्रान्त के गुहिल राजवंश की सिसोदिया शाखा में प्रातः स्मरणीय, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का जन्म वि. सं. 1597 ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, रविवार (9 मई, 1540 ई.) को महाराणा उदयसिंह की रानी जैवन्ताबाई की कोख से कुंभलगढ़ में हुआ। वे राणा सांगा के पौत्र थे। महाराणा प्रताप का बचपन का नाम 'कीका' था। प्रताप का बाल्यकाल चित्तौड़गढ़ में बीता। माता-पिता और गुरु आचार्य राघवेन्द्र द्वारा मिले संस्कारों ने महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व को उज्ज्वलता प्रदान करते हुए उन्हें अपने कुल के गौरव को सदैव ऊँचा रखने की प्रेरणा दी। लगभग 18 वर्ष की आयु में प्रताप का विवाह पाली के शासक राव मामरख पंवार की पुत्री अजबाद के साथ सम्पन्न हुआ।

महाराणा उदयसिंह के स्वर्गवास के बाद उनकी इच्छानुसार प्रिय रानी धीरबाई के पुत्र जगमाल को सिंहासनारूढ़ किया गया। उस समय दिल्ली सम्राट अकबर मेवाड़ पर आक्रमण करने की योजना बना चुका था। ऐसी विपरीत स्थिति में मंत्री व सरदारों ने मिलकर जगमाल को राजगद्दी से हटाकर प्रताप को महाराणा बनाने का निश्चय किया जो प्रताप के वरिष्ठ एवं योग्य होने के कारण उचित था। इस प्रकार 28 फरवरी सन् 1572 में महाराणा प्रताप का राजतिलक गोगुन्दा नामक स्थान पर हुआ। प्रताप के शौर्य से परिचित अकबर बिना युद्ध किए ही मेवाड़ को जीतना चाहता था। अकबर ने कुल चार बार संधि प्रस्ताव भेजे परन्तु प्रताप ने मेवाड़ की स्वतंत्रता के साथ कोई समझौता नहीं किया। इस पर कवि दुरसा आढ़ा ने लिखा-

अकबर कीना याद, हींदू नृप हाजर हुवा।
मेदपाट मरजाद पग लागो न प्रतापसी।।

आखिरकार महाराणा प्रताप और अकबर के सेनापति राजा मानसिंह के मध्य 18 जून 1576 में हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इस युद्ध में महाराणा प्रताप के साथ झाला मानसिंह, राणा पूंजा, हकीम खाँ सूरी, ग्वालियर के राजा रामसिंह तंवर अपने पुत्रों शालिवाहन, भवानीसिंह तथा प्रतापसिंह समेत भामाशाह और उनके भाई ताराचंद प्रमुख थे। इस युद्ध की एक विशेषता यह भी थी कि जहाँ अकबर का

सेनापति हिन्दु राजा मानसिंह था, वही महाराणा प्रताप का सेनापति एक मुगल पठान हकीम खाँ सूरी था। 18 जून, 1576 को सूर्योदय होते ही युद्ध का बिगुल बजने पर महाराणा प्रताप और उनकी सेना ने हल्दीघाटी दर्रे से निकलकर शाहीबाग में ठहरी मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण इतना शक्तिशाली था कि मुगल सेना भेड़ों के झुंड की तरह भाग खड़ी हुई। भागती हुई मुगल सेना जब खमनोर पहुँची तब मुगल पठान मिहतर खाँ ने ढोल बजाकर यह अफवाह फैला दी कि अकबर सेना सहित आ पहुँचा है। तब भागती हुई मुगल सेना के पैर ठहर गए और खमनोर स्थित मैदान में युद्ध पुनः आरंभ हो गया। दोनों ओर से हो रहे आक्रमण के कारण देखते ही देखते पूरा मैदान लाशों और रक्त से भर गया। तभी से उस मैदान का नाम 'रक्त तलाई' पड़ गया। युद्ध में ग्वालियर नरेश रामसिंह तंवर अपने तीनों पुत्रों सहित वीर गति को प्राप्त हुए। उनका स्मारक रक्त तलाई में आज भी तंवरों की छतरी नाम से विख्यात है।

युद्ध में प्रताप ने मानसिंह को निकट देख अपने घोड़े चेतक को ऐड लगाई। चेतक मानसिंह के हाथी पर चढ़ गया परन्तु मेवाड़ का दुर्भाग्य था कि हाथी के सूंड में बंधे खंजर से चेतक का पिछला पैर जख्मी हो गया। तब प्रताप के सामंतों ने प्रताप से युद्ध मैदान से हटकर सुरक्षित स्थान पर चले जाने का आग्रह किया। इस पर प्रताप ने अपने हमशक्ल सेनापति झाला मान को राजचिह्न देकर युद्ध भूमि से प्रस्थान किया। परन्तु वे स्वयं वीरतापूर्वक मुगलों से लोहा लेते वीरगति को प्राप्त हुए। इस पर एक कवि ने झाला मान के लिए लिखा है-

महलों से उमराव वण, रण में बणियो राण।
छत्र चंवर धारण किया, मरण धिनो मकवाण।।

घायल चेतक प्रताप को युद्ध क्षेत्र से निकालकर तीन पैरों पर ही पाँच कोस का रास्ता तय कर लगभग 22 फीट चौड़े पानी के नाले को पार कर अपने स्वामी को दुश्मनों से बचाने में सफल रहा। परन्तु चेतक ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। उसकी समाधि चेतक स्मारक के रूप में आज भी स्थित है। यह प्रताप के लिए वज्राघात था। परन्तु भाई शक्तिसिंह के पुनर्मिलन ने उनका हौसला बढ़ाया। प्रताप शक्तिसिंह का घोड़ा लेकर मचीन्द की पहाड़ियों में प्रस्थान कर गए। राजपूत सेना वीरगति को प्राप्त हुई और युद्ध अनिर्णीत रहा। महाराणा प्रताप ने युद्ध के पश्चात मेवाड़ की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए एक भीष्म प्रतिज्ञा की-

'जब तक मैं शत्रुओं से अपनी पावन मातृभूमि को मुक्त नहीं करा लेता, तब तक न तो मैं महलों में रहूँगा, न शैय्या पर सोऊँगा और न सोने-चाँदी के पात्रों में भोजन करूँगा।' उन्होंने उसका आजीवन निर्वाह कर अपने दृढ़ प्रतिज्ञ होने का एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

युद्ध के पश्चात मुगल सेना खाली हाथ पुनः लौट गई। गोगुन्दा पर अधिकार करने के बाद प्रताप ने सिरोही के राव सुरताण, जालौर के ताज खाँ और ईडर के राजा नारायण दास से मिलकर गुजरात स्थित मुगल शाही थानों पर आक्रमण किए तथा मेवाड़ होकर जाने वाली शाही लश्कर का आगरे का रास्ता बंद कर दिया। अकबर ने असफल होने के बाद शाहबाज खाँ को तीन बार मेवाड़ पर आक्रमण करने हेतु बड़ी

फौज के साथ भेजा परन्तु प्रताप ने छापामार पद्धति का प्रयोग कर मुगलों को मेवाड़ में टिकने नही दिया।

बार-बार युद्ध के कारण आर्थिक संकट से घिरे प्रताप को उनके कोषाधिकारी भामाशाह से अतुलनीय सम्पति भेंट स्वरूप प्राप्त हुई जिससे प्रताप के मनोबल में असीम वृद्धि हुई और उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प को मजबूत बनाते हुए अपना संघर्ष जारी रखा। उन्होंने 1582 में दिवेर युद्ध से अपनी विजय यात्रा प्रारंभ की। दिवेर युद्ध में प्रताप ने अपनी असीम शक्ति का परिचय देते हुए चौकीदार बहलोल खाँ लोदी को घोड़े सहित काट डाला। तत्पश्चात महाराणा प्रताप ने एक वर्ष में ही माण्डलगढ़ व चित्तौड़गढ़ को छोड़ कुंभगलगढ़, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, गोगुन्दा, मोही, मदारिया, सायरा सहित 36 थानों पर एकाधिपत्य कायम कर लिया और चावण्ड को अपनी नई राजधानी बनाया। विभिन्न सेनानायकों को भेजने के बाद भी अकबर अपनी महत्वाकांक्षा को पूरी नहीं कर सका और हताश होकर मौन युद्ध विराम की अवस्था अपना ली और महाराणा प्रताप के जीवित रहने तक मेवाड़ की तरफ नहीं देखा। इसी संदर्भ में कवि दुरसा आढ़ा ने कहा है-

अकबर पथर अनेक, के भूपत भेला किया।
हाथ न लागौ एक, पारस राण प्रतापसी।।

कुंवर अमरसिंह द्वारा अब्दुर्रहीम खानखाना के शिविर पर आक्रमण कर मुगल धर्म की औरतों को बंदी बना महाराणा प्रताप के समक्ष पेश किया परन्तु प्रताप ने अपनी कुल मर्यादा, विशाल हृदयता का परिचय देते हुए उन्हें ससम्मान पुनः लौटा दिया। अंतिम वर्षों में प्रताप ने मेवाड़ की राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति पर विशेष ध्यान देते हुए उदार लगान प्रथा की शुरूआत की। परिणामस्वरूप चारों तरफ शांति और सौहार्द्र का वातावरण बन गया। इसी प्रकार मेवाड़ पर राज्य करते हुए एक दिन अपने धनुष की प्रत्यंचा को ठीक करते समय उसके टूटने से गहरी चोट लगी और वे बुरी तरह जख्मी हो गए। मृत्यु से संघर्ष करते हुए यह महान योद्धा 57 वर्ष की आयु में 19 जनवरी 1597 को इस धराधाम को छोड़कर परम विश्राम की अवस्था में लीन हो गए। महाराणा प्रताप का अंतिम संस्कार चावण्ड में बाड़ौली गाँव के निकट बहने वाले एक नाले के तट पर हुआ। जहाँ श्वेत पाषाण की आठ स्तंभ वाली छतरी बनी हुई है और वहाँ एक सुंदर स्मारक का निर्माण किया गया है। यह बात आश्चर्यजनक परन्तु सत्य है कि महाराणा प्रताप की मृत्यु पर मुगल सम्राट अकबर ने उनकी देशभक्ति और कर्त्तव्यपरायणता को नमन किया। महाराणा प्रताप वीर योद्धा होने के साथ ही एक नैतिक व उदार छवि वाले सच्चे क्षत्रिय थे।

जब पूरा भारत अकबर के अधीन था तब मात्र महाराणा प्रताप ने अकबर को चुनौती देकर पूरे भारतवर्ष को स्वतंत्रता की प्रेरणा दी। उनकी वीरता, रण-कुशलता, कष्ट सहिष्णुता और नीतिमत्ता अत्यंत प्रशंसनीय व अनुकरणीय थी। उनकी वीरता पर मुग्ध होकर महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ ने लिखा-

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा राण प्रताप।
अकबर सूतो ओझकै, जाण सिराणे साँप।।

महाराणा प्रताप के जीवन से यही सीख मिलती है कि-

1. मनुष्य को हमेशा आत्मसम्मान और गौरव के साथ जीवन यापन करना चाहिए। जो धन से भी ज्यादा कीमती है।
2. प्रत्येक मानव को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर परिश्रम करते रहना चाहिए और आत्मबल को कमजोर नहीं होने देना चाहिए।
3. अन्याय एवं अधर्म का कभी साथ नहीं देना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में अन्याय को सहन नहीं करना चाहिए।
4. प्रत्येक मानव को समाज एवं राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं राष्ट्रभक्ति के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

जब तक इस संसार में वीरों की पूजा होती रहेगी। तब तक महाराणा प्रताप का उज्ज्वल व अमर व्यक्तित्व लोगों को स्वतंत्रता और देशाभिमान के लिए सदैव प्रेरित करता रहेगा। ऐसे वीर शिरोमणि, सूर्यवंशी एवं प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप को शत-शत नमन।

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
समग्र शिक्षा, उदयपुर (राज.)

पातल'र पीथल

अरे घास री रोटी ही जद,
वन बिलावड़ ले भाज्यो
नान्हो-सो अमर्‌यो चीख पड़्यो,
राणो रो सोयो दुख जाग्यो

हूँ लड्‌यो घणो, हूँ सह्यो घणो,
मेवाड़ी मान बचावण नै
हूँ पाछ नहीं राखी रण में,
बैर्‌या रो खून बहावण नै

जद याद करूं हळदीघाटी,
नैणां में रगत उतर आवै
सुख-दुख रो साथी चेलकड़ो,
सूती-सी हूक जगा ज्यावै

पण आज बिलखतो देखूं हूँ,
जद राजकंवर नै रोटी नै
तो क्षात्र-धर्म नै भूलूं हूँ,
भूलूं हिंदवाणी चोटी नै

मै'ला में छप्पन भोग जका,
मनवार बिना करता कोनी
सोनै री थाळयां नीलम रै,
बाजोट बिना धरता कोनी

ऐ हाय जका करता पगल्या,
फूलां री कंवळी सेजां पर
बै आज रुळै भूखा तिसिया,
हिंदवाणै सूरज रा टाबर

आ सोच हुई दो-टूक तड़क,
राणा री भीम बजर छाती
आंख्यां में आंसूं भर बोल्या,
मैं लिखस्यूं अकबर नै पाती

पण लिखूं किंया जद देखै है,
आडावळ ऊँचो हियो लियां
चित्तौड़ खड़्यो है मगरां में,
विकराळ भूत-सी लियां छियां...

-कन्हैयालाल सेठिया

गाँधीजी के मनोवैज्ञानिक व शैक्षिक विचारों की उपादेयता

❐ डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

महात्मा गाँधी का समूचा सामाजिक-राजनीतिक दर्शन, आचरण का कार्यक्रम है। उनका कहना है कि मानसिक अहिंसा की स्थिति को प्राप्त करने के लिए काफी कठिन अभ्यास की जरूरत है। हमारे जीवन में व्रत और नियमों का पालन उपयोगी है। यह अनुशासन हमें रुचिकर भले ही न लगे, फिर भी वह उतना ही आवश्यक है जितना कि एक सिपाही के लिए। गाँधी जी मानते थे कि यदि हमारा चित्त इसमें सहयोग न दे तो केवल बाह्य आचरण दिखावे की चीज हो जाएगी। इससे खुद हमारा नुकसान होगा और दूसरों का भी। मन, वाणी और कर्म में जब उचित संतुलन हो तभी सिद्धावस्था प्राप्त हो सकती है। लेकिन यह अभ्यास एक प्रचण्ड मानसिक आंदोलन होता है। अहिंसा कोई महज कवायद नहीं है। यह हृदय का सर्वोत्कृष्ट गुण है और साधन से ही प्राप्त हो सकता है। गाँधी जी ने मानव स्वभाव का गहन अध्ययन किया था। मनुष्य में देवत्व का अंश होते हुए भी वह अपनी वर्तमान स्थिति में आंशिक रूप से मनुष्य और आंशिक रूप से पशु है। मनुष्य प्रतिहिंसा को जीवन का नियम माने बैठा है, जबकि जीवन का वास्तविक नियम क्षमा, संयम और नियंत्रण है। गाँधी जी ने कभी अपने आपको स्वप्नदृष्टा नहीं माना। उनका दावा था कि वे व्यावहारिक आदर्शवादी है। उनकी दृष्टि में अहिंसा केवल ऋषियों और संतों के लिए नहीं है। वह सामान्य मनुष्यों के लिए है। अहिंसा मानव-जाति का नियम है जैसे हिंसा पशु का नियम है। पशु, शरीर-बल के अलावा और कोई नियम नहीं जानता। मनुष्य आत्मा की शक्ति का अनुसरण करता है। गाँधीजी का समुदायों की अपेक्षा व्यक्तियों पर अधिक भरोसा था। उनका विचार था कि समुदाय की अपेक्षा व्यक्ति अधिक विवेक सम्पन्न होता है। उसमें उत्तरदायित्व की भावना होती है। 1933 में गाँधी जी ने सामूहिक सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित कर दिया था। पर उन्होंने आन्दोलन के व्यक्तिगत रूप को चालू रखा था। 1940-41 के सत्याग्रह को भी उन्होंने सामूहिक सविनय अवज्ञा आंदोलन बनाया। गाँधीजी मानते थे कि समुदाय में अंधानुकरण की

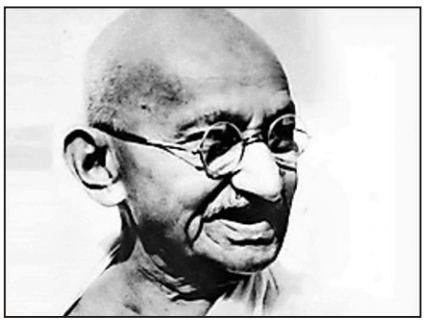

प्रवृत्ति होती है। यह आवेश में जल्दी आता है। व्यक्ति का जीवन अपेक्षाकृत संयत होता है।

गाँधीजी घोर आशावादी थे। वे आशावाद को आस्तिकता का ही एक रूप मानते थे। उनके अनुसार आशावादी ईश्वर का डर मानता है, विनयपूर्वक अपनी आत्मा की आवाज सुनता है, उसके अनुसार आचरण करता है। उसका मूलमंत्र होता है-ईश्वर जो कुछ करता है, वह अच्छे के लिए करता है। गाँधी जी की दृष्टि में आशावादी प्रेम में मग्न रहता है। वह किसी को अपना दुश्मन नहीं मानता। इससे वह निडर होकर जंगलों और गाँवों की सैर करता है। वह मौत से नहीं डरता। वह शरीर की चिन्ता नहीं करता।

गाँधीजी के तत्वदर्शन में श्रद्धा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। गाँधीजी ने श्रद्धा को ईश्वरीय विभूति माना है और उसे आत्म-विश्वास, ईश्वर-विश्वास के साथ जोड़ा है। उनका कहना है कि ''जब चारों ओर काले बादल दिखाई देते हों, किनारा कहीं नजर न आता हो और ऐसा मालूम होता हो कि बस अब डूबे, तब भी जिसे विश्वास हो कि मैं हर्गिज न डूबूंगा, उसे कहते हैं श्रद्धावान। गाँधीजी श्रद्धा को एक सार्वभौम तत्व मानते हैं। उनका यहाँ तक कहना है कि श्रद्धा और विश्वास न रहे तो प्रलय हो जाए। संसार के हर धर्म में ऐसे पीर-पैगम्बर, साधु-संत, ज्ञानी-महात्मा हुए हैं, जिन्होंने तपस्या और भक्ति का जीवन बिताया है। ऐसे व्यक्तियों के वचनों और अनुभवों का आदर करना मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। यह काम श्रद्धा कर जाती है। दूसरों की आँख जहाँ चकाचौंध में पड़ जाती है वहाँ श्रद्धालु की आँख स्पष्ट रूप से दीपकवत सब देख लेती है। जहाँ श्रद्धा है, वहाँ पराजय नहीं।

गाँधीजी कोरे बुद्धिवाद के विरूद्ध थे। उनके विचार से मनुष्य जो कुछ भी करता है या करना चाहता है, उसका समर्थन करने के लिए प्रमाण भी ढूँढ़ निकालता है। जब बुद्धिवाद सर्वज्ञता का दावा करने लगे, तब वह भयंकर राक्षस बन जाता है। निरी व्यावहारिक बुद्धि, सत्य का आवरण है, वह सोने का पात्र है जो सत्य के वास्तविक रूप को ढक देता है। विद्वता हमें जीवन की अनेक संकटापन्न अवस्थाओं में सफलतापूर्वक उबार सकती है, पर प्रलोभन के समय हमारा साथ नहीं देती। उस हालत में अकेली श्रद्धा ही उबारती है। श्रद्धा और बुद्धि के क्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं, श्रद्धा से अन्तर्ज्ञान, आत्मज्ञान की वृद्धि होती है। उससे अन्त:करण की शुद्धि होती है। बुद्धि के बाह्य ज्ञान की सृष्टि के कारण ज्ञान की वृद्धि होती है, पर उससे अन्त:करण की शुद्धि होती हो ऐसी अनिवार्यता नहीं है। अत्यंत बुद्धिशाली लोग, अत्यन्त चरित्रवान भ्रष्ट भी पाए जाते हैं। श्रद्धा के साथ चरित्र-शून्यता असंभव है।

गाँधीजी त्याग के समर्थक थे। वे जीवन में भौतिक सुख-सुविधाओं को कम से कम करने के पक्षपाती थे। गाँधीजी ने मध्ययुगीन संतों की भाँति दीनता, विनम्रता और दरिद्रता को जानबूझकर अपनाने पर जोर दिया है, वे आत्मा के विकास के लिए शरीर को कसना आवश्यक मानते हैं। सब जीवों के साथ एकता की अनुभूति के लिए मनुष्य को त्याग और बलिदान का सहारा लेना होगा। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रही का जीवन आत्म-समर्पण का होना चाहिए। वह अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग जनसेवा के लिए करता है। गाँधीजी के मनोविज्ञान के लिए आवश्यक है कि हम यह जानने का प्रयत्न करें कि गाँधीजी की स्वयं अपने बारे में क्या राय थी। गाँधीजी कठोर आत्म-निरीक्षक थे और उन्होंने अपनी दुर्बलताओं पर विजय पाने के अपने प्रयत्नों को संसार के सामने एक खुली किताब की तरह स्पष्ट किया है। गाँधीजी के पास छिपाने के लिए कुछ नहीं था।

Rajasthan Education Department

उन्होंने अपनी रचनाओं में, अपने अंतर्विरोधों तथा आंतरिक संघर्षों का स्पष्टता से उद्घाटन किया है। गाँधीजी आजीवन आध्यात्मिक साधना के पथ पर चले। उन्होंने जीवन के हर मोड़ पर अपनी कमजोरियों पर विजय पाने की कोशिश की। यदि उनसे कभी कोई भूल हुई तो उन्होंने उसे स्वीकार करने में अपनी हठी न समझी।

गाँधीजी सत्य के शोधक थे। वे मुक्ति पाना चाहते थे, लेकिन इसके लिए हिमालय की गुफा में जाना और ध्यान लीन होना उन्हें अभीष्ट न था। वे मनुष्य की सेवा द्वारा ईश्वर की सेवा करना चाहते थे। उन्होंने अपने आप को दीन से दीन व्यक्ति के साथ अभिन्न माना। गाँधीजी का आत्म-विश्लेषण, अंग्रेजी कवि 'जॉन मिल्टन' की 'ऑन हिज ब्लाइन्डनेस' (नेत्र हीनता) विषयक कविता में व्यक्त विचारों की भाँति है। ईश्वर बड़े बड़े राजाओं, महाराजाओं के ऐश्वर्य से प्रभावित नहीं होता। ईश्वर तो अपने दीन-हीन सेवकों की निष्ठा का प्रेमी है। गाँधीजी भी अपने जीवन में दरिद्र नारायण के पुजारी थे। वे अपने व्यक्तित्व को रजकण के रूप में परिवर्तित करना चाहते थे। हर कोई सड़क की धूल को अपने पैरों से रौंदता हुआ चलता है। उनके जीवन का लक्ष्य था, मानवता की सेवा में अपने आपको मिटा देना।

गाँधीजी की दृष्टि में अहिंसा विनम्रता की पराकाष्ठा थी। उनके सामने राजा जनक का आदर्श रहता था जो महलों में रहते हुए भी संत थे। गाँधीजी समग्र जीवन के साधक थे। धर्म, राजनीति, शिक्षा, समाज, अर्थ ये सभी क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। वे स्वप्नदृष्टा थे, पर अपने सपनों को व्यावहारिक जामा पहनाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। जीवन का लोभ मनुष्य से सब कुछ करा सकता है। अतएव, जो जीवन का लोभ छोड़कर जीता है, वही सच्चा जीवन है, जीवन का स्वाद लेने के लिए हमें जीवन के लोभ का त्याग करना होगा।

गाँधीजी विद्यार्थियों पर पाठ्य पुस्तकों का बोझ लादने के विरोधी थे। उनका विचार था कि छात्र की वास्तविक पाठ्य पुस्तक उसका अध्ययन है। उन्होंने अपनी आत्म कथा में लिखा है कि ''सामान्य ज्ञान की जानकारी पाने से पहले कम आयु के ज्ञान रहित बच्चों को वर्ण परिचय एवं पढ़ने की योग्यता में दबाना ठीक नहीं, इससे वे मौखिक शिक्षा को आत्मसात करने के लाभ से वंचित रह जाते हैं। गाँधीजी की मनोवैज्ञानिक धारणाएं भारतीय संस्कृति के शाश्वत तत्वों पर आधारित है। संतों ने इन पर सदा जोर दिया है। लेकिन उनके निकट ये मनोवैज्ञानिक धारणाएँ वैयक्तिक साधना का अंग थी। गाँधीजी ने उन्हें सामाजिक रूप दिया। गाँधीजी ने अपनी मनोवैज्ञानिक धारणाओं को जैसे त्याग, तपस्या, संतोष आदि की धारणाओं को कभी निषेधात्मक नहीं माना। वे इन्हें रचनात्मक धारणाएँ मानते हैं, उनके अनुसार सुखी जीवन का 'रहस्य' त्याग में हैं, वे त्याग को जीवन और भोग-विलास को मृत्यु समझते हैं। उनका विश्वास था कि जैसे-जैसे मनुष्य अपने शरीर को कसता है, उसी अनुपात में उसकी आत्म-शक्ति बढ़ती है। यदि मनुष्य विश्वात्मा के साथ अपनी एकता स्थापित करता है तो अपने अहम् को मारना होगा।

गाँधीजी के त्याग और वैराग्य का अर्थ संसार से पलायन नहीं है। वे सच्चे कर्मयोगी थे। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए आत्म-समर्पण का जीवन था। गाँधीजी ने अपने सामाजिक और राजनीतिक दर्शन में त्याग, संयम, बलिदान और आत्म-समर्पण जैसे आदर्शों का सामाजिक जीवन के कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के साथ सुन्दर सामंजस्य स्थापित किया है और मानव-चिन्तन के इतिहास में यह उनकी महत्त्वपूर्ण देन है। उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गाँधीजी विश्व के महान शिक्षा मनीषियों में प्रमुख हैं। वे प्रथम भारतीय शिक्षा शास्त्री थे, जिन्होंने भारत की संस्कृति, सभ्यता, धर्म एवं मूल आवश्यकताओं के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा योजना का सूत्रपात किया। आज के बदलते परिवेश में एवं पाश्चात्य शिक्षा के रंग में सरोबार भारत के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि हमारी राष्ट्रीय शिक्षा धारा गाँधीजी के शैक्षिक सिद्धान्तों एवं विचारों के अनुरूप हो तभी इस देश का कल्याण सम्भव है और पुन: शैक्षिक गुरु के रूप में विश्व में अपनी पहचान बना सकेगा।

प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर
(राज.)-322201
मो: 9462607259

कठोरता हारती है।

एक साधु बहुत बूढ़े हो गए थे। उनके जीवन के आखिरी क्षण आ पहुँचे। उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया। जब वे सब उनके पास आ गए, तो उन्होंने अपना मुँह पूरा खोल दिया और शिष्यों से बोले, 'देखो, मेरे मुँह में कितने दाँत बच गए हैं?'

शिष्यों ने उनके पोपले मुँह के अंदर देखते हुए कहा, 'महाराज, आपका तो एक भी दाँत शेष नहीं है।' साधु बोले, 'देखो, मेरी जीभ तो बची हुई है ना?'

सबने साथ में उत्तर दिया, 'जी हाँ, जीभ अवश्य बची हुई है।'

साधु ने कहा, 'जीभ तो मेरे जन्म के साथ से मेरे साथ है और आज भी बची हुई है, जबकि दाँत तो बाद में आए फिर भी पहले विदा हो गए।'

फिर सारे शिष्यों ने इसका भेद जानने के लिए प्रश्न किया 'यह कैसे हुआ कि दाँत कोई ना बचा और जीभ सलामत है?

संत ने बताया, 'यही रहस्य बताने के लिए मैंने इस वेला में तुम्हें बुलाया है। इस जीभ में माधुर्य था, मिठास थी और यह खुद भी कोमल थी, इसलिए आज भी मेरे पास है, परंतु दाँतों में शुरू से ही कठोरता थी, इसलिए वे पीछे आकर भी पहले खत्म हो गए, अपनी कठोरता के कारण ये दीर्घजीवी नहीं हो सके। इसलिए दीर्घजीवी होना चाहते हो, तो कठोरता छोड़ो और विनम्रता सीखो।'

महादेवी के मूक साथी

❐ आशा शर्मा

यूँ तो कमोबेश हर मनुष्य भावनात्मक रूप से कोमल होता ही है किंतु कलाकार या रचनाकार अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील माने जाते हैं। सच भी है क्योंकि जो हृदय किसी अन्य की पीड़ा को अभिव्यक्ति दे, दिल दूसरे के दुःख से व्यथित हो कर अपनी आँखें नम कर ले और जो व्यक्ति पराये दर्द को अपना दर्द बना ले वही सही मायने में संवेदनशील कहा जाएगा।

महादेवी वर्मा जी के रचना संसार से गुजरते हुए हम पाते हैं कि वे न केवल मानव मन के दर्द की चितेरी थी बल्कि पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं के लिए भी उनका दिल उतनी ही शिद्दत से भर जाया करता था। उनके अनेक रेखा चित्र इस तथ्य की गवाही देते हैं कि महादेवी जी विभिन्न प्राणियों की सहचरी थी। कहना जरा अजीब लग रहा है किंतु आपके संस्मरण पढ़ते-पढ़ते जान पड़ता है कि आपके आवास को मानवीय आवास कम और जंतुआलय कहना अधिक उचित होगा।

गौरा गाय, गिल्लू गिलहरी, सोना हिरनी, नीलकंठ मोर, निक्की नेवला, रोजी कुत्ती, रानी घोड़ी, नीलू कुत्ता और दुर्मुख खरगोश जैसे बहुत से चरित्र इस कथन की पुष्टि करते हैं कि उनका घर केवल उन्हीं का निजी निवास नहीं था बल्कि उसमें कई पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं का भी आवास था। इनमें से कुछ पात्र यथा गौरा गाय और गिल्लू गिलहरी तो रचना संसार में जैसे अमर ही हो गए। यहाँ हम महादेवी जी के कुछ विशेष रेखाचित्रों के बारे में चर्चा करेंगे।

सबसे पहले हम बात करते हैं नीलकंठ की जो कि एक मोर है। इसे महादेवी जी ने एक चिड़िया बेचने वाले बड़े मियां से खरीदा था। एक पक्षी का अपने सहजीवों के प्रति लगाव और उनकी सुरक्षा की भावना देखनी हो तो नीलकंठ का उदाहरण अति उत्तम कहा जा सकता है। नीलकंठ ने अपनी जान पर खेलते हुए अपने सहचर शिशु खरगोश को सांप का निवाला बनने से न केवल बचाया बल्कि रात भर उसे अपने पंखों में सहेज कर अपनेपन की ऊष्मा भी देता रहा। यह जंतुओं के आपसी सौहार्द का

असाधारण प्रमाण है।

एक पक्षी को भी इतनी समझ होना आश्चर्य की बात हो सकती है कि जिस नुकीली चोंच से वह किसी विषधर को खण्ड-खण्ड कर सकता है उसी चोंच से हथेली पर रखे भुने चने कितनी कोमलता से उठा-उठाकर खाता है।

मनुष्य की तरह अपने प्रिय पात्र के प्रति गहन प्रेम और ईर्ष्या का भाव देखना हो तो इसी रेखाचित्र की एक अन्य पात्र कुब्जा मोरनी को देखा जा सकता है। इस मोरनी को भी वे घायल अवस्था में इन्हीं बड़े मियां के बाड़े से लेकर आई थी। कुब्जा मोरनी का नीलकंठ के प्रति एकतरफा प्रेम देखते ही बनता है। नीलकंठ का सामिप्य प्राप्त हो या न हो किंतु वह किसी अन्य को उसके समीप बर्दाश्त नहीं कर सकती। यहाँ तक कि कुढ़न की मारी कुब्जा अपनी प्रतिद्वंद्वी राधा के अंडे भी कितनी बेरहमी से नष्ट कर देती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्रेम और एकाधिकार की भावना मनुष्य और पशु-पक्षियों में समान ही होती है।

गौरा गाय का रेखाचित्र महादेवी जी का अन्य अमर रेखाचित्र है जिसमें उन्होंने एक ग्वाले की दुर्भावना का भी चित्रण किया है। गौरा गाय से सम्बंधित महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़कर मनुष्य को मनुष्य कहने में शर्म महसूस होने लगी। अपने तुच्छ स्वार्थ के चलते कैसे एक ग्वाले ने गाय जैसे निरीह पशु की हत्या की साजिश कर डाली। धीरे-धीरे मौत के अंधकार की तरफ अग्रसर गौरा के दर्द को केवल एक अति संवेदनशील व्यक्ति ही महसूस कर सकता है। इतना दारुण संस्मरण जिसे पढ़ते हुए पाठक के कलेजे में हूक उठने लगती है उस संस्मरण को साक्षात जीने वाले की पीड़ा का अनुभव करने की सोच ही रोंगटे खड़े कर डालती है।

गाय एक ऐसा पशु है जिसे सनातन धर्म में सर्वोच्च पूजनीय स्थान प्राप्त है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार इस एक मात्र जीव में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास है। यहाँ इस तथ्य की प्रामाणिकता की बात नहीं की जा रही लेकिन इसमें कोई दोराय नहीं कि गाय लगभग हर घर में पूज्य है और इस नाते गाय के प्रति किसी के भी स्वाभाविक लगाव को समझा जा सकता है लेकिन उसी गाय को एक घिनौनी साजिश रचते हुए स्वार्थी मनुष्य ने मौत के घाट उतार दिया। धिक्कार है मनुष्य तुझ पर।

अपनी पीड़ा को शब्द देते हुए महादेवी जी कहती हैं- यदि दीर्घ निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सकता तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी आह! मेरा गोपालक देश।

गौरा गाय की तरह ही महादेवी जी द्वारा रचित गिल्लू गिलहरी का रेखाचित्र भी बहुत प्रसिद्ध है। यह इस कारण भी विशेष है क्योंकि गिलहरी जैसा जंतु जो कभी पालतू की श्रेणी में नहीं गिना गया वह भी इनके निकट स्थान पा गया था।

यूँ तो गिलहरी अमूमन आबादी के आसपास लगे पेड़ों पर विचरती हुई देखी जा सकती है। शायद इन्हें मनुष्य के आसपास रहने की आदत होती है किंतु किसी परिवार के साथ पालतू की तरह रहने का यह शायद एकमात्र अनुभव ही होगा।

महादेवी जी ने गिल्लू नाम को अमर कर दिया। उन्होंने अपने रेखाचित्र में लिखा भी है कि हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक रूप दे दिया। यह कथन इस बात का द्योतक है कि गिलहरी जैसा जीव शायद ही कभी किसी का पालतू रहा हो।

Rajasthan Education Department

गिल्लू के क्रियाकलापों और उसके साथ महादेवी जी की अपनी दिनचर्या का रोचक वर्णन इस रेखाचित्र में मिलता है। गिलहरी जैसा जीव भी अपने स्वामी के प्रति कितना स्नेह रख सकता है यह सचमुच अकल्पनीय है। अपने मालिक को खुश रखने का प्रयास लगभग हर पालतू करता ही है किन्तु एक गिलहरी से ऐसी अपेक्षा करना शायद अपेक्षाओं की अति कही जा सकती है। अपनी मालिक का ध्यानाकर्षित करने के लिए किया गया गिल्लू का हर प्रयास उसके चरित्र को अद्भुत बनाता है। गिल्लू की अंतिम बेला का चित्रण तो इतना मार्मिक है कि किसी की भी आंखें नम कर दे।

गिलहरी की तरह ही हिरण भी पालतू जानवर नहीं है किन्तु महादेवी जी के घर में पालतू-अपालतू का भेद नहीं देखा जाता। शायद इसीलिए हर परिचित को ऐसे दया के पात्र जीवों की प्राण रक्षा के लिए सर्वप्रथम आपका की खयाल आता था।

एक जगह महादेवी जी लिखती हैं कि उनके परिचित स्वर्गीय डॉ. धीरेंद्र नाथ वसु की पौत्री सस्मिता ने यह कहते हुए एक हिरन उन्हें सौंपा- मैं ये हिरण ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती जो इसके साथ बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है कि आपके यहाँ उसकी भलीभांति देखभाल हो सकेगी। यह मेरे इस कथन को पुष्ट करता है कि महादेवी वर्मा जी एक दयालु और जीवों के प्रति प्रेम रखने वाली महिला थी। वे इस कथन की प्रबल पक्षधर थी कि प्रकृति में जितने भी जीव-जंतु और पशु-पक्षी हैं वे संसार को रंगों से भरकर इंद्रधनुषी बनाते हैं। उनकी विभिन्न तरह की आवाजें वीणा, बंशी, मुरज और जलतरंग की तरह बजकर विश्व को संगीतमय बनाती हैं।

आप मनुष्य द्वारा सुंदर वन्य जीवों के शिकार करने की प्रवृत्ति से बेहद आहत रहा करती थी। वे दुःखी होकर लिखती हैं कि आकाश में रंग-बिरंगे फूलों के समान उड़ते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठाई, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी ढेले के समान नीचे आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंचवाली गर्दन टूट गई है। किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गए हैं। किसी के इंद्रधनुषी पंख बिखर गए हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात मृत-अर्धमृत लघुगीतों में न अब संगीत है न सौंदर्य। परन्तु तब भी मारने वाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

अपने रेखाचित्र सोना हिरनी में आप द्रवित हो कर लिखती हैं कि मैं प्रायः सोचती हूँ कि मनुष्य जीवन की ऐसी सुंदर ऊर्जा को निष्क्रिय और जड़ बनाने वाले कार्य को मनोरंजन कैसे कहता है।

महादेवी जी के रेखाचित्र पढ़ें तो लगभग सभी रेखाचित्रों में कुछ समानताएँ दिखाई देती हैं। चाहे गिल्लू गिलहरी हो या सोना हिरनी, कुब्जा मोरनी और दुर्मुख खरगोश जैसे अन्य पात्र... सभी उन्हें मरणासन्न अवस्था में ही मिले थे। इनमें से बहुत से जीव पालतू नहीं होते यानी ये प्राणी साधारणतया आम घरों में नहीं पाले जाते। किंतु इन सभी जीवों को पालतू की तरह व्यवहार करते देखकर यकीनन यह कहा जा सकता है कि किसी भी जीव को अपना बनाने के लिए स्नेह और दुलार ही पहली और आखिरी शर्त होती है।

अब बात करते हैं एक अन्य विचित्र प्राणी की। ये महाशय हैं श्रीमान दुर्मुख खरगोश जी। महादेवी जी का दुर्मुख खरगोश भी एक चकित कर देने वाला जीव था। इस रेखाचित्र के जरिये यह बखूबी जाना जा सकता है कि क्रोध का परिणाम अंततः नाश या विनाश ही होता है।

वस्तुतः खरगोश एक डरपोक जंतु है लेकिन दुर्मुख खरगोश अपने जातिगत स्वभाव के एकदम विपरीत। गुस्सैल और निर्मोही। स्वभाव का यह विरोधाभास ही उसके विचित्र नामकरण का कारण भी बना। अपने क्रोधी स्वभाव के कारण अंततः वह एक संपोले का शिकार होकर काल का ग्रास बन जाता है।

सुवाक्य

कोई भी काम करने से होता है, सीखकर करने से आसान व सरल हो जाता है, बार-बार करने से उसमें पारंगता (विशेषज्ञता) प्राप्त होती है।

-अज्ञात

दुर्मुख खरगोश की जीवन यात्रा पर चलते-चलते महादेवी जी के इस कथन से भी सहमत हुआ जा सकता है कि जिस दुर्मुख खरगोश ने अपने शिशुकाल में ही अपनी माता को खो दिया वही दुर्मुख भी यदि अपने अन्य संगी-साथियों के साथ खेलता-खाता बड़ा हुआ होता तो शायद उसका स्वभाव भी इतना क्रोधी या निर्मम नहीं हुआ होता। यह संभव है कि मातृ छाया से वंचित वह जीव अपना यही क्षोभ गुस्से के रूप में अपने अन्य सहचरों पर निकालता हो। कौन जाने अकेले और मातृ छाया से वंचित बच्चे भी इसी कारण चिड़चिड़े और निष्ठुर होते हों।

महादेवी वर्मा जी के रेखाचित्र पढ़ते हुए यह पता चलता है कि उनका हृदय मूक प्राणियों के लिए कितना द्रवित रहता होगा क्योंकि उनके अधिकांश प्राणी उन्हें लगभग मरणासन्न अवस्था में ही प्राप्त हुए थे। इन जीवों की प्राण रक्षा करने के लिए किए गए उनके प्रयत्न भी अनुकरणीय हैं। इन रेखाचित्रों के सहारे पशु-पक्षियों और अन्य जीव-जंतुओं के स्वभाव को समझना भी बहुत हैरान करने वाला है। ये मूक प्राणी अपने साथियों की सुरक्षा करने के लिए कितनी सहजता से अपनी जान जोख़िम में डाल देते हैं। नीलकंठ मोर और नीलू कुत्ता के रेखाचित्र इस खूबी के साक्ष्य हैं।

मनुष्य चाहे तो इन मूक पशु-पक्षियों से बहुत कुछ सीख सकता है। प्रेम, सौहार्द, अपनापन, संरक्षण, त्याग जैसे अनेक नैतिक मूल्यों की स्थापना करते ये प्राणी मनुष्य के बेहतरीन शिक्षक हो सकते हैं। ये कपटी मनुष्य की तरह किसी से छल नहीं करते। किसी को धोखा नहीं देते।

किसी जीव को पालना या नहीं पालना किसी की भी व्यक्तिगत सोच हो सकती है किन्तु किसी मूक पशु या प्राणी को अकारण तकलीफ देना किसी की निजी पसंद नहीं हो सकती। प्रकृति के संसाधनों पर जितना अधिकार मनुष्य का है उतना ही सृष्टि में व्याप्त अन्य जीवों का भी है। बस, इतनी छोटी सी बात स्मरण रखते ही यह पृथ्वी स्वर्ग सी सुंदर हो जाएगी।

-123, करणी नगर, लालगढ़, बीकानेर
(राज.)- 334001
मो: 9413369571

Rajasthan Education Department

ग्रीष्मावकाश विशेष

आओ पुनः सजायें-बचपन में छुट्टियों के रंग

❒ विकास चन्द्र 'भारू'

समय परिवर्तनशील होता है। इसी परिवर्तन के साथ समस्त स्थितियाँ, व्यवस्थाएँ, आकांक्षाएँ एवं महत्त्वाकांक्षाएँ भी बदलती रहती हैं। इन्हीं बदलती परिस्थितियों, आकांक्षाओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं से हमारे समाज की दशाएँ एवं जीवन की आवश्यकताएँ तय हाने लगी हैं। समय बीतने के साथ-साथ सामाजिक ढांचे एवं मानवीय आवश्यकताओं में आमूलचूल परिवर्तन आया है। बदलती आवश्यकताओं ने मानव को यंत्रवत बना दिया है तथा इससे प्रत्येक के जीवन में समय की एक कृत्रिम न्यूनता पैदा हो गई है।

इन सब बदलती परिस्थितियों एवं समय की न्यूनता की मार यदि सबसे ज्यादा किसी पर पड़ी है तो वह है 'बालमन'। जहाँ उच्च एवं धनाढ्य वर्ग से तो बहुत पहले ही जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा 'बचपन' चार-दिवारी में सिमटे कृत्रिम खिलौनों, मंहगे क्लबों एवं यांत्रिक तथा इलेक्ट्रोनिक्स गेजेट्स की भेंट चढ़ चुका है लेकिन वर्तमान समय में यह प्रतीत हो रहा कि एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार में भी जीवन के इस स्वर्णिम समय को अभिभावकों की महत्त्वाकांक्षाओं के भेंट चढ़ाया जा रहा है। नौनिहालों के लिए आज दादा-दादी, नाना-नानी की कहानियाँ, ताऊ-ताई, मामा-मामी की डाँट-फटकार, तपती दोपहरी में नंगे पाँवों दिनभर खेलना, जाने-अनजाने खेत-खलिहानों में काम करना, ढोर चराना, पेड़ों पर चढ़ना-कूदना, पड़ोसी की झाड़ी से बेर चुराना आदि सब कल्पना से परे हो चुके हैं।

एक समय होता था जब दीपावली, सर्दियों एवं गर्मियों की छुट्टियों को लेकर बाल मन में एक उत्साह होता था। इन छुट्टियों को लेकर वे अपने दोस्तों के साथ मिलकर महीनों पहले से ही योजनाएँ बनाना प्रारम्भ कर देते थे। बच्चे अपने ननिहाल, दादी के गाँव या शहर में बसने वाले अपने रिश्तेदार के यहाँ जाने के लिए समय रहते ही परिवार वालों की सिफारिशें एवं स्वीकृति जुटाना प्रारम्भ कर देते थे। इन छुट्टियों में उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया होती थी। मौसम एवं समय के अनुसार उनके कार्य एवं खेल भी निराले होते थे। उन निराले खेलों में प्रतिस्पर्धा, स्फूर्ति, शारीरिक एवं मानसिक वर्जिश, सहयोग, सामाजिकता, प्रेम, नियोजन एवं प्रबंधन के नैसर्गिक गुणों का समावेश होता था जो उन्हें विभिन्न परिस्थितियों से मुकाबला करने हेतु कटिबद्ध एवं उद्यत बनाते हैं।

इस प्रकार की छुट्टियों का आनंद लेने के लिए बच्चों के संसाधन एवं सामग्री भी नैसर्गिक तथा स्वयं के ही होते थे। जहाँ आज के इस कृत्रिम दौर में बच्चों की दुनिया एवं उनके खेल पूर्णतया कंकरीट के बने ढाँचों तथा बजरी उपकरणों पर निर्भर हो चुके हैं वहीं छुट्टियों के उन दिनों में बच्चे किसी बाजारी संसाधनों के मोहताज नहीं थे। वर्तमान में बच्चों के लिए वो नैसर्गिक खेल जैसे- गुली-डण्डा, मारधड़ी, रसड़ी, कूरको, सतौलिया, कौड़ला-मार, लङ्घी, तीज व गणगौर में खेजड़ी पर डले झुले, गुत्था, अडबळी, हरदड़ा, काच के कंचे, लुख-मिचणी, पकड़म-पकड़ाई, आँख-मिचौली, चिको, चरभर, घुण-मिंगणा, चोर-गुप्पी, घेटा, महुआ बिनना, किर-किर कांटिया, आँवला पिपली, इल्ली-बिल्ली, कोयलों आदि खेलों की बातें ही परी कथा के समान हैं। इन प्रत्येक खेलों में सामूहिकता नजर आती है। बिना संगी-सखा तथा मुक्त परिवेश के उक्त खेलों की कल्पना ही संभव नहीं है। ना कोई खाने का समय होता था न ही किसी एक्स्ट्रा क्लास के छूट जाने का भय होता था। जो उन्मुक्तता एवं नैसर्गिकता उस दौर एवं इन खेलों में पाई जाती थी, आज महंगे उपकरणों, विशाल मैदानों एवं कम्प्यूटरीकृत गेजेट्स के द्वारा उसकी कल्पना मात्र भी नहीं की जा सकती है। तपती धूप में भूखे प्यासे, नंगे पांव पूरा दिन गुजार देने के बाद प्राप्त होने वाली तृप्ति की अनुभूति आज वातानुकूलित इंडोर स्टेडियम में भी नहीं प्राप्त की जा सकती।

धन अर्जन की बढ़ती लालसा एवं कर्त्तव्य की मजबूरियों के चलते परिवारों का पलायन गाँव से शहर की ओर तीव्र गति से हो रहा है। परिवार लगातार टूटते जा रहे हैं। पति-पत्नी दोनों कामकाजी हो रहे हैं। प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों को हरफनमौला (All-rounder) बनाना चाहते है ताकि आने वाले समय में वे अपने-आप को किसी न किसी क्षेत्र में समायोजित कर सकें एवं जीविकोपार्जन हेतु बढ़ती प्रतिस्पर्धा में विभिन्न विकल्प अपने पास रख सकें। इन सबके बीच यदि किसी का दम घुटता है तो वह है-बचपन। उक्त सब के कारण एक तो बच्चों के परिवेश का दायरा सिमटता जा रहा है साथ ही असमय ही उनको अभिभावकों की महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने का भार भी ढोना पड़ रहा है। सुबह उठने के साथ ही बच्चे की स्कूल बस दरवाजे पर होती है। स्कूल से आते ही खाने से पहले ही होमवर्क की चिंता शुरू हो जाती है। शाम को पहले एक्स्ट्रा क्लास, स्पिकिंग क्लास, मैमोरी क्लास आदि और उसके बाद हॉबी क्लास जैसे म्यूजिक, डांस, पेंटिंग आदि। इन सब के बाद भी सप्ताहांत (Week-end) पर टेनिस, क्रिकेट, शतरंज जैसी लम्बी क्लास भी नियोजित रहती हैं। क्या इन सब के बीच कहीं भी हमें बचपन नजर आता है? इतना सब करने के बाद पहले तो बच्चे के पास वक्त ही नहीं बचता है कि वह कुछ स्वैच्छिक या नैसर्गिक कर सके और यदि वह वक्त निकाले तो भी उसमें इतना पराक्रम एवं एनर्जी ही नहीं बचती कि वह खुले परिवेश के किसी खेल का हिस्सा बन सके। खुले परिवेश के रूप में भी उसके लिए या तो अपार्टमैंट का पार्क या फिर क्लब की चारदीवारी के भीतर का स्थान ही होता है। इन सब से मायूस होकर वह मोबाइल या कम्प्यूटर के साथ ही अपना वक्त बिताकर अपने आप को तसल्ली दे लेता है जो आगे चलकर उसकी आदत में शुमार

Rajasthan Education Department

हो जाता है तथा वह खुद को इन इलेक्ट्रोनिक्स उपकरणों का गुलाम बना लेता है। इस सम्बन्ध में किसी अज्ञात द्वारा कहा गया एक उद्धरण व्यक्त करना चाहूँगा कि –

'खाली पड़ा है मेरे पड़ोस का मैदान,
एक मोबाइल बच्चों की गेंद चुरा ले गया।'

इतना ही नहीं खाने-पीने में भी बच्चे की पसंद एवं नापसंद का कोई महत्त्व बचा है बस स्वाद, न्यूट्रीशन, मैमोरी पॉवर, एनर्जी के हिसाब से ही उसका नाश्ता, लंच और डिनर तय होता है। जबकि किसी जमाने में स्वाद का मापक केवल भूख ही होती थी। खाने का समय और मेन्यू-कार्ड तय न होकर भी कभी न्यूट्रीशन की कमी नहीं हुआ करती थी।

क्या हमारे लिए यह कल्पना स्वीकार्य है कि हम एक ऐसी पीढ़ी तैयार करे जिसके कंगूरे तथा गुंबद तो चमकीले हों परन्तु उसकी नींव केवल दिखावटी हो। इस प्रकार बोझ के तले दबी पीढ़ी में अवसाद, उदासीनता, खिन्नता, विकलता जैसे दोष बढ़ रहे हैं जो आत्महत्या, सामाजिक वैमनस्य, अन्यमनस्कता, प्रतिद्वंद्विता जैसे कुत्सित एवं गलत कर्मों को बढ़ा रहे है। इनके परिणामस्वरूप आने वाली पीढ़ियाँ सामाजिकता से दूर एक कृत्रिम एवं बनावटी परिवेश को तैयार करेगी जहाँ संस्कार, मानवता, रिश्ते-नाते, दया, सेवा आदि केवल काल्पनिक बातें होगी। आज के समय में यह एक कटु सत्य है कि हर कोई अपने बच्चों को उच्च शिक्षित तथा ज्ञान के भण्डार के रूप में देखना चाहता है परन्तु संस्कार रूपी उसकी असली पूँजी में हर कोई निवेश करने से चूक रहा हैं। जबकि वास्तविकता तो यह है कि ज्ञान आज हर अंगुली के नीचे पहुँच चुका है तथा शिक्षा बाजार के हर नुक्कड़ पर बिक रही है। लेकिन एक बालक के लिए जो संस्कार रूपी असली पूंजी है वह केवल उसे अपने दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-ताऊ, बुआ-मौसी जैसे रिश्तों-नातों, घर-परिवार, सामाजिक-परिवेश, संगी-साथी से ही एक प्राकृतिक तथा बंधन मुक्त वातावरण में ही प्राप्त हो सकती है।

इस बात को आलेख के प्रारम्भ में ही स्वीकार कर लिया गया है कि समय के साथ परिस्थितियाँ एवं प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। इस कारण से बालकों को अधिक सीखने एवं अपने आप को कुशल बनाने की प्रवृत्ति का विकास करना आवश्यक है परन्तु उक्त के साथ ही हम सब का यह भी फर्ज है कि हम अबोध एवं नादान बालमन की नैसर्गिकता को समाप्त न होने देवें। अन्य समय संभव न हो सके तो कम से कम शैक्षणिक सत्र में निर्धारित दीपावली, सर्दियों एवं गर्मियों की छुट्टियों में तो बच्चों को सामाजिक एवं पारिवारिक माहौल में स्वच्छंद जीवन जीने का अवसर उपलब्ध करावें। उसे अपने दादा-दादी, नाना-नानी के सान्निध्य में उनके जीवन के विभिन्न पड़ावों के अनुभवों, संस्कारों को जानने सीखने का मौका प्रदान करें। उन्हें योजनाबद्ध एवं नियमबद्ध दस्तूरी जिंदगी से परे अपनी दुनिया रचाने-बसाने का समय देवे जहाँ वे स्वयं ही नीति-निर्धारक, स्वयं ही कार्यकर्ता एवं स्वयं ही प्रबन्धक हों। इससे वे नए दोस्त बनाना, सामाजिक व्यवहार, समायोजन एवं परिस्थितिनुसार निर्णय करने के लिए तैयार होंगे जो उन्हें एक मशीनी मानव से हटकर स्वाभाविक व्यक्तित्व के रूप में तैयार करेगा।

यदि आप और हम मिलकर बचपन में पुनः छुट्टियों के रंग सजो सके तो यह बालमन को हमारी और से एक अद्वितीय उपहार होगा जो उनका जीवन तो बदलेगा ही साथ ही राष्ट्र को भी हमारी ओर से सुयोग्य नागरिकों की एक विलक्षण भेंट होगी। बालमन को केवल छुट्टियाँ जी लेने देना ही समाज से विभिन्न प्रकार के अवसादों को दूर कर देगा तथा उनकी नैसर्गिक प्रतिभा एक संस्कारवान सुदृढ़ राष्ट्र एवं सुखद भविष्य तैयार करेगी। इससे तैयार होने वाली पीढ़ी की नींव ऐसी स्थाई और गहरी हो जाएगी कि उस पर बने हुए गुबंदों एवं कंगूरों की शोभा ही न्यारी होगी। शायद यह अंक सुधी पाठकों के हाथों में होने तक ग्रीष्मावकाश भी अपनी दस्तक दे चुका होगा, अतः हम सबको यह तय करना है कि आओ पुनः सजाए-बचपन में छुट्टियों के रंग।

प्राध्यापक-वाणिज्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
निराधनूं, झुन्झुनू
मो. 8118840355

मन की शाँति

सेठ अमीरचंद के पास अपार धन दौलत थी, लेकिन उसके मन को शांति नहीं मिल पाती थी। एक दिन वह कहीं जा रहा था तो रास्ते में उसकी नजर एक आश्रम पर पड़ी। वहाँ उसे किसी साधु के प्रवचनों की आवाज सुनाई दी। उस आवाज से प्रभावित होकर अमीरचंद आश्रम के अंदर गया और वहाँ बैठ गया।

प्रवचन समाप्त होने पर वह वहीं बैठा रहा। संत बोले, 'कहो, तुम्हारे मन में क्या जिज्ञासा है?' अमीरचंद बोला, बाबा, मेरे जीवन में शांति नहीं है।' संत बोले 'तुम आँखें बंद करके ध्यान की मुद्रा में बैठो। संत की बात सुनकर अमीरचंद ध्यान की मुद्रा में बैठा तो उसके मन में इधर-उधर की बातें घूमने लगी। उसका ध्यान उचट गया। सेठ बोला, 'चलो, जरा आश्रम का एक चक्कर लगाते है।'

इसके बाद वह आश्रम में घूमने लगा। अमीरचंद ने एक सुंदर वृक्ष देखा तथा उसे हाथ से छुआ। हाथ लगाते ही उसके हाथ में एक काँटा चुभ गया और वह चिल्लाने लगा। यह देखकर संत अपनी कुटिया में आए। कटे हुए हिस्से पर लेप लगाया। कुछ देर बाद संत सेठ से बोले, 'तुम्हारे हाथ में जरा-सा काँटा चुभा तो तुम बेहाल हो गए।' सोचो कि जब तुम्हारे अंदर ईर्ष्या, क्रोध व लोभ जैसे बड़े-बड़े काँटे छिपे है, तो तुम्हारा मन भला शांत कैसे हो सकता है? अमीरचंद को अपनी गलती का अहसास हो गया। वह संतुष्ट होकर वहाँ से चला गया। अमीरचंद ने ईर्ष्या, लालच और क्रोध का त्याग कर दिया।

Rajasthan Education Department

आदेश-परिपत्र : मई-जून, 2022

1. दुर्घटना बीमा योजना लागू करने के संबंध में।
2. बजट घोषणा संख्या 116/2021-22 की क्रियान्विति अन्तर्गत विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना बाबत।
3. विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण बाबत।
4. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' 2021-22 के प्रस्ताव भिजवाने बाबत्।
5. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' अन्तर्गत चयनित बालिकाओं के भुगतान के संबंध में।
6. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' की क्रियान्विति के संबंध में नवीन दिशा-निर्देश।
7. सुगम बजट व्यवस्थापन के संबंध में दिशा निर्देश।

1. दुर्घटना बीमा योजना लागू करने के संबंध में।

● राजस्थान सरकार वित्त (बीमा) विभाग ● क्रमांक : प.4(72) वित्त/राजस्व/94-लूज ● दिनांक 18.04.2022 ● आदेश

राज्य सरकार द्वारा समसंख्यक आदेश दिनांक 30.03.1995 के द्वारा समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों पर दिनांक 1 मई, 1995 से समूह व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना लागू की गयी है, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग के साधारण बीमा निधि कार्यालय से समूह व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा पॉलिसी हेतु अप्रेल माह के वेतन से प्रीमियम राशि की कटौती की जाती है। इसी क्रम में पॉलिसी वर्ष 2022-23 (दिनांक 01.05.2022 से 30.04.2023 तक की अवधि) के लिए उक्त योजना के अन्तर्गत दुर्घटना बीमा का आवरण प्राप्त किए जाने हेतु अधिकारियों/कर्मचारियों को निम्नतालिका में अंकित श्रेणियों में से किसी भी श्रेणी के चयन का विकल्प उपलब्ध कराया जाएगा :-

श्रेणी	बीमाधन	कार्मिक के वेतन से प्रीमियम कटौती	राज्य सरकार द्वारा वहन की गई राशि
1	5 लाख	निःशुल्क	350/-
2	10 लाख	550/-	350/-
3	20 लाख	1050/-	350/-
4	30 लाख	1750/-	350/-

इस सम्बन्ध में निम्नलिखित दिशा निर्देश जारी किए जाते है :-

1. राजस्थान केडर के अखिल भारतीय सेवा के समस्त अधिकारियों सहित राज्य सरकार के समस्त कर्मचारियों एवं अधिकारियों के माह अप्रेल देय मई, 2022 के वेतन से अधिकारी/कर्मचारी द्वारा उपरोक्त तालिका में से चयनित श्रेणी के अनुसार प्रीमियम की कटौती की जाएगी।
2. समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारी उनके समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के वेतन से पे-मैनेजर पोर्टल/ई-ग्रास पोर्टल/पीआरआई पे-मैनेजर पोर्टल के माध्यम से कार्मिक द्वारा चयनित श्रेणी के अनुसार कटौती करेंगे। प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत राज्य सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों की भी उक्त कटौती राशि साधारण बीमा निधि मद में जमा करायी जाएगी।
3. समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों द्वारा उनके समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से एसआईपीएफ पोर्टल में प्रस्ताव पत्र की पूर्ति कराया जाना तथा उपरोक्त तालिका में से किसी भी एक श्रेणी का चयन कराया जाना आवश्यक है।
4. जिन कार्मिकों द्वारा गत वर्ष एसआईपीएफ पोर्टल पर ऑनलाइन प्रस्ताव पत्र पूर्ति किया जा चुका है तथा जिन्हें वर्तमान में न तो मनोनयन परिवर्तन करना है एवं न ही श्रेणी के विकल्प में कोई परिवर्तन करना है, उन्हें ऑनलाइन प्रस्ताव पत्र भरना आवश्यक नहीं है। ऐसी स्थिति में आहरण एवं वितरण अधिकारी गत वर्ष कार्मिक द्वारा दिए गए श्रेणी के विकल्प के अनुसार ही कार्मिक के वेतन से प्रीमियम कटौती किया जाना सुनिश्चित करेंगे। कार्मिक के द्वारा दिए गए विकल्प के अनुसार प्रीमियम कटौती करने का पूर्ण उत्तरदायित्व संबंधित आहरण एवं वितरण अधिकारी का होगा।
5. ऐसे कार्मिक जिनके द्वारा गत वर्ष कोई विकल्प नहीं देने पर उनका प्रीमियम पूर्वानुसार 220/- रु. ही काटा गया था, यदि वे कार्मिक इस बार भी कोई विकल्प प्रस्तुत नहीं करते है तो उनकी कोई प्रीमियम कटौती आहरण एवं वितरण अधिकारी द्वारा नहीं की जाएगी और उन्हें श्रेणी संख्या 1 के तहत 5 लाख रुपये के बीमाधन का कवर प्राप्त होगा।
6. किसी कार्मिक द्वारा अपने आहरण वितरण अधिकारी को एक बार विकल्प प्रस्तुत किए जाने तथा आहरण वितरण अधिकारी द्वारा प्रीमियम कटौती कर लिए जाने के बाद वर्ष के दौरान कार्मिक द्वारा विकल्प में परिवर्तन नहीं कराया जा सकेगा। इसी प्रकार जिन कार्मिकों द्वारा ई-ग्रास के माध्यम से प्रीमियम कटौती कराई जावेगी उनके द्वारा उस वर्ष में अधिक बीमाधन हेतु प्रीमियम की अन्तर राशि की कटौती नहीं कराई जा सकेगी।
7. दिनांक 01.05.2022 के पश्चात नियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों पर भी उक्त योजना अनिवार्य रूप से लागू होगी तथा श्रेणी संख्या 2 से 4 में से विकल्प लेने की स्थिति में उनके प्रथम वेतन से 2022-23 हेतु देय प्रीमियम की राशि आई.आर.डी.ए. नियमानुसार प्रोरेटा आधार पर काटी जाएगी।
8. समस्त आहरण वितरण अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि किसी भी राज्य कर्मचारी/अधिकारी के माह अप्रेल 2022 के वेतन बिल

को तैयार करते समय श्रेणी विकल्प के अनुसार आवश्यक प्रीमियम की कटौती कर ली गई है। जिन अधिकारियों/कर्मचारियों का माह अप्रेल, 2022 का वेतन यदि किसी कारण से आहरित नहीं किया जा रहा है तो ऐसे अधिकारी/कर्मचारी निजी स्तर से प्रीमियम राशि (उपरोक्त तालिका में से चयनित श्रेणी के अनुसार) एसआईपीएफ/ईग्रास पोर्टल के माध्यम से दिनांक 31.05.2022 से पूर्व साधारण बीमा निधि में जमा कराएंगे। कोई प्रीमियम जमा नहीं कराने की स्थिति में उक्त कार्मिक श्रेणी संख्या 1 में बीमित माने जावेंगे।

9. पुलिस विभाग के वर्दीधारी अधिकारी/कर्मचारियों, जिनके प्रीमियम का भुगतान राज्य सरकार द्वारा किया जाता है, उन पर यह योजना लागू नहीं होगी। यह योजना वित्त (नियम) विभाग की अधिसूचना संख्या प.12(6) वित्त/नियम/05 दिनांक 13.03.2006 के अंतर्गत नियुक्त प्रोबेशनर ट्रेनीज पर भी अनिवार्य रूप से लागू होगी।

इस संबंध में प्रक्रिया संबंधी विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान करने हेतु निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग, राजस्थान, जयपुर समस्त आहरण एवं वितरण अधिकारियों को अपने स्तर से एक परिपत्र जारी कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करेंगे।

● आज्ञा से, **(वेद प्रकाश गुप्ता)** संयुक्त शासन सचिव

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/रोकड/सी-1/वेतन/2022 ● दिनांक 19.04.2022

1. पृष्ठांकित प्रतिलिपि समस्त अनुभाग अधिकारी, कार्यालय हाजा को प्रेषित कर लेख है कि अनुभाग के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को उक्तानुसार सूचित करावें तथा श्रेणी चयन कर आवश्यक प्रस्ताव ऑन-लाईन कर हार्ड कॉपी आज ही रोकड अनुभाग को भिजवायें ताकि समय पर वेतन बिल तैयार किया जा सके।
2. नोटिस बोर्ड

● सहायक लेखाधिकारी (रोकड़)

2. बजट घोषणा संख्या 116/2021-22 की क्रियान्विति अन्तर्गत विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/सेल-डी/साई.वि.यो/2022-23 दिनांकः 25.04.2022 समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय माध्यमिक ● विषयः बजट घोषणा संख्या 116/2021-22 की क्रियान्विति अन्तर्गत विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना बाबत। ● प्रसंगः शासन के पत्रांक प. 1(7) शिक्षा-1/साई.वि.यो/2009 पार्ट-7 जयपुर दिनांक 02.02.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार का प्रासंगिक पत्र के द्वारा बजट घोषणा संख्या 116/2021-22 घुमन्तु समुदाय के उत्थान हेतु निर्धारित योजना की क्रियान्विति अन्तर्गत प्रदेश में विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्ध घुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना का आगामी सत्र से क्रियान्विति बाबत निर्देश प्राप्त हुए है।

राज्य में योजना के सफल क्रियान्विति हेतु आप अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं को योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार बाबत निर्देश जारी करें। इस क्रम में उक्त योजना को समस्त राजकीय एवं निजी विद्यालयों द्वारा वर्तमान में संचालित योजनाओं के साथ उक्त योजना को भी शामिल करते हुए विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रम, प्रवेशोत्सव में एवं विद्यालय के सूचना पट्ट पर योजना का वर्णन एवं देय लाभों का उल्लेख करवाने के निर्देश जारी करें।

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/सेल-डी/साई.वि.यो/2022-23 दिनांकः 25.04.2022 ● विषयः विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण बाबत।

विस्तृत दिशा-निर्देश

योजना का नाम- विमुक्त, घुमन्तु तथा अर्द्धघुमन्तु समुदाय के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण।

योजना का परिचय- घुमन्तु समुदाय के उत्थान हेतु निर्धारित योजना की क्रियान्विति अन्तर्गत प्रदेश में विमुक्त, घुमन्तु तथा अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना का आगामी सत्र से योजना का परिलाभ दिया जाएगा।

योजना का उद्देश्य-

1. प्रदेश में विमुक्त, घुमन्तु तथा अर्द्धघुमन्तु समुदाय का विकास करना।
2. विमुक्त, घुमन्तु समुदाय तथा अर्द्धघुमन्तु समुदाय के विद्यार्थियों का विद्यालयों में नामांकन एवं ठहराव सुनिश्चित करना।

योजना के अन्तर्गत देय लाभ- कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण।

पात्रता एवं शर्तें-

1. परिशिष्ठ 'ख' (संलग्न) में उल्लेखित 32 जातियों (विमुक्त

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

जातियाँ-9, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु जातियाँ-10 एवं अर्द्धघुमन्तु जातियाँ-13) के विद्यार्थी।

2. कक्षा 06 से 11 तक में अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं छात्राएँ (50 प्रतिशत छात्र एवं 50 प्रतिशत छात्राएँ)।

कक्षा	प्रस्तावित लक्ष्य		कुल
	छात्र	छात्रा	
6	350	350	700
7	350	350	700
8	350	350	700
9	205	206	411
10	205	206	411
11	205	206	411
कुल	**1665**	**1668**	**3333**

3. उन छात्रों एवं छात्राओं को दुबारा लाभ नहीं दिया जाएगा। जिन्हें इस योजना अन्तर्गत एक बार लाभान्वित किया जा चुका हो। इसके लिए विद्यार्थियों से इस आशय का शपथ पत्र लिया जाएगा।

4. प्रत्येक कक्षा में 60 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी पात्र होंगे।

5. कुल आवेदित विद्यार्थियों में से न्यून से अधिक आय की ओर बढ़ते हुए क्रम में मेरिट का निर्धारण किया जाएगा।

6. अंतिम स्थान पर एकाधिक विद्यार्थी आने पर उनकी जन्मतिथि के आधार पर मेरिट का निर्धारण किया जाए। (जिस विद्यार्थी की जन्मतिथि अधिक है उसे पहले वरीयता में शामिल किया जाए।)

7. उन छात्राओं को देय नहीं होनी चाहिए जिनको शिक्षा विभाग द्वारा निःशुल्क साइकिल एक बार दी जा चुकी है या दी जा रही है तथा जिन छात्राओं द्वारा ट्रांसपोर्ट वाउचर की सुविधा ली जा रही है इसके लिए कक्षा 09 या उच्च कक्षा की छात्राओं से इस आशय का एक शपथ-पत्र लिया जाएगा।

आवेदन व चयन की प्रकिया- उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से ऑनलाइन आवेदन (शाला दर्पण / पीएसपी के माध्यम से) लिया जाएगा (प्रपत्र संलग्न)। जिसे संस्थाप्रधान द्वारा सत्यापित कर सम्बन्धित मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को भिजवाया जाएगा। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय-माध्यमिक शिक्षा द्वारा पूरे जिले के आवेदन पत्र संकलित कर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को भिजवाया जाएगा। निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर के राज्य के समस्त आवेदन पत्रों में से पात्र विद्यार्थियों का चयन कर निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग को आवश्यकतानुसार राशि की मांग की जाएगी।

आवेदन पत्र के समय आवश्यक दस्तावेज- 1. जाति प्रमाण पत्र, 1. आय प्रमाण पत्र, 3. अंक तालिका, 4. शपथ पत्र

देय लाभ- निःशुल्क साइकिल

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

विमुक्त, घुमन्तू तथा अर्द्धघुमन्तु समुदाय के कक्षा 6 से 11 तक अध्ययनरत राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों को निःशुल्क साइकिल वितरण योजना

आवेदन पत्र वर्ष 2022-23

छात्रा का फोटो

जन आधार आई डी में विद्यार्थी की व्यक्तिगत पहचान संख्याडी

(पूर्ति संस्थाप्रधान द्वारा शालादर्पण पोर्टल से की जावेगी)

1.	छात्र/छात्रा का नाम				
2.	वर्तमान में अध्ययनरत कक्षा एवं सेक्शन जिसमें अध्ययनरत है				
3.	परिवार की जन आधार आई-डी संख्या/एक्नोलेजमेन्ट नम्बर				
4.	छात्रा के पिता का नाम				
5.	छात्रा की माता का नाम				
6.	छात्रा की जन्म तिथि (अंकों एवं शब्दों में)				
7.	लिंग				
8.	धर्म				
9.	जाति (प्रमाण पत्र संलग्न करें)				
10.	अभिभावक/संरक्षक के पता एवं मोबाइल नम्बर				
11.	विद्यार्थी की ई-मेल आईडी				
12.	ग्रामीण/शहरी				
13.	परिवार की वार्षिक आय (आय प्रमाण पत्र संलग्न करें)				
14.	शैक्षणिक योग्यताः-	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत	
	उत्तीर्ण सत्र कक्षा परिणाम (प्रति संलग्न करे)				
15.	विद्यार्थी द्वारा क्या पूर्व में साइकिल/ट्रांसपोर्ट सुविधा प्राप्त की गई हैंः- हाँ या नहीं (यदि नहीं तो शपथ पत्र संलग्न करें)				

अभिभावक/संरक्षक के हस्ताक्षर | जांचकर्ता/कक्षा अध्यापक | संस्थाप्रधान के हस्ताक्षर मय मोहर

परिशिष्ठ 'ख'

List of denotified Tribes, Nomadic Tribes and Semi Nomadic Tribes

विमुक्त, घुमन्तु जातियों और अर्द्ध घुमन्तू जातियों की सूची

As Approved vide Government in social Welfare Department Order No. F.1 (F)(2)SW/63/dated 24-002-64

Rajasthan Education Department

Denotified Tribes (विमुक्त जातियाँ)– 1. Baori (बावरी), 2. Kanjar (कजर), 3. Sansi (साँसी), 4. Bagri (Bawaria) (बागरी) (वावरिया), 5. Mogia (मोगिया), 6. Nut (नट), 7. Naik (नाइक), 8. Multanis (मुल्तानिस), 9. Bhat (भाट)

Nomadic Tribes and semi Nomadic Tribes (घुमन्तू एवं अर्द्धघुमन्तू जातियाँ) Nomadic Tribes (घुमन्तू जातियाँ) 1. Baldias (Banjaras) (वालदीयाज)(बंजारा), 2. Pardhis (परधिस), 3. Domabaris (दोमावरिस), 4. Gadia Lohars (गाडिया–लोहार), 5. Iranis (इरानिस), 6. Jogi Kalbelia (जोगी कालवेलिया), 7. Jogi Kanphata (जोगी कनफटा), 8. Khurpalts (Kulphaltas) (खुरपलट्स) (कुलफलट्स), 9. Shikkaligar (सिकलीगर), 10. Ghisadis (घीसादिस)

Semi Nomadic Tribes (अर्द्धघुमन्तू जातियाँ)– 1. Sarangiwala-Bhopas (सारंगीवाला–भोपा), 2. Rebaris (रैवारी), 3. Raths (राठ), 4. Mangalias (मंगलियास), 5. Bhayas (भाया), 6. Kannis (कन्नीस), 7. Janglus (जंगलस), 8. Jalukus (जालूकूस), 9. Jhangs (जानस), 10. Sindlus (सिन्डलुस), 11. Jogis-(other then those Included in Nomadic Tribes) (जोगी)(घुमन्तु जातियों में शामिल को छोड़कर), i. Girinaths (गिरिनाथ), ii. Ajaipals (अजयपाल), iii. Agamnaths (अगमनाथ), iv. Namanths (नामाथ), v. Jalandhars (जालंधर), vi. Masanls (मसानी), 12. Ramaswami (रामास्वामी), 13. Bharaddi-jadhavs (भारादिजाधव)

4. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' 2021–22 के प्रस्ताव भिजवाने बाबत्।

● बालिका शिक्षा फाउण्डेशन राजस्थान, जयपुर ● क्रमांकः प.85/बा.शि.फा./मु.ह.बे. योजना/2016–17/पार्ट–2/132–164 दिनांक : 25.04.2022 ● जिला शिक्षा अधिकारी, (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा, समस्त ● विषयः 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' 2021–22 के प्रस्ताव भिजवाने बाबत। ● सन्दर्भः राज्य सरकार पत्रांक प 17(11) शिक्षा–1/2015/जयपुर/दिनांक 19.04.2022 एवं नि.मा.शि. बीकानेर पत्रांक शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/स्कॉलर–इ/मु.ह.बे.यो/2021–22/ दिनांक 21.04.2022

उपर्युक्त विषय एवं सन्दर्भित पत्रों के सम्बन्ध में लेख है कि 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' वर्ष 2021–22 के प्रस्तावों हेतु निर्देशित किया गया है। उक्त पत्रों के अनुपालना में वर्ष 2021–22 में कक्षा–11 एवं 12 में अध्ययनरत बालिकाओं से प्रपत्र–1 व 2 की पूर्ति करवाकर इस कार्यालय को दिनांक 15.05.2022 तक निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखतें हुए बिलों की जाँच किया जाना आवश्यक हैः–

1. राज्य सरकार द्वारा जारी पत्रांक दिनांक 16.10.2015 के बिन्दु संख्या 3.3 के अनुसार कोचिंग संस्थानों से तात्पर्य जिले में चल रहे प्रतिष्टित कोचिंग संस्थानों (संस्थागत संस्थानों) से है न कि व्यक्तिगत स्तर पर टयूशन (पर्सनसल टयूशन) से है।
2. कोचिंग संस्थानों के स्थान पर व्यक्तिगत स्तर शिक्षक से कोचिंग/प्रशिक्षण प्राप्त करती है तो इस के लिए किसी प्रकार की आर्थिक सहायता प्रदान नहीं की जा सकेगी।
3. यदि बालिका किसी भी कक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाती है तो बालिका को पुनः उसी कक्षा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान नहीं की जाएगी।

प्रपत्र–1 व 2 एवं बिलों की जाँच उपरान्त प्रति संलग्न कर भिजवाया जाना सुनिश्चित करें। इस कम में यह भी उल्लेख है कि वर्ष 2021–22 में केवल कक्षा–11 व 12 में अध्ययनरत बालिकाओं के ही प्रस्ताव इस कार्यालय को भिजवाए जावे। उच्च शिक्षा से सम्बन्धित बालिकाओं के कोई भी प्रस्ताव इस कार्यालय को प्रेषित नहीं किए जाने है कक्षा–11 व 12 में अध्ययनरत बालिकाओं के प्रस्ताव निम्न प्रारूप में आवश्यक रूप से भिजवाए जाने का कष्ट करें।

क्र.स.	कक्षा	बालिका का नाम	बालिका को देय राशि	संस्था को देय राशि	कुल राशि

● **डॉ. भारती वर्मा,** सचिव बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, जयपुर

5. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' अन्तर्गत चयनित बालिकाओं के भुगतान के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/छात्रवृति/स्कॉलर–इ/मु.ह.बे.यो/2021–22 दिनांक : 21.04.2022 ● सचिव, बालिका शिक्षा फाउंडेशन, जयपुर ● विषयः 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' अन्तर्गत चयनित बालिकाओं के भुगतान के संबंध में। ● प्रसंगः राज्य सरकार के पत्रांक क्रमांक प17(11) शिक्षा–1/2015 जयपुर दिनांक 19.04.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार का प्रासंगिक पत्र संलग्न कर लेख है कि 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' के अन्तर्गत वर्ष 2021–22 में वित्तीय सहायता प्रदान किए जाने के संबंध में राज्य सरकार द्वारा जारी नवीन निर्देशानुसार क्रियान्वित किया जाना सुनिश्चित करने का श्रम करें।

● प्रभारी अधिकारी, छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन प्रकोष्ठ, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' की क्रियान्विति के संबंध में नवीन दिशा–निर्देश।

● शिक्षा (ग्रुप–1) विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांकः प 17(11) शिक्षा–1/2015 जयपुर दिनांक : 19.04.2022 ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषयः 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना' की क्रियान्विति के संबंध में नवीन दिशा–निर्देश। ● संदर्भः शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/स्कॉलर–इ/मु.ह.बे.यो/ 2020–21 दिनांक 24.03.2022 ● प्रसंगः इस विभाग का समसंख्यक पत्रांक पं.17/(11) शिक्षा–1/2015 दिनांक 16.10.2015

उपर्युक्त विषयान्तर्गत संदर्भित एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि 'मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ' योजनान्तर्गत वर्ष 2021–22 में वित्तीय

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

सहायता प्रदान किए जाने के संबंध में वर्तमान में कक्षा 11 व 12 में अध्ययनरत बालिकाओं को पुरस्कार देने की कार्यवाही बालिका शिक्षा फाउण्डेशन जयपुर के द्वारा तथा स्नातक एवं उच्च स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं के लिए उक्त योजना उच्च शिक्षा विभाग के माध्यम से क्रियान्वित किए जाने की स्वीकृति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है।

शेष शर्तें पूर्व में जारी इस विभाग के समसंख्यक पत्र दिनांक 16.10.2015 के अनुसार अनुसार रहेगी। यह सक्षम स्तर से अनुमोदित है।

● **(भारतेन्द्र जैन)** शासन एव सचिव, प्रथम

मुख्यमंत्री हमारी बेटियां योजना की क्रियान्विति हेतु नवीन दिशा-निर्देशः

(1) स्कूल शिक्षा विभाग के संदर्भ में:-

1. पात्रता - योजनान्तर्गत राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत रहते हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की कक्षा 10 की परीक्षा में प्रत्येक जिले में प्रत्येक जिले में-

- प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली 02 मेधावी छात्राओं हेतु न्यूनतम अंक 75%
- प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बी.पी.एल. परिवार की 01 मेधावी छात्रा न्यूनतम अंक 75%
- प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली अनाथ 01 मेधावी छात्रा न्यूनतम अंक 75%

को स्नातकोत्तर स्तर तक नियमित अध्ययन करने पर आर्थिक सहायता देय है तथा नोडल एजेंसी-बालिका शिक्षा फाउण्डेशन होगा।

2. आवेदन का सत्यापन- आवेदन के सत्यापन की द्वि-स्तरीय व्यवस्था

लेवल-1- सम्बन्धित संस्थाप्रधान, लेवल-2- सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय

3. चयनित मेधावी छात्रा को अध्ययन हेतु देय सुविधाएँ-

अकादमिक कोर्स (कोचिंग लेने पर)

- कक्षा 11 व 12/समकक्ष में नियिमत अध्ययन होने पर

अकादमिक कोर्स (कोचिंग लेने पर)

- 11वीं/12वीं कक्षा के साथ प्रतियोगी परीक्षा में प्रवेश के लिए कोचिंग लेने पर प्रथम एक वर्ष के लिए ही एक ही बार राशि का पुनर्भरण किया जा सकेगा, जिसके लिए छात्रा पात्र है।

4. देय राशि-

कक्षा		देय राशि
11 व 12	एक मुश्त सहायता	छात्रावास/कोचिंग के बिल प्रस्तुत करने पर
	15,000 रु. प्रतिवर्ष	1,00,000 रु. प्रतिवर्ष अधिकतम

5. बजट स्त्रोत- बालिका शिक्षा फाउण्डेशन जयपुर।

7. सुगम बजट व्यवस्थापन के संबंध में दिशा निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2022-23/78 दिनांकः 25.04.2022 ● विषयः सुगम बजट व्यवस्थापन के संबंध में दिशा निर्देश। ● परिपत्र।

वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांक प.4(48)वित्त-1(1)/आ.व्य/2021 दिनांक 29.03.2022 के बिन्दु संख्या 1 में सुगम समेकित (Consolidated Pool) बजट की व्यवस्था की गई है, जिसमें संवेतन, मजदूरी, पेंशन, यात्रा व्यय, चिकित्सा व्यय, जल एवं विद्युत, टेलीफोन एवं किराया, दर एवं रॉयल्टी के अतिरिक्त अन्य सभी विस्तृत मद (Object Head) बी.एफ.सी. मिनट्स की शर्तों के अनुरूप तथा विभाग द्वारा जारी प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति से सम्बद्ध कर ही व्यय किया जाए, अंकित किया गया है। अतः इस सम्बन्ध में विभाग द्वारा निम्नानुसार निर्देश जारी किए जाते है-

1. विभाग के अधीनस्थ समस्त आहरण-वितरण अधिकारी वर्ष 2022-23 के लिए संवेतन, यात्रा व्यय, RRT (भवन किराया) के उपमदों में वास्तविक व्यय के आधार पर व्यय करने के लिए अधिकृत होंगे।
2. उपर्युक्त के अतिरिक्त 04-चिकित्सा व्यय उपमद में वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांक प.6(10) वित्त (नियम)/2021 पार्ट जयपुर दिनांक 01.02.2022 के अनुसार दिनांक 30.09.2021 तक के चिकित्सा दावे विभाग को 31.03.2022 तक ही स्वीकार किए जाने थे। उसी क्रम में विभाग द्वारा प्राप्त समस्त दावों के लिए राज्य सरकार से अतिरिक्त बजट की मांग की गई है। अतः चिकित्सा व्यय में निदेशालय की स्वीकृति/अधिकृति अनुसार व्यय किया जाए।
3. अधीनस्थ उप निदेशक (प्रशासन), रोकड़ अनुभाग, उप निदेशक (समाज शिक्षा), संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, सार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल, शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, नेत्रहीन, मूक बधिर विद्यालय, गुरुनानक भवन संस्थान जयपुर, जिला शिक्षा अधिकारी (विधि) उपमदाकार्यालय व्यय के अन्तर्गत जल एवं विद्युत, टेलीफोन के अलावा अन्य दावों का चुकारा निदेशालय की स्वीकृति/अधिकृति के पश्चात ही करेंगे।
4. अधीनस्थ माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा कार्यालय व्यय मद में निदेशालय की स्वीकृति/अधिकृति अनुसार व्यय किया जाए।
5. उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य विस्तृत मदों यथा अनुरक्षण एवं मरम्मतें, छात्रवृत्ति, खेलकूद, मैस व्यवस्था, संविदा व्यय, वृत्तिक एवं विशिष्ट सेवाएँ, वाहन किराया, डिक्रीटल, संचार व्यय, पत्र-पत्रिकाओं पर व्यय आदि में निदेशालय द्वारा जारी स्वीकृति अधिकृति के आधार पर व्यय किया जाना है।

उपर्युक्त बिन्दुओं की पालना सुनिश्चित की जाए।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

प्रभाग–4, शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रभाग, राजस्थान, अजमेर

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

(May, 2022)

S.No.	Class	Course Link	QR Code	S.No.	Class	Course Link	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/36G5tbA		2.	Class VII	https://bit.ly/3KcUx34	
3.	Class II	https://bit.ly/3k9N4Hw		4.	Class VIII	https://bit.ly/3k5FhKP	
5.	Class III	https://bit.ly/3EFVUpQ		6.	Class IX	https://bit.ly/3xMUKr9	
7.	Class IV	https://bit.ly/3rNYTXY		8.	Class X	https://bit.ly/37yQP6J	
9.	Class V	https://bit.ly/37E72r6		10.	Class XI	https://bit.ly/3MtoLQI	
11.	Class VI	https://bit.ly/3rNixDD		12.	Class XII	https://bit.ly/3MoYcwb	

Rajasthan Education Department

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। –वरिष्ठ संपादक

सौहार्द का पर्व : ईद-उल-फितर

❒ मौहम्मद अकरम सम्मा

अल्लाह के रसुल हजरत सलल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''अल्लाह तुम्हारी शक्लों व धन को नही देखता बल्कि वह तुम्हारे दिलों व तुम्हारे कर्मो को देखता है''

विश्व के सभी धर्मों में उपवास रखे जाते हैं इनको रखने के तरीके जरूर अलग है पर मंजिल एक है अपने भीतर ईश्वर की खोज सभी के आध्यात्मिक, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लाभ है। उपवास से मन में शांति मिलती है। इंसान अनुशासन में रहना सीखता है उसमें त्याग, सेवा और समर्पण की भावना जागती है और व्यक्ति असत्य, घृणा और लालच से दूर रहता है।

इस्लामी कैलेंडर का 9 वाँ माह रमजान का होता है जिनका अरबी शब्द रमादान है। इस माह को इबादत का माह भी कहा जाता है और इसमें खुदा की रहमतों का दरिया बहता है। रमजान के साथ ही रोजे शुरू होते हैं। रोजा इस्लाम के पॉच मूलभूत सिद्धांतों (फाइव पिलर) में से एक है जो सभी मुसलमानों पर फर्ज (जरूरी) है पहला कलमा (अल्लाह को एक मानना व उसके नबी (पेगम्बर) के बताए रास्ते पर चलना) दूसरा नमाज, तीसरा जकात (दान देना), चौथा रोजा (उपवास) और पाँचवा हज करना।

रमजान के पाक महिने में हर मुस्लिम अपनी कुल सम्पति का ढाई प्रतिशत हिस्से के बराबर भाग या रकम निकाल कर गरीबों व जरूरतमंदों को बाँटता है जिससे समाज व जरूरतमंदों के प्रति जिम्मेवारी का अहसास हो सके। इस तरह देखा जाए तो रोजे/ईद की वजह से समाज का प्रत्येक वर्ग इस कार्य में एक दूसरे से जुड़ा हुआ रहता है। कुरान के अनुसार हजरत पैगम्बर ने फरमाया कि जब रमजान के पाक महीने में रोजे और तमाम काम पूरा कर लिया जाता है तो उसके बाद खुदा इनाम के तौर पर ईदुल फितर से नवाजता है।

इस्लाम में रोजा रखने की परंपरा दूसरी हिजरी में शुरू हुई है, कुरान की दूसरी आयत सूरह अल बकरा में साफ तौर पर कहा गया है कि

रोजा तुम पर उसी तरह से फर्ज किया जाता है कैसे तुमसे पहले की उम्मत पर फर्ज था।

रोजा हर बालिग मुसलमान पर फर्ज है सिर्फ बीमार या फिर जिसकी बीमारी बढ़ने का डर हो उसे रोजा रखने की छूट है। इसके अलावा गर्भवती महिला-बहुत अधिक वृद्ध को इसमें छूट रहती है।

रोजे में सूर्योदय से सूर्यास्त तक 30 दिन के लिए व्यक्ति (अन्न व जल का त्याग करने के साथ घृणा, लालसा, असत्य से दूर रहकर अपने आपको खुदा की इबादत में लीन करता है। व्यक्ति भूख व प्यास के महत्त्व को समझकर गरीबों व अपाहिजों की दिल खोलकर मदद करता है। इस्लाम धर्म में जकात और रमजान माह पर दिए जाने वाले फितरा का खास महत्त्व है। फितरा के रूप में पौने तीन किलो अनाज प्रति व्यक्ति के हिसाब से जरूरतमंद एवं फकीरों में दान किया जाता है। इसे ईद की नमाज पढ़ने से पहले कर देना चाहिए।

रोजे का आध्यात्मिकता के साथ स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बहुत अधिक महत्त्व है रोजा के दौरान शरीर ऊर्जा के लिए लीवर में जमा ब्लड शुगर का इस्तेमाल करता है और इस कड़ी में ऊर्जा का अगला स्रोत वसा होता है। जब शरीर से वसा कम होने लगती है तो कोलेस्ट्रॉल की मात्रा घटने लग जाती है बहुत ज्यादा कैलोरी खाने से शरीर की संक्रमण से लड़ने की क्षमता कमजोर हो जाती है, भूख के दौरान शरीर उन कोशिकाओं को नष्ट करता है जो कैंसर कारक होती है।

रोजा में हमें क्या और कब खाना है? इस पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है इससे व्यक्ति अनुशासन में रहना सीखता है और मन को शांति मिलती है।

रमजान माह में ईशा की नमाज पढ़ने के बाद से तरावीह की नमाज होती है जो 20 रकात की होती है। इस माह की 27 वीं रात शब-ए-कद्र है। शब ए कद्र की रात बहुत ही महत्त्वपूर्ण रात होती है। मस्जिदों में जहाँ जहाँ तरावीह की नमाज अदा की गई हो वहाँ कुरान हाफिजों (जिनको कुरान कंठस्थ हो) को सम्मानित किया जाता है और इमाम साहब को भी इनाम-ओ-इकराम से नवाजा जाता है। शबे कद्र यानी 27वीं रात को पूरी रात भर मस्जिदों और घरों में अल्लाह की इबादत करने के बाद मुस्लिम अपने रिश्तेदारों अजीजो जिनका इंतकाल (मृत्यु) हो चुका है, के लिए सुबह-सुबह फातिहा पढ़ते है। शबे कद्र में पूरी रात मस्जिद में ईबादत की जाती है इस मुकद्दस रात में ही कुरआन मुकम्मल हुआ।

रमजान माह के 30 रोजा पूरा होने के बाद अगले दिन ईद-उल-फितर मनाई जाती है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'खुशी'। ईद के दिन की एक विशेषता यह भी है कि शहर के लोग एक विशेष नमाज अदा करते हैं जिसके लिए वे एक स्थान पर एकत्रित होते है इसे ईदगाह कहा जाता है। नमाज के बाद अमन शांति व देश की प्रगति के लिए दुआएँ माँगी जाती है तथा सभी एक दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई देते हैं गले शिकवे दूर करते हैं।

ना हिंदू का ना मुसलमान का यह तो त्योहार है इंसान से इंसान का, खुशियों से खुशियों का

वरिष्ठ सहायक
कार्यालय उपनिदेशक
समाज शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो :9571692786

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

English for Communication at School

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

Classroom communication in language teaching plays an important role and is necessary for successful teaching. A teacher should be proficient in all four modes of communication – listening, speaking, reading and writing – and should know how to utilise this proficiency effectively in a school environment. It can be used to expose everyday language before the learners. The following expressions can be used according to the needs to control the class and to get the students focused before beginning any session-

Getting the Students Focused

- Please come in.
- Come here, Open the window.
- Take your seats, please.
- Settle down
- Please be quiet!
- No noise, please.
- Stop chatting! Stop speaking!
- Stop whispering, Hemlata.
- Don't shout, Arun.
- Use the equipments properly.
- Share your ideas with the whole class.
- Be quiet when the teacher is talking.
- Keep your table tidy.
- Help keep the classroom tidy and clean.
- Listen to me.
- Stay in your seats.
- Cooperate with the monitor.
- Don't come out of your place/seat.
- Roaming in classroom is forbidden.
- Be in time.
- Accelerate your writing speed.
- Line up neatly and quietly.
- We won't start until everyone is quiet.
- Ok, that's enough.
- No vandalism is allowed in the classroom.
- Don't ever try to distract the class during lesson.
- Wait for your turn.
- No sleeping/yawning in the classroom.
- Don't hurt others.
- Listen to the instructions first and then follow.
- No name calling.
- Don't interrupt in-between and value other's view.
- Listen Please!
- Calm down!
- Sit properly/still.
- Respect and listen to your classmates.
- Concentrate on your own work.
- Don't try to peep into others notebook during tests.
- Be prepared for the class tests.
- Go out.
- Go back to your place/seat.
- Stand by your desks only.
- Show me your notebook/pencil/work/assignment/file etc.
- Don't peep out of the window.
- Do try to hurry up.
- If you don't be quiet, you can…
- Be quite and sit down.
- Just sit down and be quiet.
- Just put that book away.
- Just pass me that book, Avdhesh.
- Just turn the lights and fans off.
- Lower down your voices.

Expressions showing annoyance

- I am very upset by your performance in the class test/unit test/exam…
- I am livid right now.
- Don't make me lose my temper by asking pity things over and over again.
- You just can't crash other child's notebook. See all her work disappeared.
- Just take care of these silly mistakes. I may go off on you if same repeated.
- Stop arguing.
- Both of you come here. I saw you having a heated argument in the ground/hall/lunch break. What's the matter?
- I am tired of your excuses.
- I am fed up with you/your excuses…

Greetings in the Classroom

- Good morning, class.
- Good afternoon, everybody/boys and girls/children.
- Hello, everyone.
- Hello there, Diksha.
- What a lovely/rainy day/pleasant morning!
- How nice to see you all back.

How are you?

- How are you today, Surender?
- How are you getting on?
- How are you doing?
- How's life?
- How're things with you, Mahesh?
- Are you feeling better today, Deepak?
- Hope you've recovered from your cold, Chitra
- I hope you are all feeling well.
- I hope you are all feeling fit today.
- I hope you all had a nice/good weekend/holiday.
- How about you, Akharam? What did you do during . . .

Introductions

- Let me introduce myself.
- My name is Mr/Mrs/Miss Monika/ Chandan and I'm your new English teacher.
- I'll be teaching you English this year.
- I'm a teacher trainee and I'll be teaching you today. I've got ten lessons with you.
- I want to welcome Maneesh to our class.
- Welcome back to school/class after your holidays. Hope you had a great /enjoyable vacations.
- Welcome back every one!
- Welcome to the new session. It's going to be a fantastic year full of learning and growing together.
- Happy first day of the school to everyone after a long/short break.
- I am so happy to see you back in

Rajasthan Education Department

the school/classes after lockdown/break.
- It's a great opportunity to be your teacher here in MGGS. I am so excited/ inspired by you.

Transition to work
- It's time to start now.
- Let's start our (English) lesson now, shall we?
- Is everybody ready to start?
- I hope you are all ready for your English lesson.
- I think we can start now.
- Let's stop now and start today's topic.
- Any questions?
- Collect your notebooks from my table.
- Are your desks tidy?
- Don't forget to bring your map/colours next time.
- Let's check the answers we did in last class.
- We haven't heard from you yet.
- Have you ever heard about…
- You are almost to the answer…
- I didn't get it. Can you reframe your answer/rearrange your thought and say again.
- What makes you think that?
- I'm waiting to start.
- It is a test. You have 20 minutes to complete it.
- I'm waiting for you to be quiet.
- We won't start until everyone is quiet.
- Stop talking now so that we can start.
- Settle down now so that we can start.
- Put your things away.
- Pay attention, everybody.
- Listen to this tape/audio…
- Repeat after me.
- Again, Please…
- You have five minutes to finish this.
- Today we will learn …
- Now we can get down to work.
- Are you ready?
- Who's next?
- Take out your stationery/colours/ pen/pencil…
- You need fevicol/compass/ruler for this.
- Hold your compass/pen/ruler like this.
- I am repeating one more time, please.
- Are you following?
- Ok so far?
- Say it again, please.
- I don't get it.
- Is this ok?
- Are you with me?
- Do you understand?
- Have you understood?
- What did you say?
- Pardon, please.

Taking attendance
- Are you ready for attendance.
- Attendance, please.
- Attend your roll call.
- Ok, let me take attendance first and then we'll start lesson.
- It's time for roll call. Pay attention, please.
- Let's have a roll call first/now.
- I want you to pay attention to your roll call.
- Students, at the time of roll call, answer up to your name/roll numbers.
- Respond to your roll call else you will be marked absent for today.
- Students, come to class on time and don't keep away during the roll call.
- Why is class strength so thin today?
- Her attendance is already short. I am afraid if she could appear in exam.
- Who isn't here today?
- Who is absent today?
- I am calling out your names to mark your attendance in the register.
- Please, pay attention.
- Girls/boys/students if you skip your name you will be marked absent so please be attentive.
- Why were you absent for last two days, Chhagan?
- What's the matter with Samridhi today?
- What's wrong with Parvez today?
- Who is missing?
- Who isn't here?
- Has anybody seen Vinod today?
- What's wrong with Ghanshyam ?
- Has anybody any idea where Bhawani is today?
- Who was absent last time?
- Who wasn't here on Monday?
- Who missed last Wednesday's lesson?
- You weren't at/in the last lesson, Pawan.
- Where were you in class?
- I am really displeased with your performance. I was expecting better.
- Why are you late?

Late comers
- What happened? Why are you late?
- Where have you been?
- Did you miss your bus?
- We started fifteen minutes ago.
- What have you been doing?
- Don't let it happen again.
- Please reach school in time.
- You should do something to resolve your snooze issue.
- Did you over sleep/miss your bus/van?

Appropriate replies
- I don't know/I've no idea.
- I haven't seen him today.
- He wasn't here yesterday, either.
- He's ill/not well.
- He wasn't feeling well, so he went home.
- He's gone to the doctor/dentist.
- He's gone for an X-ray/a medical examination/an interview.
- He has probably missed the bus.
- He has got the flu/a cold/a temperature.
- He is in bed with the flu/a cold/a temperature.
- I've been sick.
- It was my birthday/parents birthday/celebration at home yesterday so I overslept in the morning.
- My car didn't start for an hour.
- I witnessed an accident and helped the injured.
- I stuck in traffic.

HoD-UG (DEO)
Govt. IASE, Bikaner
Mo. : 9460305331

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

संघर्ष : सफलता का सोपान

❐ अनिता चौधरी

एक आम सा कथन है कि संघर्ष ही जीवन है। जीवन में कदम-कदम पर संघर्ष है... प्रकृति के साथ, स्वयं के साथ, परिस्थितियों के साथ! जो इन संघर्षों से जूझते हैं; वे सफल हो जाते हैं और जो व्यक्ति इन संघर्षों से बचते हैं, डरते हैं। वे हार जाते हैं और जीवन की यात्रा में पिछड़ जाते हैं।

संघर्ष क्या है?: सुनने में यह एक छोटा सा शब्द है। वास्तव में संघर्ष वह अदृश्य शक्ति है जो व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। गहनता से विचार किया जाए तो संघर्ष एक ऐसी क्रिया है जहाँ कितनी भी निराशा आ जाए परंतु कुछ ना कुछ संभावना अवश्य विद्यमान रहती है अर्थात् कुछ ना कुछ हल तो अवश्य ही निकल कर आता है। यदि किसी समस्या के समाधान हेतु एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा अवश्य खुल जाता है। वास्तव में संघर्ष, जीवन जीने का दूसरा नाम है और यदि जीवन जीना है तो संघर्ष करना ही पड़ेगा। सर्वविदित है कि मनुष्य सभी जीवों में श्रेष्ठतम प्राणी है और अपने जीवन को अधिक श्रेष्ठ बनाने के लिए वह कदम-कदम पर संघर्ष करता है। आज का संघर्ष ही हमारे कल को सुरक्षित करता है। संघर्ष न केवल हमारी परीक्षा लेता है वरन् मुसीबतों से लड़ने के लिए हमें मजबूत भी बनाता है। संघर्ष और जीवन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

संघर्ष और सफलता: जीवन की हर चुनौती और समस्या का समाधान है संघर्ष करना। संघर्ष और सफलता समानान्तर रूप से चलते हैं। कहने को तो चुनौतियाँ और समस्याएँ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आती है और चुनौतियाँ केवल ऊँचाइयों पर चढ़ने में ही नहीं आती वरन् व्यक्ति द्वारा समाज में, जीवन में अपना स्थान बनाए रखने में भी चुनौतियाँ आती है। हम जानते हैं कि जिस तरह हर काली रात के बाद नवीन ऊर्जा से भरपूर सुहानी सुबह होती है तथा जिस प्रकार गर्म हवाओं के चलने से ही पानी वाष्प में बदलता है और यही वाष्प भविष्य में जीवनदायिनी वर्षा के रूप में पुन: पृथ्वी पर बरसती है। उसी प्रकार जीवन में आए दु:ख, चिंता, तनाव व समस्याएँ व्यक्ति को सक्रिय और कर्मशील रखती है। विपत्तियों में संघर्ष करके ही व्यक्ति तप कर सोने जैसे खरे व्यक्तित्व में परिवर्तित हो जाता है। जीवन में व्यक्ति कहाँ तक सफल होगा, यह उसके प्रयासों और संघर्षों पर निर्भर करता है। संघर्ष जितना बड़ा होगा, उसकी सफलता भी उतनी ही बड़ी होगी और व्यक्ति के व्यक्तित्व के निखार में भी उतनी ही वृद्धि होगी। संघर्ष के संदर्भ में प्रसिद्ध कवि श्री जगदीश गुप्त जी की काव्य पंक्तियाँ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है-

संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए,
हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ,
ज्यों वृन्त से झरकर कुसुम।।

अर्थात् इस संसार में कर्म करने वाले और संघर्ष करने वाले व्यक्ति का जीवन ही सार्थक है आलसी व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है और वह धरती पर बोझ मात्र है।

अपेक्षित मानसिक साधन : संघर्ष करने के लिए जीवन में आंतरिक इच्छाशक्ति, स्वयं पर विश्वास और धैर्य अत्यंत आवश्यक है। विपरीत परिस्थितियों में भी अपना आत्मविश्वास बनाए रखना, परिस्थितियों से संघर्ष करना और धैर्य से परिणाम की प्रतीक्षा करना। यही मानसिक साधन व्यक्ति को जीवन में विजय और सफलता दिलाते हैं। संघर्ष की राह में अनेक कठिनाइयाँ आती है परंतु इन संघर्षों से हमारे भीतर आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है। आज नहीं तो कल संघर्षों का सुफल अवश्य प्राप्त होता है। जीवन में कुछ बनने के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है और अपने जीवन में ऊपर उठने के लिए प्रयास तो बहुत व्यक्ति करते हैं पर सफलता उसी को मिलती है जिसके प्रयास में संघर्ष का जुनून हो। यदि मनुष्य जीवन में संघर्ष करने की इच्छा शक्ति रखता है तो जीवन के हर मोड़ पर उसकी विजय निश्चित है।

प्रसिद्ध कवि श्री हरिवंशराय बच्चन जी ने जीवन-संघर्ष पर क्या खूब पंक्तियाँ कही हैं-

जब नाव जल में छोड़ दी,
तूफानों में ही मोड़ दी,
दे दी चुनौती सिंधु को,
तो पार क्या, मझधार क्या !

आशावादी रहकर समस्या-समाधान पर ध्यान केन्द्रित करना : हमें सदैव समाधान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए न कि समस्या पर। यदि संघर्ष करने से पहले ही हम मन में नकारात्मक विचार ले आएँ यथा मैं इसे नहीं कर पाऊँगा या यह मुझसे नहीं होगा तो निश्चित ही वह व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाएगा। परंतु यदि वह अपनी सोच को सकारात्मक रखते हुए, धैर्य से, समस्या को अच्छी तरह से समझ कर, उसके समाधान पर फोकस करे तो अप्रत्याशित सफलता भी प्राप्त कर सकता है। अनेक बार हमें अपनी वास्तविक अंदरूनी शक्तियों का अहसास ही नहीं होता परंतु समस्याएँ आने पर जब हम संघर्ष करते हैं तब हमें अपनी अंदरूनी शक्ति, ताकत और बल का अहसास होता है। आशावादी रहकर संघर्ष करने पर जीवन में आगे बढ़ने का हौसला और आत्मविश्वास मिलता है।

वास्तव में संघर्ष ही हमें जीवन जीना सिखाता है और जीने के लिए हमें तैयार करता है और जीवन जीने का वास्तविक आनंद भी संघर्ष से ही प्राप्त होता है। पूर्व राष्ट्रपति व महान् वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम जी का उदाहरण देना बहुत सार्थक रहेगा जिन्होंने गरीबी से उठकर जीवन संघर्ष करके अपनी परिस्थितियों में सुधार किया और महान् वैज्ञानिक और राष्ट्रपति बने। डॉ. अब्दुल कलाम की तरह बहुत से लोगों के पास अत्यंत सीमित संसाधन होते हैं परंतु फिर भी वे बड़ी सफलता प्राप्त करते हैं क्योंकि वे संघर्ष से कभी पीछे नहीं हटते एवं किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य का त्याग नहीं करते और आशावादी रहकर प्रतिकूल परिस्थितियों से ऊपर उठने का प्रयास करते रहते हैं।

सदैव सफलता के मार्ग में बाधक बन रही नकारात्मक बातों को नजरअंदाज करते हुए सिर्फ और सिर्फ अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखें और निरंतर प्रयासरत रहकर संघर्ष करें तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

सारांशत: आज के विद्यार्थियों और युवाओं को यह बात अच्छी तरह से समझनी होगी कि प्रतिकूल परिस्थितियों में हमें संघर्ष से नहीं घबराना चाहिए वरन् दृढ़ता से जीवन में आई मुसीबतों से संघर्ष करना चाहिए। क्योंकि संघर्ष ही जीवन को निखारता, संवारता और तराशता है। संघर्ष के पश्चात् ही जीवन में आशारूपी नए सूर्य का उदय होता है।

प्राध्यापक,
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक
विद्यालय राजगढ़, चूरू (राज.)
मो. 7073047980

Rajasthan Education Department

खिलौना आधारित शिक्षण एवं खिलौना क्षेत्र

❒ विनीत कुमार लोढ़ा

शैक्षिक खिलौना खेल की वस्तुएँ है जिन्हें आमतौर पर बच्चों के लिए डिजाइन किया जाता है। जिनसे सीखने को प्रोत्साहित करने की उम्मीद की जाती है। ये खिलौने अक्सर एक शैक्षिक उद्देश्य को पूरा करने का इरादा रखते हैं। बच्चों के जीवन में खिलौने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक खिलौना जो उनके हर वक्त का साथी, सहानुभूति दिखाने वाला और एक महान शिक्षण उपकरण है। ये बच्चे को कई तरह से प्रभावित करते हैं और बच्चे को जीवन की सरल अवधारणाओं को समझने में मदद करते हैं। यह कहना गलत न होगा कि खिलौना एक ऐसा उपकरण है जो बच्चे को वास्तविक आत्म की खोज करने, नए कौशल सीखने और आगे के जीवन के लिए तैयार करने में मदद करता है। यह एक बच्चे के आत्म सम्मान और उसके व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है तथा क्षमताओं को सुधारने में बालक की मदद करता है। खिलौना आधारित अधिगम बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। खिलौना आधारित शिक्षण एक ऐसा माध्यम है जिसकी बुनियादी एवं प्रारंभिक स्तर के लिए सर्वाधिक अनुशंसा की जाती है। खिलौना आधारित शिक्षण 2-3 आयु वर्ग में प्रारंभ होता है। बुनियादी स्तर (3-8 वर्ष) तथा प्रारंभिक स्तर (8-11 वर्ष) और 11 वर्ष से बड़े बच्चों के लिए भी खिलौना शिक्षण का माध्यम होना चाहिए। बच्चों के लिए कोई भी चीज खिलौना हो सकती है जैसे कि कागज का टुकड़ा या कपड़ा। एक बच्चे को कागज के टुकड़े को फूँक मारना एवं बड़ी उत्सुकता से उसे उड़ता हुआ देखना अच्छा लगता है। एक शैक्षिक खिलौने से अपेक्षा होती है कि उससे कुछ सीखा जा सकता है और इसे एक विशेष प्रत्यय के बारे में जानने, सीखने या एक विशेष कौशल विकसित करने में मदद करनी चाहिए। उदाहरण के लिए नैस्टिंग डॉल्स बड़ी सुंदरता से कलात्मक रंगों से रंगी हुई लकड़ी की गुड़ियाएं होती है। रोचक और आकर्षक प्राकृतिक रंगों से रंगी ये गुड़ियाएँ लकड़ी से बनाई जाती है जो 5-6 गुड़ियाओं का एक सेट होता है। ये गुड़ियाएँ आकार में क्रमशः छोटी से बड़ी होती है। इस शैक्षिक खिलौने का प्रयोग गणितीय प्रत्यय छोटा-बड़ा, गिनती, कम स्थानिक समझ आदि सीखने को सुदृढ़ करने के लिए का निर्माण किया जा सकता है।

स्वदेशी खिलौने- खिलौना आधारित शिक्षण विधि का प्रयोग करते समय हमें स्वदेशी खिलौनों को बढ़ावा देना चाहिए ताकि कम लागत और सरलता से बच्चों की उन तक पहुँच हो सके। शिक्षण हेतु स्वदेशी खिलौनों का चयन करते समय हमें ध्यान में रखना है कि वह खिलौना भारतीय संस्कृति और क्षेत्र विशेष की संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए। साथ ही वह खिलौना बच्चे की आयु तथा सुरक्षा के अनुरूप हो। स्वदेशी खिलौने कम लागत के होते हैं क्योंकि ये सरलता से उपलब्ध स्थानीय सामग्री से बनाए जाते हैं तथा यह सामग्री पर्यावरण अनुकूल भी होती है जैसे कागज की कतरन, सिलाई इकाइयों से निकला बचा हुआ कपड़ा, कतरनों से बनी गुड़िया, कठपुतली, बांस इत्यादि सामग्री जो पर्यावरण अनुकूल होती है तथा पर्यावरण प्रदूषण से भी बचाती है। सामान्य तौर पर स्वदेशी खिलौने बनाने के लिए बांस, अखबार, व्यर्थ सामग्री, पुरानी बोतल, खाली माचिस, तिलियाँ, कंचे, शंख इत्यादि सामग्री का प्रयोग किया जाता है। कई बार स्थानीय कारीगर बीज, नारियल के खोल, सुपारी, वृक्ष के पत्ते इत्यादि का प्रयोग करते हैं; चूँकि इनमें उनकी परिचित आकृतियाँ ही दर्शाई जाती है जो उनकी संस्कृति और स्थानीय परिवेश से जुड़ी होती है। जिससे बच्चे जल्दी ही उनसे जुड़ाव अनुभव करने लगते हैं। इन खिलौनों से बालकों को रंग, बनावट, आकार, आकृति आदि के बारे में सीखने में मदद मिलती है। इन स्वदेशी खिलौने से बच्चों का न केवल अपनी संस्कृति से जुड़ाव होता है बल्कि ये मनोप्रेरणा और अन्य जीवन कौशल विकसित करने में मदद करते हैं। कक्षाओं में भारतीय पारंपरिक खिलौने और खेल का प्रयोग स्वदेशी उत्पादों की वृद्धि एवं उपयोगिता में योगदान करता है। स्वदेशी खिलौनों के प्रयोग से बालक अपनी अस्मिता पर गर्व करना प्रारंभ कर देते हैं।

खिलौना क्षेत्र- खिलौना आधारित अधिगम के लिए विद्यालय में एक खिलौना संग्रहालय या खिलौना क्षेत्र बना सकते हैं जहाँ बच्चे 'डू यॉर सेल्फ' (स्वयं करके सीखो) विधि का उपयोग करके शैक्षिक खिलौने बना सकते हैं। खिलौना क्षेत्र में खुली सामग्री, कम लागत सामग्री, परिवेशीय सामग्री रखनी चाहिए। इस सामग्री का उपयोग कर बालक अपने मनपसंद या अधिगम अनुकूल खिलौने बना सकते हैं। यहाँ ध्यान रखने वाली बात यह है कि यह सारी सामग्री हम एक साथ नहीं रख सकते हैं इसलिए बालकों की आवश्यकता एवं अधिगम बिन्दुओं को ध्यान में रखकर बारी-बारी से इस सामग्री को रखने की योजना बना सकते हैं। इस क्षेत्र के नामकरण के लिए तख्ती लगाकर उसके ऊपर लिख सकते हैं। 'मेरा खिलौना क्षेत्र' या 'खिलौना कक्ष'।

इस कक्ष में खिलौने तथा सामग्री को खुली दराज, टेबल अथवा ताक में व्यवस्थित करें जो आसानी से बच्चों की पहुँच में हो। सामग्री को प्रदर्शित करने के लिए बाँस की टोकरी, खाली कार्टून या अन्य डिब्बों का उपयोग कर सकते हैं। डिब्बों और दराज को खिलौने तथा सामग्री के चित्र, नाम के लेबल लगा कर इंगित करना चाहिए ताकि बच्चे इन्हें आसानी से उठा सके तथा उपयोग के बाद वापस यथास्थान रख सके। बैठक व्यवस्था के लिए इस कक्ष में दरी पट्टी, कालीन रखना चाहिए। जिस पर बैठकर बालक के छोटे-छोटे समूह में अपना सृजन कार्य कर सके। खिलौना-कक्ष की दीवारों की सजावट बालकों के बनाए खिलौने, काड़ी, स्केच को लटका कर सकते हैं। यहाँ ध्यान रखने वाली बात यह है कि ऐसी सामग्री रखनी है जिसका उपयोग कर बालक विभिन्न शैक्षिक खिलौने बना सके।

शिक्षक की भूमिका- शिक्षक की खिलौना-कक्ष में भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है। इसके लिए शिक्षक परम्परागत लीक से हटकर सोचे और खिलौना क्षेत्र का नियोजन करे। इसे खुली सामग्री से सुव्यवस्थित करे और बच्चों को स्वयं खिलौना बनाने की आनंद लेते हुए देखे। जहाँ बालकों को मदद की जरूरत है वहाँ शिक्षक मदद अवश्य करें। साथ ही शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि खेल क्षेत्र की प्रत्येक वस्तु खिलौना सृजन के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त हो। शिक्षक बच्चों द्वारा सृजन किए हुए खिलौनों की आवश्यक कमियों को सुधार कर बालकों का मार्गदर्शन करे तथा संबंधित अधिगम बिन्दु को बालकों द्वारा बनाए हुए खिलौनों की मदद से स्पष्ट करे। समय-समय पर शिक्षक बालकों के प्रयास की सराहना कर बालकों का उत्साहवर्धन करता रहे। खिलौनों की तरह रंग भी बच्चों को बहुत पंसद है, खिलौने जब भी बनाएँ उन्हें विभिन्न रंगों से सजाएँ। हो सके तो बच्चों से स्वयं रंग करवाएँ। समूह बनाकर या व्यक्तिगत रूप से खिलौना प्रतियोगिता करवा कर संग्रह किया जा सकता है। शिक्षक भी शिक्षण के दौरान उपयोग करें तो खिलौना शिक्षण आनंददायी होगा।

अध्यापक (लेवल-1)
राजकीय माध्यमिक विद्यालय हाजीवास, पं. स.
कोटड़ी, भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9571800936

Rajasthan Education Department

आनंददायी और ज्ञानवर्धक ग्रीष्मावकाश

❒ मनोज कुमार पारीक

'गर्मी की छुटिट्याँ' ये तीन शब्द अपने आप में जादुई शक्ति रखते हैं। इन शब्दों के सुनने मात्र से ही बच्चों की रगों में रक्त का संचार बढ़ जाता है। प्रत्येक बच्चे की चाहे वह किसी भी कक्षा स्तर का हो; किसी भी माध्यम के स्कूल में पढ़ने वाला हो या किसी भी क्षेत्र का निवासी हो उसकी इन गर्मी की छुटिट्यों के बारे में विशेष योजना सपने और कल्पनाएँ होती है। पूरे वर्ष भर की पढ़ाई की थकान और बाद में परीक्षा के तनाव को दूर करने में यह छुटिट्याँ नौनिहालों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है लेकिन आज के इस युग में जब मोबाइल हर घर में अहम भूमिका रखने लगा है और इंटरनेट के कारण सही गलत प्रत्येक प्रकार की सामग्री तक बच्चों की पहुँच बहुत आसान हो गई है तथा मारकाट और हिंसा के दृश्यों से भरपूर अनेक वर्चुअल गेम बच्चों की पहुँच में आ गए हैं। इस स्थिति में माता-पिता की यह स्वाभाविक चिंता रहती है कि इन छुटिट्यों में बच्चों को इस मोबाइल के दुष्प्रभावों से कैसे बचाएँ। इसलिए प्रत्येक अभिभावक और शिक्षक के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह इन छुटिट्यों के लिए कुछ इस तरह की विशेष योजना तैयार करें ताकि बच्चा इन छुटिट्यों का पूर्ण आनंद उठाते हुए कुछ ऐसा सीखे जो उसके जीवन में कुछ सकारात्मक बदलाव लाए और उसे भावी जीवन के लिए तैयार करें। अच्छी बात यह है कि बच्चों को आनंद के साथ कुछ नया सिखाने के लिए बहुत महंगे उपकरण और बहुत महंगी यात्राओं की आवश्यकता नहीं है बल्कि अभिभावक सामर्थ्य के अनुसार इस प्रकार की गतिविधियों का चुनाव कर सकते हैं जिनसे बच्चा अपनी छुटिट्यों को यादगार और उपयोगी बना सकता है-

1. ड्राइंग व पेंटिंग- शायद ही ऐसा कोई बच्चा हो जिसे चित्र बनाना और अपनी कल्पना के अनुरूप चित्रों में रंग भरना अच्छा नहीं लगता हो; अभिभावक अपने बच्चों को और शिक्षक अपने विद्यार्थियों को आसानी से इस काम में लगा सकते हैं। बच्चों को पेड़-पौधों, महापुरुषों या अन्य प्रकार के रुचिकर टॉपिक पर चित्र बनाने हेतु कहा जा सकता है साथ ही उसे यह भी कहा जा सकता है कि वह जो भी चित्र बनाएँ उसके बारे में सामान्य जानकारी हासिल करें। इससे बच्चे न केवल एक नई स्किल सीखेंगे बल्कि उनके ज्ञान का स्तर बढ़ेगा।

2. पब्लिक स्पीकिंग- बच्चों को उनकी रुचि के टॉपिक देकर उन पर हिंदी, अंग्रेजी या अन्य स्थानीय भाषा में बोलने को कहा जा सकता है। जब बच्चा बोले तो आप अपने मोबाइल से उसका वीडियो बनाकर उसे दिखा सकते हैं जिससे वह अपनी इस स्किल में और सुधार कर सकता है तथा उत्साहवर्धन के लिए आप इन वीडियो को यूट्यूब पर डाल सकते हैं तथा परिवार और मित्रों के साथ शेयर कर सकते हैं। निश्चित रूप से इस गतिविधि से बच्चों की झिझक खुलेगी और उनमें अभिव्यक्ति कौशल बढ़ेगा।

3. विज्ञान के सामान्य प्रयोग- यह एक सामान्य तथ्य है कि बच्चों को विज्ञान पढ़ना चाहे अच्छा लगे या ना लगे लेकिन उन्हें नए-नए प्रयोग करना अच्छा लगता है। हम बच्चों के इस स्वाभाविक गुण का सहारा लेकर उनमें विज्ञान के प्रति रुचि जागृत कर सकते हैं। चुंबक, लिटमस पेपर, दिशा सूचक यंत्र जैसे सामान्य से उपकरणों का उपयोग करके हम बच्चों की विज्ञान में रुचि जागृत कर सकते हैं और विज्ञान की सामान्य अवधारणाओं को स्पष्ट कर सकते हैं।

4. नृत्य और संगीत- प्रत्येक बच्चे में इन कलाओं के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है। छुटिट्यों का उपयोग हम इन कलाओं के विकास में कर सकते हैं। इन कलाओं के माध्यम से बच्चे की झिझक दूर होती है साथ ही इनके माध्यम से बच्चे का संवेगात्मक विकास होता है जो जीवन पर्यंत उसके साथ रहता है और उसके काम आता है।

5. खेल और व्यायाम- आज मोबाइल के इस युग में बच्चे सिर्फ वर्चुअल खेलों तक ही सीमित हो गए हैं। इससे न केवल उनका शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध हुआ है वरन उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर इसका नकारात्मक असर भी पड़ा है। इसलिए इन छुटिट्यों में अपने बच्चों को खूब खेलने दें और उनके लिए इस प्रकार के अवसर पैदा करें कि बच्चों का खेल और व्यायाम के प्रति रुझान बढ़े ताकि वे मोबाइल से होने वाले दुष्प्रभावों से बच सके।

6. गार्डनिंग- छोटे बच्चों का जीवों और पेड़ पौधों के प्रति स्वाभाविक झुकाव होता है। छुटिट्यों में बच्चों को आसपास के पार्क में घुमाने के लिए ले जाएं। अपने घर में यदि जगह है तो वहाँ छोटा सा पार्क विकसित करें। यदि जगह नहीं है तो गमलों में पौधे लगाएँ और बच्चों को उनकी देखभाल की जिम्मेदारी दें। पौधे लगाने के लिए आप घर में पड़े प्लास्टिक के खाली कंटेनर, टूटी हुई बाल्टियाँ, टब और कोल्ड ड्रिंक की खाली बोतलों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

7. स्वच्छता- इन छुटिट्यों का उपयोग हम बच्चे को साफ-सफाई का महत्त्व बताने और उससे स्वच्छता से जोड़ने में कर सकते हैं। हम बच्चे को घर के किसी एक कमरे को साफ-सुथरा रखने और उसे सजाने की जिम्मेदारी दे सकते हैं। इससे न केवल वह जिम्मेदार बनेगा बल्कि स्वच्छता के महत्त्व को समझेगा और घर को साफ-सुथरा रखने में अपना योगदान दे सकेगा। यह आदत उसे जीवन भर स्वच्छता से जोड़े रखेगी।

8. कुकिंग- इन छुटिट्यों में अपने बच्चों को कुकिंग से अवश्य जोड़े। चाय बनाना, दूध गर्म करना, पोहा बनाना, टोस्ट बनाना, चावल बनाना और यहाँ तक कि सब्जी और रोटी बनाना भी बच्चों को सिखाया जा सकता है। बच्चों को अपने भावी जीवन में पढ़ाई के लिए या जॉब के लिए अकेले रहना पड़ सकता है। यदि वह इस प्रकार की चीजों को बनाना सीखा हुआ होगा तो वह आत्मनिर्भर रहेगा और उसे बाहर के

Rajasthan Education Department

महंगे और अस्वास्थ्यकर खाने पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इसके अलावा जो पुरातन सोच है कि सिर्फ लड़कियाँ ही खाना बनाएगी। इस सोच को बदलने में भी सहायता मिलेगी।

9. सामान्य कार्यालयी अनुभव– हम अक्सर देखते हैं कि बच्चे ग्रेजुएशन करने के बाद भी बैंक में विदड्रॉल फार्म भरने या सामान्य प्रार्थना पत्र लिखने में भी खुद को असहज महसूस करते हैं। इन छुट्टियों में अपने बच्चों का बैंक में खाता अवश्य खुलवाएं और उन्हें दो चार बार चाहे 100–100 रुपये ही जमा करवाने और निकालने के लिए बैंक जाने दें, उन्हें यह कार्य अकेले करने के लिए प्रेरित करें। तभी बच्चे सीख पाएंगे और आत्मविश्वासी बनेंगे। बच्चों को आसपास के सरकारी कार्यालयों की विजिट करवाएं ताकि बच्चे सरकारी कार्यप्रणाली को व्यवहारिक रूप में समझ सके।

10. शैक्षणिक भ्रमण– भ्रमण का अर्थ केवल लंबी यात्राएं और महंगे होटलों में रहना और भारी भरकम खर्च कर की जाने वाली यात्रा ही नहीं है। हम अपने बच्चों को अपने आसपास शैक्षणिक महत्त्व के जो भी स्थान है वहाँ ले जा सकते है। वह स्थान कोई किला, पार्क, सरकारी कार्यालय, म्यूजियम, खेत, नर्सरी, कृषि विज्ञान केन्द्र या अन्य कोई भी जगह हो सकती है। यकीन मानिए बच्चा उन स्थानों पर जाकर आनंद का अनुभव करेगा और निश्चित रूप से वहाँ से कुछ नया सीखकर लौटेगा।

ऊपर जिन बिंदुओं की चर्चा हमने की है। यदि हम प्रयास करके उनमें से कुछ कार्यों को भी कर पाते हैं तो यह गर्मी की छुट्टियाँ न केवल आनंददायी होगी बल्कि उपयोगी भी होगी। लेकिन उसके लिए यह आवश्यक है कि अभिभावक के रूप में हमें यह स्वीकार करना होगा कि साल के 10 महीने बच्चे किताबों से सही सीखता है और इन छुट्टियों में हम अपने बच्चों को सिर्फ किताबों में ही न उलझाएँ रखें बल्कि व्यवहारिक अनुभव से सीखने का उसे अवसर दें।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक थालड़का,
हनुमानगढ़ (राज.) 335524
मो. 9875195502

एसपीसी टूर - एक उर्वर व उत्पादक यात्रा

❒ कमल किशोर पीपलवा

राउमावि गारबदेसर (बीकानेर) के एसपीसी योजनान्तर्गत 44 विद्यार्थियों का दल शैक्षणिक भ्रमण के लिए प्रातः 6 बजे मुरली मनोहर मंदिर, गारबदेसर से 'भारतमाता' के जयकारों के साथ रवाना हुआ। शीतल मंद समीर के झोंकों के साथ भ्रमण दल कुछ ही समय पश्चात उरमूल सेतु संस्थान, लूणकरणसर के मुख्य द्वार पर था। संस्थान के निदेशक रामेश्वर लाल ने अभिनंदन के पश्चात 'ताना–बाना' नामक कपड़े की बुनाई, विनिर्माण, पैकिंग व विक्रय के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारियाँ दी। सन् 1988 में स्थापित यह एनजीओ अपने विश्वस्तरीय कपड़े हेतु विख्यात है। वर्तमान में इस संस्था का टर्न ओवर 1.5 करोड़ रुपये है तथा यूरोपीय देशा के लिए ऑर्डर पर निर्मित कपड़े की प्रोसेसिंग के बारे में संपूर्ण बारिकियाँ विद्यार्थियों ने नोटबुक में नोट की।

अगला पड़ाव भारत की पहली जैतून रिफाइनरी का था। जैतून रिफायनरी, लूणकरणसर के निदेशक डॉ. सीताराम यादव ने बताया कि राजस्थान में जैतून की पैदावार 8 स्थानों (लूणकरणसर, अनूपगढ़, जालोर, जयपुर, नागौर, झुंझुनूं) पर होती है तथा लूणकरणसर स्थित रिफायनरी में निःशुल्क तेल शोधन किया जाता है। राजस्थान सरकार राज ऑलिव नाम से यह उत्पाद बाजार में भी उपलब्ध करवाती है। रिफायनरी के पश्चात कक्षा 8 व 9 के छात्रों ने अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कोर्ट, लूणकरणसर का रुख किया। जहाँ अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट राजीव जाँगिड़ ने एक चर्चित केस की जीवंत सुनवाई विद्यार्थियों को दिखाई। तत्पश्चात बार एसोसियेशन सभागार में पॉक्सो एक्ट तथा बाल अधिकार अधिनियमों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी गई।

यात्रा के दौरान अंत्याक्षरी, कविता पाठ के साथ–साथ राजस्थान सरकार की विधिक योजनाओं की व्यापक जानकारी एसपीसी प्रभारी कमल किशोर पिपलवा ने दी। तत्पश्चात भ्रमण दल ने दोपहर 11 बजे जूनागढ़, बीकानेर के लिए प्रस्थान किया जहाँ अंग्रेज राजपूत संबंध, अतीत गौरव से जुड़ी अनेकानेक जानकारियाँ हासिल हुई। राव बीका, अनूपसिंह, गंगासिंह, कल्याण सिंह से जुड़ी उपलब्धियों को विद्यार्थियों ने पृष्ठांकित किया। भ्रमण के उत्तरार्द्ध में राजस्थान राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में पुरंदर की संधि, हल्दी घाटी, मेवाड़–बीकानेर के प्राचीन दरवाजे, फरमान, पट्टे व ताम्रपत्रों के बारे में छात्रों ने जिज्ञासाओं का शमन किया। अभिलेखागार के निदेशक डॉ. महेन्द्र खड़गावत के आत्मीय आतिथ्य में बालकों राजाशाही पट्टों के रिकॉर्ड व देश के पहले डिजीटल अभिलेखागार को देखकर ज्ञान में वृद्धि की। लापसी, खीर के स्वरुचि भोज के पश्चात विद्यार्थियों ने सन् 2018–19 में देशभर में प्रथम रहे पुलिस थाना, कालू का भ्रमण किया जहाँ थानाधिकारी रतीराम ने एफआइआर, साक्ष्य अधिकनयम, गुड टच बेड टच के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर प्रधानाचार्या श्रीमती पूनम महला ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया।

व्याख्याता
एसपीसी प्रभारी
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
गारबदेसर, बीकानेर (राज.)
मो: 9460923603

Rajasthan Education Department

अनूठी पहल

स्वस्थ व स्वच्छ आदतों के विकास का कार्यक्रम है-वेस्ट टू बेस्ट

❒ तुलसी राम

स्वच्छता देश की सेवा है, इसी भाव को छात्रों के जीवन में उतारने के लिए, यूज एंड थ्रो जो भारतीय नहीं है कि बढ़ती आदत को बदलने के लिए स्वच्छता मिशन को आगे बढ़ाने के लिए एक अनूठी मुहिम राजस्थान के पाली जिले में जिला प्रशासन पाली व शिक्षा विभाग पाली द्वारा चलाई जा रही है वेस्ट टू बेस्ट।

क्यों आज जीवन में पॉलीथिन व प्लास्टिक जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। पॉलीथिन जितना जीवन में उपयोगी व महत्त्वपूर्ण है उससे ज्यादा बुरा उसका अविवेकी निस्तारण व गैर जरूरी उपयोग है। वर्तमान पीढ़ी द्वारा बच्चों को डिस्पोजल के नाम पर जो वास्तव में डिस्पोज नहीं होता का अति उपयोग अनायास ही सिखाया जा रहा है। वेस्ट टू बेस्ट छात्रों को पॉलीथिन के विवेकपूर्ण निस्तारण व अति आवश्यक होने पर ही उपयोग हो, की आदत बनाने पर काम करने वाला कार्यक्रम है जिससे भविष्य में पॉलीथिन का प्रारंभिक स्तर पर ही निस्तारण हो जाए व अति उपयोग की आदत नहीं बने।

कैसे इस मुहिम में छात्र अपने आसपास परिक्षेत्र में बिखरे पॉलीथिन को व घर में यूज पॉलीथिन को इकट्ठा कर इनको पानी पीने के बाद खाली हुई प्लास्टिक की बोतल में ठूंस ठूंस कर भरकर एक और इस वेस्ट से पर्यावरण स्वच्छ बनाने के साथ जीव जमीन को भी बचा रहे हैं वहीं इस वेस्ट को कलर कर रंग बिरंगे इको ब्रिक्स व फूल इत्यादि भी बनाकर इनको बेस्ट बना रहे हैं। इस वेस्ट से बने बेस्ट से एक ओर वातावरण स्वच्छ हो रहा है वहीं दूसरी ओर विद्यालयों का सौंदर्यीकरण भी हो रहा है। इनसे क्लास टैग भी बनाए जा रहे हैं तो कहीं-कहीं शिक्षक इनको कलर कर टीचिंग लर्निंग मेटेरियल भी बना रहे हैं।

बच्चों को प्रेरित करने के लिए रिटर्न गिफ्ट के रूप में इको फ्रेंडली पेन भी दिए जा रहे हैं। ये पेन खास इसलिए भी है कि ये कागज से बने हैं तथा इनके पीछे फल-फूल व सब्जी के

बीज लगे हैं। बच्चे इन पेन का उपयोग करने के बाद पौधे भी लगा रहे हैं। इस प्रकार भारतीय संस्कृति को जीवंत करने का प्रयास है।

अनूठा होमवर्क- तत्कालीन जिला कलेक्टर महोदय श्री अंशदीप जी द्वारा छात्रों को स्वस्थ आदत निर्माण के लिए बच्चों को दीपावली गृहकार्य के रूप में इकॉब्रिक्स बनाने का होमवर्क दिया जिसमें छात्रों ने लगभग 15000 बोतल में लगभग 3000 किलो पॉलीथिन से जीव-जमीन को बचाया। अगर पूरे राजस्थान के छात्रों को घर से पॉलीथिन के विवेकपूर्ण निस्तारण का गृहकार्य दिया जाए तो बहुत बड़ी संख्या में पॉलीथिन को प्रारंभिक स्तर पर सेग्रिगेट किया जा सकता है। रिसायकल करने में मदद मिलेगी।

अगला चरण- इकॉब्रिक्स के बाद छात्रों में प्रयुक्त पॉलीथिन 100 प्रतिशत रिसायकल हो जाए इसलिए एक प्रयोग जिला कलेक्टर पाली की प्रेरणा से प्रारंभिक रूप में शहर के प्रत्येक विद्यालय में दो डस्टबिन रखे जाएंगे, जिनमें एक में एमएलपी (मल्टी लेयर पॉलीथिन) फूड एंड पैकेजिंग में काम आता है जो केमिकल रिसायकल ही होता है वो पॉलीथिन डाला जाएगा व दूसरे में वो पॉलीथिन जिसमें रिसायकल होने योग्य पॉलीथिन डाला जाएगा। इससे बच्चों द्वारा प्रारंभिक स्तर पर सेग्रिगेट किए गए पॉलीथिन से रिसायकल आसानी से हो जाएगा व छात्र केवल जरूरी होने पर ही पॉलीथिन का उपयोग करेंगे।

पाली शहर के राजकीय सेठ मुकुंद चंद बालिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली के शिक्षक सुरेश जांगिड़ ने स्कूल के व्यर्थ कबाड़ से बेस्ट पुस्तकालय में बदल दिया, वहीं जालोर के राउमावि. कागमाला के प्रधानाचार्य नारायण लाल जीनगर ने व्यर्थ कबाड़ से बहुत ही सुंदर वर्णमाला का निर्माण किया।

क्रियान्वयन के चरण- समस्त PEEO क्षेत्र की बैठक लेकर जिले के समस्त स्कूलों तक इस कार्यक्रम को चलाया जाएगा। जिला नवाचार निधि के माध्यम से जिला, ब्लॉक स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यालय, शिक्षक व छात्र को धन राशि से पुरस्कृत किया जा सकता है।

अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा,
पाली (राज.)
मो: 9214030389

धैर्य एवं सद्भावना से मिली सफलता

❒ राजेश जोशी

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिंहाड तहसील भीण्ड़र जिला उदयपुर की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती मधु सनाढ्य के द्वारा विद्यालय के लिए अपने वेतन में से की गई बचत से एक लाख रुपये की विपुल राशि भेंट करने का समाचार मिलने पर इस विद्यालय में बिताए मधुर दिनों की यादें मानस पटल पर सजीव हो उठी। उदयपुर जिले का सिंहाड क्षेत्र आदिवासी क्षेत्र है। इस विद्यालय में सत्र 2017-18 में प्रधानाचार्य यानी विद्यालय के प्रथम सेवक के रूप में कार्य करने का अवसर मिलना मेरे लिए किसी चुनौती से कम नहीं था लेकिन आज मुझे वह मेरा सौभाग्य लगता है। भोले-भाले लोग, विद्यालय के लिए अपनी आर्थिक स्थिति से ऊपर उठकर सहयोग करने वाले आदिवासी! आज के तथाकथित उच्च स्तर की पढ़ाई कर सभ्य कहलाने वाले लोगों को इन आदिवासी व्यक्तियों से सरलता, सादगी, सहयोग एवं विमलता की सीख लेनी चाहिए। अद्भुत उच्च मानवीय गुणों से परिपूर्ण आदिवासियों से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। विद्यालय के हित में अपने वेतन में से एक लाख रुपये की बड़ी राशि भेंट करने के लिए बहन मधु सनाढ्य के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए एक घटना मैं शिविरा के माध्यम से संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकों के साथ साझा करना चाहता हूँ।

देश के 70 वे स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त 2017 की बात है। पदोन्नति पर बीकानेर से आकर सिंहाड विद्यालय में कार्यग्रहण किए हुए चन्द दिन हुए ही थे कि स्वतंत्रता दिवस समारोह को शानदार ढंग से मनाने की भावना लिए मैने 14 अगस्त तक आवश्यक तैयारियाँ स्टॉफ के साथ चर्चा करके पूरी कर ली थी। मन में उत्साह था। 15 अगस्त को सुबह चार बजे ही उठ गया प्रात: भ्रमण शीघ्र सम्पन्न कर, नहा-धो, पूजा-पाठ कर छ: बजे से पहले ही स्कूल के लिए घर से निकल पड़ा।

जैसे ही स्कूल परिसर के नजदीक पहुँचा तो पाया कि विद्यालय मैदान में बड़ी संख्या में ग्रामवासी इकट्ठे हो रहे हैं। मैं बहुत खुश हुआ। सोचा कि इतनी बड़ी संख्या में ग्रामवासी समारोह में आ रहे हैं। कदम बढ़ाकर उनकी ओर पहुँचा तो बातचीत से उनके आने का कारण जानकर मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई।

''साब, स्कूल के फलां शिक्षक ने बिना कसूर हमारे फलां बच्चे को पीटा, हम आज कार्यक्रम होने नहीं देंगे।'' एक युवक ने आगे होकर कहा उसकी बात समाप्त होते ही कई ग्रामीण उच्च स्वर में यही बात दोहराते रहे। अजीब धर्म संकट, उलझन में फंस गया मैं। ऐसे में ही आपके धैर्य एवं युक्तिवान होने की परीक्षा होती है। मैनें बहुत विनम्रता एवं उनके प्रति सम्मान के शब्दों के साथ सबसे पहले उन्हें स्वतंत्रता दिवस की बधाई देकर स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान की मार्मिक व्याख्या की। भारत माता के जय के नारे में समवेत स्वर में सबने साथ दिया।

मैंने स्वतंत्रता दिवस समारोह में सम्मानपूर्वक ध्वजारोहण, राष्ट्रीय गान एवं शहीदों के प्रति सम्मान प्रकट करने जैसी भावुक बातें करके उनकी नाराजगी का कारण पता लगाने की कोशिश की। आज मैने जाना कि विशेष मौकों पर अधिकारी को क्यों पर्याप्त समय पूर्व कार्यस्थल पर पहुँच जाना चाहिए। स्टाफ के साथी इक्के-दुक्के आ गए थे। अगर मैं जल्दी नहीं आता तो हो सकता स्थिति कुछ और हो जाती। भीड़ में विचार शक्ति क्षीण हो जाती है, इस सत्य को हम जानते हैं।

मैंने बिना कोई तर्क दिए सबसे पहले उनके द्वारा बताए जा रहे शिक्षक का नाम लेकर उनकी ओर विनम्रता पूर्वक हाथ जोड़कर खेद प्रकट किया। वे बार-बार उन गुरुजी को वहाँ बुलाने का आग्रह करते रहे, लेकिन मैने स्कूल विकास एवं राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं आदि बाबत् बातचीत करते हुए उन्हें ऐसा न करने के लिए मना किया। स्टाफ साथी की गलती होने पर उन्हें अलग से अथवा अपने शाला परिवार के साथ आप भला-बुरा कह लें लेकिन बाहरी व्यक्तियों के सामने कुछ नहीं कहना चाहिए। इसे एक मंत्र की तरह संस्थाप्रधानों को ग्रहण करना चाहिए। कई बार अजीब धर्म संकट की स्थिति पैदा हो जाती है। भीड़ को समझाना बहुत कठिन कार्य है। ऐसे अवसर आपके धैर्य, विश्वास, वाक्पटूटूता, व्यवहारकुशलता एवं जनसम्पर्क की परीक्षा लेने वाले होते हैं। खैर, मैं इसमें सफल रहा। यह ईश्वर की कृपा रही। आप जरा अंदाजा लगाइए कि स्वतंत्रता दिवस अथवा गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व के समय मुख्य समारोह से ठीक पहले ऐसी स्थिति बन जाए तो उस प्रधानाचार्य के मन पर क्या बीतती होगी?

यह एक तरह से जनता की अदालत थी। आरोप शिक्षक पर था और पेशी पर मैं खड़ा था, विद्यालय का प्रथम शिक्षक और ग्राम की शिक्षा व्यवस्था का प्रधानसेवक। इस बार क्षमा कर देवें और भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृति न होने के मेरे वचन से बात बनी। ग्रामीण राजी हो गए और सैकड़ों ग्रामीणों की उपस्थिति में स्वतंत्रता दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। ग्रामीणों ने 'भारत माता की जय' -'महात्मा गाँधी की जय' जैसे नारों से गगन को गूँजा दिया। एक शानदार एवं भव्य समारोह विद्यालय के इतिहास में जुड़ गया।

आज जब मैं उस घटना को समग्र शिक्षा के प्रशासन के संदर्भ में देखता हूँ तो मुझे लगता है कि हमारे शिक्षकों को बहुत धैर्य एवं कुशलता के साथ काम करना चाहिए। पाठक बुरा न माने, संस्था में एक व्यक्ति की गलती अथवा हठधर्मिता से कई बार स्थिति बिगड़ जाती है। आपकी विनम्रता आपका धन है। इसे बनाये रखें और इसके दम पर युक्तिपूर्वक ढंग से परिस्थितियों का सामना करे। एक बात मैं उल्लेख करना उपयुक्त समझता हूँ। ग्रामीणों के चले जाने के बाद मैंने स्टाफ के साथ इस घटना का विश्लेषण करते हुए सम्भावित बिगड़ी स्थिति बाबत जिक्र किया तो आरोपी शिक्षक ने कहा कि हमने भी तैयारी कर रखी थी। बस इसी गलती से बचना है, क्या हमे स्कूल को रणक्षेत्र बनाना है? नहीं, कदापि नहीं, कभी नहीं, किसी

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

भी सूरत में नहीं। ऐसे अवसरों पर की गई गफलत से शुरू होने वाली विभागीय कार्यवाही के दुष्परिणाम हम देखते हैं। इनसे येन-केन, प्रकारेण बचना चाहिए। संस्थाप्रधान को चातुर्य एवं साधनावत मधुर व्यवहार करना चाहिए। सिंहाड से मेरा बीकानेर स्थानान्तरण हुआ तब दर्जनों ग्रामीणों ने आकर वहीं रहने का आग्रह किया। क्षेत्रीय विधायक महोदय तक ग्रामीणों ने गुहार लगाई, लेकिन तब भी मेरे आग्रह-अनुरोध ने असर दिखाया। उनके बुझे दिल और मेरे भारी मन से, मैंने वहाँ से विदाई ली। मूल जिले से सात सौ किलोमीटर दूर पदस्थापित रहकर भी मैंने वहाँ आनन्द एवं अपनत्व का अहसास किया जो मेरे जीवन इतिहास के एक स्वर्णिम अध्याय की तरह सदैव विद्यमान रहेगा। माँ सरस्वती को अर्पित यह श्लोक सदैव मुझे बल प्रदान करता है, मुझे राह दिखाता है, मेरी मुश्किले आसान करता है-

सरस्वती नमस्तुभ्यम् सर्वेभ्यो ज्ञानदायिनी, सर्वदा सर्वकार्येषु सर्वदा वरदाभवः।

अर्थात् हे विद्या और बुद्धि की माता सरस्वती! हम श्रद्धापूर्वक आपको नमन करते हैं। हमारे समस्त कार्यों में आप सदैव वरदायिनी हो, आपके अनुग्रह से हमारे सभी कार्य सफलतापूर्वक सानन्द सम्पन्न हो। शिक्षा प्रशासन डंडे की जोर पर नहीं चलता। यह तो मन से मन का पावन पवित्र संवेदनशील कार्य है। आप दृढ़ (Firm) रहिए, लेकिन विनम्रता और संवेदनशीलता को बनाए रखते हुए वर्षों पहले बीकानेर के समीप गंगाशहर राजकीय भट्टड़ माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य करते हुए भी इन्हीं के बल पर न केवल विभिन्न नवाचार कर सका अपितु विद्यालयी कार्यों में सदैव यश एवं सफलता प्राप्त हुई। अपने साथियों की कार्यक्षमता में विश्वास रखिए और उसका भरपूर लाभ उठाइए। सफलता आपके कदम चूमेगी, इसमें कोई शक नहीं है।

इति शुभम!

अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, कार्यालय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, बीकानेर संभाग, बीकानेर
मो: 8107530982

विनम्र प्रार्थना

❐ शिवशंकर सुमन

परम पूज्य अभिभावक महोदय
चरणों में सादर नमन्!

निवेदन है कि आज हम विद्यालय के अंतिम सोपान (कक्षा 12वीं) से विदा होने जा रही हैं। इस विद्यालय में किसी ने 12 वर्ष, किसी ने 7 वर्ष तो किसी ने 4 वर्ष अध्ययन किया है। यह विद्यालय 66 बसंत का साक्षी बन चुका है। सर्दियों की ठिठुरन से कंपकंपाया तो कभी गर्मियों की तपन का अहसास कराया और कभी वर्षा की फुहार ने नहलाया भी। वार्षिकोत्सव एवं विदाई समारोह के इस शुभ अवसर पर आप सभी अभिभावकगण का मैं हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करती हूँ। मैं महसूस करती हूँ कि आज इस अवसर पर पधारे महानुभावों में कुछ ऐसे भी नागरिक साक्षी बन रहे हैं, जिन्होंने वर्ष 1956 में इस विद्यालय की पहली कक्षा में नन्हें बालक के रूप में पहला कदम रखा होगा। तत्कालीन विद्यालय और आज के इस उच्च माध्यमिक विद्यालय के स्वरूप में जो विकास हुआ है, उससे आप सभी भली भाँति परिचित है। एक कक्षा-कक्ष से प्रारंभ होकर आज भव्य स्वरूप में सुशोभित हो रहा है और आगे भी विकास के नए आयाम स्थापित करेगा, ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

विद्यालय के जिस स्वरूप को हम सब देख रहे हैं, यह एक दिन अथवा एक वर्ष का परिणाम नहीं होकर सोपान दर सोपान स्वरूप बदला है। हमारी सरकार इस हेतु सदैव दृढ़ संकल्पित रही है और रहेगी। फिर भी सरकार की अपनी सीमा और सामर्थ्य होता है। हमारा राजस्थान भौगोलिक, पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टि से विपरीत हालात में भी सदैव विकास के उत्तरोत्तर नए आयाम स्थापित कर रहा है।

आज इस शुभ अवसर पर आप का ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ कि आज लोग सरकारी विद्यालय में आते हैं ठीक वैसे ही आपको निजी शिक्षण संस्थाओं में भी जाने का अवसर मिलता होगा। निजी संस्थानों की भौतिक सुविधाओं और संसाधनों को देखकर आपके मन में विचार भी आया होगा। पर यह विचार शायद ही आया हो कि उन्हें बनाने में धन कहाँ से आता है? हो सकता है मेरी सोच अनुचित हो, पर यह निश्चित है कि उनके पीछे आप द्वारा दी गई मोटी प्रवेश शुल्क और अन्य चार्ज राशि आदि ही हैं।

वहीं दूसरी ओर हमारा यह विद्यालय हमारे अध्ययन के लिए नाम मात्र शुल्क लेता है और बदले में अनेक सुविधाएँ मुफ्त में देता है। यह सब बातें कहने के पीछे मेरा एक ही निवेदन है कि हमारे विद्यालय में भी भौतिक संसाधन हों, और यह संभव हो सकता है आप सभी अभिभावक महानुभावों के मामूली से योगदान से। यदि प्रत्येक अभिभावक थोड़ा-थोड़ा योगदान करें; तो कहते हैं कि एक और एक ग्यारह हो जाते हैं। आपके सहयोग से ये विद्यालय निजी शिक्षण संस्थानों से कई गुना समृद्ध होकर नए आयाम स्थापित कर सकेगा।

मेरा अनुरोध है कि जिन सुविधाओं की आवश्यकता को आज हम इन विद्यालयों में महसूस कर रहे हैं, आने वाले समय में हमारे छोटे भाई बहिनों को इनका सामना नहीं करना पड़े। इसलिए जितना बन पड़े प्रत्येक अभिभावक सहयोग करने करें। यदि आप हमारे विवाह के लिए चिंतित रहते हैं, तो हमारा अनुरोध है कि विवाह में दिखावा छोड़ देना, स्नेह भोज पर खर्च भी त्याग देना। दहेज भी मत देना। हमारी विनती है कि हमारा वर्तमान संवार दो। भविष्य स्वतः ही संवर जाएगा। हम विश्वास दिलाते हैं कि हम आपके सम्मान को कभी कम नहीं होने देंगी। आप सभी गर्व से कह सकेंगे कि ये सब हमारी बेटियाँ सरकारी स्कूल में पढ़ती हैं। आखिर हम आपकी लाडली बेटियाँ जो हैं।

कक्षा12 की समस्त छात्राएँ

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मगीसपुर, झालावाड़ (राज.)
मो: 9166776906

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

मैं भी हूँ शिविरा रिपोर्टर!

मेरा विद्यालय : मेरा अभिमान

❒ भागीरथ राम

मरुधरा के धोरों की गोद में मारवाड़ और शेखावाटी की सीमा को साधते नागौर जिले की पूर्वी सीमा पर स्थित ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत को समेटे हुए ठेठ ग्रामीण परिवेश को जीता छोटा सा गाँव चावण्डिया जो देवी माँ चामुण्डा के नाम से अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रखता है। नागौर जिला मुख्यालय से करीब 150 किलोमीटर और सीकर जिला मुख्यालय से करीब 50 किलोमीटर दूर यह गाँव शेखावाटी और मारवाड़ की सांस्कृतिक विरासत को अपने भीतर समाए हुए हैं। सांसद आदर्श ग्राम के रूप में चिह्नित यह गाँव अपनी चौपाल की चर्चा से नौजवानों और किसानों के पसीने से सिंचित रहा है। जहाँ नौजवान फौज में भर्ती के लिए अलसुबह कच्चे-पक्के मार्गों पर जय हिन्द और भारत माता की जय के नारों की गूँज से दिन की शुरूआत करते हैं तो वहीं किसान बैलों से ट्रेक्टर तक के सफर में अपने श्रम की समिधा लगा रहे हैं। शिक्षा जगत से इस गाँव का प्रतिनिधित्व करते हुए मुझे इस गाँव से शिक्षा पाने से लेकर आज पंचायत का शैक्षणिक नेतृत्व करने की जिम्मेदारी तक आने का सौभाग्य मिला है तो इस आलेख के जरिए विद्यालयी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से वर्तमान संदर्भ और भविष्य की रूपरेखा आपके समक्ष प्रस्तुत करने का किंचित मात्र प्रयास रहेगा।

इतिहास के पन्नों से चावंडिया की शिक्षा- एक ब्रीफिंग- गाँव की चौपाल से लेकर खेत खलिहानों तक जब विद्यालय की चर्चा की गई तो कई अनछुए पहलुओं से रूबरू होने का मौका मिला। आठ-नौ दशक पार बुजुर्ग गाँव की शिक्षा की शुरूआत आजादी के बाद होना बतलाते हैं। कहते हैं कि यहाँ के लोगों ने मिलकर सन 1952 में गाँव की चौपाल पर एक छोटा सा प्राथमिक विद्यालय शुरू किया जो लगभग तीन दशक बाद वर्ष 1981 में उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप में क्रमोन्नत किया गया तो ग्रामवासियों ने विद्यालय के लिए भूमिदान कर पक्का भवन बनाने की ठानी। भूमिदान वाला काम तो हो गया परन्तु भवन निर्माण चुनौती बना हुआ था। उस समय पैसे सेठ साहूकारों के पास ही हुआ करते थे। लिहाजा तात्कालिक नेतृत्वकर्ताओं ने सेठ साहूकारों से सम्पर्क किया तो नागौर जिले के ही मौलासर गाँव के निवासी भामाशाह श्री वासुदेव सोमानी से सम्पर्क किया तो उन्होंने अपनी धर्मपत्नी स्व. केशर देवी सोमानी की स्मृति में मुख्य भवन का निर्माण करवाया। वर्ष 1998 में यह विद्यालय माध्यमिक विद्यालय तथा तत्पश्चात वर्ष 2007 में उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में क्रमोन्नत होने के बाद कला संकाय में संचालित होने लगा है। यहाँ तक आते-आते विद्यालय के शिक्षकों की लगन और ग्रामवासियों के सहयोग से विद्यालय एक मानक स्थिति प्राप्त कर चुका है।

संस्थान की बदलती तस्वीर और विद्यालय के प्रयास- 2 अक्टूबर, 2021 मेरे लिए एक ऐतिहासिक पल के रूप में आया जब मेरा स्थानांतरण इस विद्यालय में प्रधानाचार्य के रूप में हुआ। मेरे लिए यह विद्यालय गुरुकुल से कम नहीं था क्योंकि मैंने यहाँ सत्र 1988-89 से सत्र 1990-91 तक उच्च प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की थी। मेरा विद्यालय के प्रति लगाव भी अनूठा था लिहाजा अंतर्मन से कुछ बेहतर करने की गूंज आ रही थी। किसी ने कहा है कि-

कदम निरंतर बढ़ते जिनके,
श्रम जिनका अविराम है।
विजय सुनिश्चित होगी उनकी,
घोषित यह परिणाम है।।

को मन में धारण करके सबसे पहले मैंने प्राथमिकताओं को जानने के लिए शिक्षक साथियों की बैठक ली और विद्यालय में सुधार के सुझाव लिए, साथ ही अधीनस्थ विद्यालयों में भ्रमण कर स्टाफ साथियों से भी विचार साझा किए। तत्पश्चात गाँव के गणमान्य लोगों से चर्चा करते हुए अपेक्षित सहयोग के सहारे विद्यालय को नया कलेवर, नई पहचान दिलाने का विज़न रखा। बहुत सारे सुधार और विकास आधारित विजन अंतर्मन मे थे जो चरणबद्ध तरीके से रखते हुए विद्यालय के विकास को गति प्रदान की गई। कुछ नवाचार और सृजनात्मक कार्य-

- उबड़-खाबड़ विद्यालय परिसर से समतल व्यवस्थित परिसर की तब्दीली में ग्रामवासियों से आर्थिक सहयोग लेकर विद्यालय के स्टाफ साथियों के एक लाख रुपये के सहयोग से करीब 1000 ट्रॉली मिट्टी डलवाई गई। समतलीकरण के उपरांत खो-खो, कबड्डी, हैंडबॉल, बैडमिंटन और वॉलीबॉल के खेल मैदान तैयार किए गए। साथ ही 200 मीटर का रनिंग ट्रैक भी तैयार किया गया।
- विद्यालय भवन की मरम्मत व रंग-रोगन से नये कलेवर के जरिए एक शानदार शांत परिसर बनाने के लिए यथोचित मरम्मत कार्य किया गया और प्लास्टिक पेंट करवाया गया तथा महापुरुषों के नाम से नाम पट्टिकाओं से सुसज्जित और सुव्यवस्थित कर विद्यालय भवन को संवारा गया। साथ ही सौंदर्यकरण हेतु लगभग 4000 हैज के पौधे लगाकर पार्क विकसित करते हुए परिसर को इकोफ्रेंडली बनाने की ठानते हुए आगे बढ़ रहे हैं।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुकूल विद्यालयी परिवेश की ओर अग्रसर होते विद्यालय के चंद कदमों के तहत सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशाला से लेकर व्यवस्थित कम्प्यूटर कक्ष हो या फिर प्रोजेक्टर आधारित शिक्षण-कक्ष हो या फिर सुरक्षित व सजग परिवेश के लिए सीसीटीवी कैमरों की स्थापना हो, सब ओर कार्य हो चुका है। विद्यालय की प्रार्थना सभा से लेकर विद्यालयी उत्सव आयोजन के लिए डिजिटल घंटी से लेकर लाउडस्पीकर व ध्वनि यंत्र स्थापित किए जा चुके हैं जिससे आनंददायी शिक्षण से लेकर नामांकन वृद्धि और ठहराव सुनिश्चित होगा।

Rajasthan Education Department

- प्रार्थना सभा में महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग से लेकर अखबार वाचन के जरिए नैतिक मूल्यों से लेकर आधुनिक परिवर्तनशील जगत से भी रूबरू रखने का प्रयास किया जा रहा है।
- विद्यालय में स्थापित पुस्तकालय को नियमित रूप से संचालित करते हुए बच्चों में पाठ्य पुस्तकों से लेकर सहायक सामग्री के जरिए शैक्षणिक योग्यता अभिवृद्धि का प्रयास किया जा रहा है।
- विद्यालय में प्रत्येक बच्चे की भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए 360^{0} फीडबैक लेते हुए रुचि के विषयों को चिह्नित करते हुए कॅरियर काउंसलिंग का कार्य किया जा रहा है जो रोजगारपरक शिक्षा और एक जिम्मेदार नागरिक निर्माण की ओर सार्थक प्रयास हो सकेगा।
- गणतंत्र दिवस समारोह-2022 पर ग्रामवासियों व विद्यालय के स्टाफ द्वारा जनसहयोग के रूप में 7,50,000 रुपये प्राप्त हुए। साथ ही स्व. केशर देवी सोमानी के पुत्र श्री रंगनाथ जी सोमानी के द्वारा मुख्यद्वार निर्माण तथा कक्षा-कक्षों में नवीन फर्श डलवाने हेतु करीब ₹ 14,00,000 प्रदान करने हेतु निर्णयन हुआ है जो निश्चित रूप से सुखद विषय है। साथ ही 15 मार्च, 2022 को आयोजित वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में ग्रामीणों, अभिभावकों व पूर्व विद्यार्थियों ने कार्यक्रम की तैयारियों व व्यवस्थाओं में अपनी भूमिका निभाते हुए एक दिवस पूर्व सम्पूर्ण विद्यालय परिसर में व ग्राम की चौपाल से विद्यालय के मुख्य द्वार तक सड़क पर रंगोली, रात्रि में विद्यालय भवन को रोशनी से समारोह को भव्यता प्रदान करने में सहयोग किया। समारोह के शानदार आयोजन से अभिभूत होकर ग्रामवासियों ने 3,50,000 रुपये का आर्थिक सहयोग प्रदान किया। समारोह में भामाशाहों व शाला की प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया।
- विद्यालय के बच्चों के लिए पहचान पत्र की अनिवार्यता से लेकर गुरुवार को टी शर्ट, पेंट के रूप में नवाचार किया गया है तो अध्यापकों के लिए भी समान ड्रेस कोड लागू किया गया है जो विद्यालय की एक अच्छे संस्थान के रूप में खड़ा करता है।

आगे की रणनीति- विद्यालय विकास को गतिशीलता देने वाली मजबूत और जिम्मेदार टीम व ग्रामवासियों के अभूतपूर्व योगदान के सहारे बहुत सारे सुधार अभी भी संभव है जिसमें पार्किंग स्थल पर टीनशैड से लेकर प्रार्थना सभा स्थल को पक्का और टीनशैड मय बनाने का कार्य हो या फिर विद्यालय के मुख्य द्वार से विभिन्न विंग्स तक पहुँचने के लिए इंटरलॉक के जरिए पक्के ट्रेक बनाने हो। अतिरिक्त शिक्षण से लेकर व्यावसायिक शिक्षा और रोजगारपरक शिक्षा की ओर अतिरिक्त सामुदायिक प्रयासों को सहारा देना ताकि कुशल और योग्य नागरिक निर्माण हो सके।

संस्था प्रधान होने के नाते मैं मेरी मजबूत और जिम्मेदार शिक्षक टीम तथा सहयोगी मनीषी जनप्रतिनिधियों के अतुलनीय योगदान से अभिभूत भी हूँ और आभारी भी हूँ।

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में,
मांगे कर्मभूमि से यह वर।
तेरा वैभव सदा अमर रहे,
हम दिन चार रहे ना रहें।।

उक्त मूल मंत्र के साथ विद्यालय को नवीन स्वरूप प्रदान करने के प्रयासों से अतीव आनंद की अनुभूति हो रही है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चावंडिया,
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)
मो: 9413333511

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुन्तासर, श्री डूंगरगढ़

रपट

❒ बाबू लाल मीणा

माननीय शिक्षामंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में जनसहयोग से निर्मित राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुन्तासर के भवन का लोकार्पण एवं उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। श्री वेदप्रकाश ब्रह्मचारी रा.प्रा.वि. कुन्तासर का लोकार्पण एवं उद्घाटन समारोह विद्यालय परिसर में 11 अप्रेल, 2022 को धूमधाम से आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री डॉ. श्री बी.डी. कल्ला एवं अमरज्योति महाराज (उत्तराखण्ड), श्री रामेश्वर लाल डूडी, अध्यक्ष इण्डस्ट्रीज डवलपमेंट बोर्ड (कैबिनेट मंत्री) राजस्थान सरकार, विशिष्ट अतिथि श्री मंगलाराम गोदारा पूर्व विद्यायक श्रीडूँगरगढ़, श्री आनूराम सहू पूर्व प्रधान, श्रीमती सावित्री देवी गोदारा प्रधान श्री डूँगरगढ़, श्रीमती भंवरी देवी नैण उप प्रधान, श्री उँकाराम सरपंच ग्राम पंचायत कुन्तासर एवं अध्यक्षता

श्री गिरधारी लाल महिया विधायक श्री डूँगरगढ़ ने की। इस अवसर पर सी.ई.ई.ओ. श्री डूंगरगढ़, संस्थाप्रधान, शाला स्टाफ एवं एस.एम.सी. सदस्यों ने अतिथियों का माल्यार्पण एवं स्वागत किया। लोकप्रिय माननीय शिक्षा मंत्री ने माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया। साथ ही राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं द्वारा सरस्वती वंदना की गई। एस.एम.सी. सदस्यों द्वारा सभी आगंतुक अतिथियों का माल्यार्पण किया गया। लगभग 3.25 बीघा जमीन का भूदान करने वाले श्री चुन्नाराम जाट को याद किया गया एवं कृतज्ञता प्रकट की गई। इस भूमि पर 35 लाख रुपये की लागत से जनसहयोग संग्रहित करने वाले श्री धर्मपाल सिंह चौधरी, श्री पुखराज सहू, श्री सुगनाराम जोधु को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दो कमरे, पुस्तकालय भवन, टीन शैड, पंचायत भवन की चारदीवारी एवं MLA कोटे से विद्यालय में विकास कार्य करवाने की घोषणाएँ की गई। माननीय शिक्षा मंत्री ने बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए उपस्थित अभिभावकों से अपने बच्चों को अच्छी संस्कारवान शिक्षा देने का आहवान किया।

संस्थाप्रधान
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंतासर,
श्रीडूँगरगढ़, बीकानेर

Rajasthan Education Department

पुस्तक समीक्षा

क़मर मेवाड़ी

सम्पादकः माधव नागदा; **प्रकाशनः** भावना प्रकाशन, नई दिल्ली-110091; **पृष्ठ** : 312; **मूल्यः** ₹ 795 रुपये।

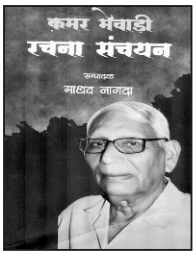

83 वर्षीय वरिष्ठ साहित्यकार क़मर मेवाड़ी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है, श्री मेवाड़ी की कविताएँ आमजन की संवेदनाओं से किस गहरे तक सरोकार रखती है तथा उनकी कविताएँ किस जमीनी गंध में रची-बसी होती है तथा समकाल का किस प्रकार दिगदर्शन करती हैं। बतौर बानगी उनकी कविता 'शब्दों को सान पर चढ़ा रहा हूँ' का एक अंश है-''तुम्हारे दिमाग़ की ग़लाजत को/एक बार फिर साफ़ करूँगा/अपने शब्दों को पैना करूँगा/ताकि तुम/किसी धनपति के गुणगान/और दीवार पर चिपकी कामुक तस्वीरों से मुक्त हो सको।''

उनके संस्मरणों में 'हिन्दी साहित्य का सुपर स्टार मणि मधुकर', 'अदब की छतरी में रोशनी की किरण', 'स्वंय प्रकाश जैसा दोस्त कोई नहीं', 'आचार्य साहब को याद करते हुए', 'राजेन्द्र यादव सदैव हमारे बीच मौजूद रहेंगे' तथा 'पिताजी चुप हैं' शामिल हैं। 'राजेन्द्र यादव सदैव हमारे बीच मौजूद रहेंगे' संस्मरण में उन्होंने यादव जी को आत्मीयता से याद किया है-''मेरी तरह हजारों नहीं, लाखों लोग उनके फैन थे। उन्होंने 'हंस' को जो ऊँचाइयाँ प्रदान कीं और हिन्दी कहानी को चर्चा के केन्द्र में रखा उसकी मिसाल दुर्लभ है।''

उनके उपन्यास 'वह एक' पर डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ और वेद व्यास के महत्त्वपूर्ण लेख हैं। उनके संस्मरण 'यादें' पर डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल, डॉ. प्रेम कुमार, रामनिहाल गुंजन और डॉ. हुसैनी बोहरा के मर्मस्पर्शी आलेख हैं। यह आलेख क़मर मेवाड़ी की सम्पन्न संस्मरण दृष्टि तथा उनके आत्मीयबोध को प्रकट करते हैं। इन संस्मरणों को पढ़ते हुए पाठक सहज ही उनमें अपनापा पाता है।

इसी प्रकार उनके व्यक्तित्व पर केन्द्रित 'व्यक्तित्व की खुशबू' के तहत डॉ. कृष्ण कुमार 'आशु', नंद चतुर्वेदी, डॉ. सूरज पालीवाल, मधुसूदन पाण्ड्या, रूपसिंह चंदेल, डॉ. महेन्द्र भानावत, स्वयं प्रकाश के विवेचनात्मक आलेख हैं। स्वयं प्रकाश अपने लेख 'गली-गली मेरी याद बिछी है' में लिखते हैं खुली-खिली मुस्कान, आँखों में सीधे देखती आँखें और चेहरे पर वही झिझकती झांकती झिलमिल सादगी और सच्चाई जो चालू और चटपटे अपने साफ़ और सादालौह सूफियों की सोहबत तलाशती रहती है-'मुझे लगा जमेगी। इस शख़्स के साथ अपनी जमेगी।'

इसी प्रकार बृजेन्द्र रेही का 'राजसमंद झील पर नक्काशी की तरह है क़मर मेवाड़ी' भी एक संजीदा लेख है।

रचना संचयन में लगभग चालीस लेखकों, आलोचकों और उनके साहित्यिक मित्रों के आलेख शामिल हैं। स्वयं क़मर मेवाड़ी के दो आत्मकथ्य, सात कहानियाँ, पन्द्रह कविताएँ सम्मिलित हैं।

जिस प्रकार इस रचना संचयन का ताना-बाना बुना गया है, वह नामचीन साहित्यकार क़मर मेवाड़ी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक मुकम्मल किताब कही जा सकती है। निःसंदेह माधव नागदा द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार क़मर मेवाड़ी के साहित्यिक अवदान और उनके वैयक्तिक प्रवृत्तियों पर प्रणीत यह पुस्तक सुधी-पाठकों और शोधार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित होगी। उन शोधार्थियों के लिए तो यह और भी महत्त्वपूर्ण है, जो क़मर मेवाड़ी की समग्र सृजनशीलता पर शोध कार्य कर रहे हैं।

समीक्षक : **रत्नकुमार सांभरिया,**
भाड़ावास हाउस, C-137, महेश नगर, जयपुर
(राज.)-302015
मो: 9636053497

मेरा गधा : गधों का लीडर

लेखक : देवकिशन राजपुरोहित; **प्रकाशक** : इंडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा गौतम बुध नगर, नई दिल्ली; **संस्करणः** 2021; **पृष्ठः** 96; **मूल्यः** ₹ 7 रुपये।

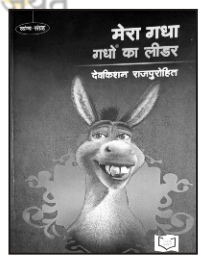

देवकिशन राजपुरोहित का लिखा 'मेरा गधा : गधों का लीडर' एक ऐसी व्यंग्य रचना है जो राजस्थान की राजनीति समाज धर्म और संस्कृति के बहुतेरे चित्र प्रस्तुत करती है। लेखक की व्यंग्य संग्रह की यह पहली पुस्तक है परंतु उनका लेखन संसार बहुत विशाल है। इन्होंने इससे पहले कथा- उपन्यासों की करीब अढाई दर्जन पुस्तकें लिखी हैं। इस पुस्तक में उनकी व्यंग्य दृष्टि से समाज, राजनीति और संस्कृति की कई परतें खुलती है। समीक्ष्य रचना में लेखक गधे को माध्यम बनाकर तत्कालीन राजनीति की विद्रूपताओं को प्रकट करते हैं।

लेखक समाज में प्रचलित रीति रिवाज को पैनी नजर से देखते हैं। दहेज प्रथा को लेकर उनका एक व्यंग्य है मंगतूराम की शादी, इसमें वे लिखते हैं कि दहेज देना तो दूर एक उम्र बीतने के बाद और मालदार रोजगार न होने पर शादी भी नहीं हो पाती है। जो लड़का पहले लेनदेन को लेकर अपनी बोली लगाता है आखिर में उसको कोई गरीब से गरीब आदमी भी अपनी बेटी देने को तैयार नहीं मिलता।

पिछले दिनों जूते को लेकर बहुत से लेखकों ने अपनी बात कही है तो राजपुरोहित जी भी कहाँ चूकने वाले थे। उनका मानना है कि पैरों की शोभा आराम, सुरक्षा व शालीनता के पर्याय के तौर पर जूतों को जाना जाता है परंतु कालांतर में जूतों के साथ कई परंपराएँ जुड़ गई थी। तो कोई भी साहित्य इससे अछूता नहीं है तो कवि ने दिवाली और दिवाली में साम्य स्थापित करते हुए लिखा है की दिवाली दिवाले में तब्दील हो गई क्योंकि सरकारी बंदिशों की वजह से पटाखे, मिठाइयाँ यहाँ तक कि जुआ भी बंद है। पूरा तंत्र चौपट हो गया है।

मध्यम और निम्न वर्गीय समाज में जर्दा एक ऐसा खाद्य पदार्थ बन गया है जहाँ भी आप जाओगे जर्दा खाने वाले-खिलाने वाले लोग मिल जाएँगे। लेखक की नजर यहाँ भी अपने तरीके से बात देखती है। उनका मानना है कि जर्दा यूं तो नशे की चीज है लेकिन लेखक ने अपनी लोक की नजर से इसे विश्व बंधुत्व का प्रतीक बना दिया। आखिर में लेखक स्वयं सरकारी शिक्षक रहे हैं तो शिक्षक की जो सबसे बड़ी समस्या है वह है तबादले की। तबादले की पीड़ा को लेकर वे एक व्यंग्य लिखते हैं कि सभी कार्मिक अपने घर के पास के स्कूल में तबादला चाहते हैं परंतु ऐसा संभव नहीं होता तो फिर राजनीति के दांव पेंच लगाते हैं। इसमें तेजतर्रार लोग तो मनवांछित तबादला पा लेते हैं परंतु बाकी लोग तो जिंदगी अपने तबादले के इंतजार में ही नौकरी पूरी कर लेते हैं। भाषा के लिहाज से लेखक ने राजस्थानी भाषा का समावेश हिंदी में किया है। एक वोट नाम से तो पूरा व्यंग्य राजस्थानी में है लेकिन वर्तनी की अशुद्धियाँ किताब में बहुत अधिक है, जो अखरती है। कई जगह वाक्य विन्यास में भी गड़बड़ है। आशा है कि राजपुरोहित जी इस ओर ध्यान देंगे और अगले संस्करण में इस प्रकार की त्रुटि से रहित पुस्तक पुनर्प्रकाशित करेंगे। कहीं-कहीं व्यंग्य में तीखापन कम प्रतीत होता है। संभव है वह लेखन की जल्दबाजी में हो गया होगा जैसे गले में खराश पढ़ने पर लगता है, व्यंग्य में तीखापन कहीं छूट गया है केवल बात है और बात में भी कोई नयापन नहीं है और ना ही ताजगी। बस पढ़ना है पढ़ने के बाद। उसमें भीगना नहीं, बिल्कुल भी नहीं। अस्तु पुस्तक अच्छी बनी है और राजस्थान अंचल की एक नई तस्वीर प्रस्तुत करती है। लेखक की पुस्तक हिंदी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

समीक्षक : **डॉ. मूलचंद बोहरा**
रीडर, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
बीकानेर (राज.) **मो: 9414031502**

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

माँ

संपूर्ण जगत माँ की औलाद है।
माँ से बड़ा कोई नही है फौलाद है।।

माँ इस संसार की मुस्कान है।
माँ से ही इस धरती की पहचान है।।

माँ के बिना बीता दिन व्यर्थ हो जाता है।
माँ के सहयोग से हर काम सार्थक हो जाता है।।

माँ में आस्था है तो उलझनों में भी रास्ता है।
माँ का प्यार ही इस दुनिया में सस्ता है।।

माँ ही अपने बच्चो की छाया है।
माँ की ही सबसे बड़ी दया है।।

माँ से ही हम सबकी प्रसन्नता है।
माँ के बिना इस जगत में क्रंदन है।।

माँ एक पुस्तकालय है।
माँ के बिना हमारा अनाथालय है।।

माँ के कारण से ही यह संसार प्रकाशवान है।
माँ के आशीर्वाद से ही हम ऊर्जावान है।।

माँ के कोख से जन्म लेने से हमे गर्व है।
माँ का दूध पीने से हम वज्र है।।

करुणा का दूसरा नाम है माँ।
एक बालक के हर घाव का उपचार है माँ।।

सुभाष गर्ग, कक्षा 11
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमाणा का गोलिया (जालोर)
मो: 9610714084

कक्षा 11(गणित) के छात्र अंकित कड़ेला ने स्केच आर्ट में महारथ हासिल की।

उदयपुर-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मेड़ता सिटी के कक्षा 11के होनहार छात्र अंकित कड़ेला ने देश दुनिया की नामी गिरामी हस्तियाँ के स्केच बनाकर नाम रोशन कर रहा है। अंकित कड़ेला नेशनल मींस कम मेरिट 2019 में चयनित छात्र है। अंकित कड़ेला ने राष्ट्रवादी भजन सम्राट प्रकाश जी माली, अन्तर्राष्ट्रीय फैशन डिजाइनर रुमादेवी, राष्ट्र नायक ए.पी.जे. कलाम साहब, महात्मा गाँधी, सचिन तेंदुलकर, अशोक गहलोत, भजन सम्राट अनिल नागौरी, सुनिता स्वामी, नागौर पूर्व जिलाधीश जितेन्द्र कुमार सोनी व वर्तमान जिलाधीश पीयूष जी सामरिया, तारक मेहता का उल्टा चश्मा के दया बहन, जेठालाल शैलेश लोढ़ा, मेड़ता सिटी के उपखंड अधिकारी शैतान सिंह जी, जननायक रुपाराम जी धनदेव आदि हस्तियों के स्केच बनाकर अपने विद्यालय का नाम रोशन कर रहा है।

साभार :
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मेड़ता सिटी (राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

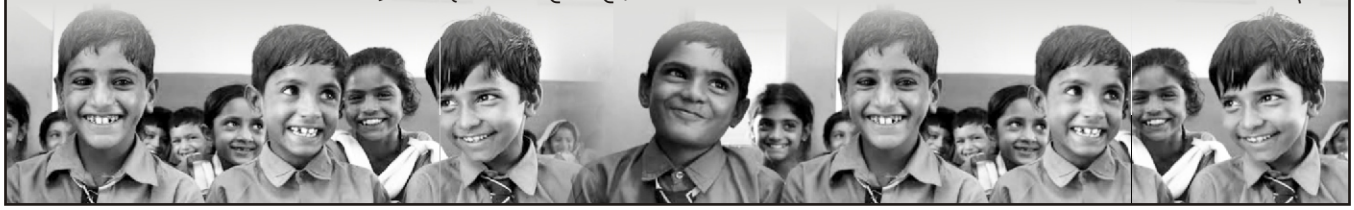

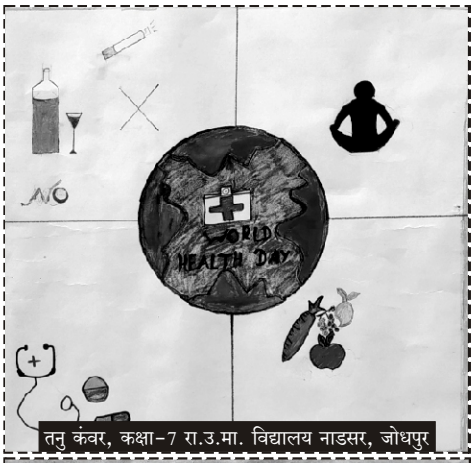

तनु कंवर, कक्षा-7 रा.उ.मा. विद्यालय नाडसर, जोधपुर

शुभजीत, कक्षा-4, राउप्रावि. बीएसएफ, बीकानेर

लक्षिता, कक्षा-7, श्रीमती राधा देवी राउप्रा. बीजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर

जसवंत, कक्षा-2, राबाउप्रावि. सराणा, जालोर

आशा नायक, कक्षा-4 राउप्रावि. बीएसएफ, बीकानेर

धापू व गुलाबी, कक्षा-7 राबाउप्रावि. सराणा, जालौर

डिम्पल, कक्षा-7, श्रीमती राधा देवी राउप्रा. बीजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

पुरस्कृत शिक्षक फोरम अध्यक्ष का किया सम्मान

बाड़मेर–डॉ. रूमा देवी फाउंडेशन के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिला अध्यक्ष सालगराम परिहार का सम्मान किया गया। आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. ललित के. पंवार एवं फाउंडेशन की अध्यक्ष डॉ. रूमा देवी ने नेशनल अवार्डी सालगराम परिहार के शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में स्मृति चिह्न प्रदान कर बहूमान किया। इस अवसर पर डॉक्टर पंवार ने कहा कि पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का मार्गदर्शन तथा सम्मान किया जाता है, विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित कर मरुस्थल जिले को हरा भरा बनाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका फोरम के सदस्यों द्वारा समय-समय पर की जाती रही है। फोरम के द्वारा शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन करने से क्षेत्र में बालिका शिक्षा को भी बढ़ावा मिलेगा। डॉ. रूमा देवी ने कहा कि परिहार द्वारा शिक्षा और समाज सेवा के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथा उन्हें उचित मार्गदर्शन भी दिया जाता है। ग्रामीण चेतना एवं विकास संस्थान के सचिव श्री विक्रम सिंह गोदारा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सरस्वती मंदिर व वार्षिक पत्रिका स्पंदन का विमोचन

कोटा–कोटा जिले में 1958 में स्थापित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आवां में वार्षिकोत्सव के अवसर पर जनसहयोग से 2 लाख रुपये की लागत से बने मंदिर में माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित की गई व साथ ही विद्यालय की वार्षिक पत्रिका स्पंदन का विमोचन किया गया। प्रधानाचार्य द्वारा सरस्वती मंदिर के निमित्त रखे प्रस्ताव को सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापक व स्थानीय निवासी श्री कृष्णचन्द्र सुमन ने सहर्ष स्वीकारा। उन्होंने इक्कीस हजार रुपये मूल्य की सरस्वती माता की प्रतिमा विद्यालय को भेंट करने के साथ ही इस अवसर पर उपस्थित सभी विद्यार्थियों व ग्रामवासियों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था की। सरस्वती माता की मूर्ति स्थापित करने के लिए मंदिर का निर्माण अभिभावक श्री महावीर गुर्जर व श्री अशोक सोहाल्या द्वारा करवाया गया। विद्यालय की वर्ष भर की गतिविधियों का आइना वार्षिक पत्रिका स्पंदन का विमोचन भी इस अवसर पर किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं, पूर्व विद्यार्थियों, एसडीएमसी सदस्यों व अध्यापकों की मौलिक रचनाओं व आवां के इतिहास सहित, प्रतिभावान विद्यार्थियों व विभिन्न गतिविधियों को रंगीन पृष्ठों में संवारा गया। समारोह में उपखंड अधिकारी श्री राजेश डागा, प्रधान पंचायत समिति सांगोद श्री जयवीर सिंह, सदस्य श्री कुशलपाल सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक श्री के के शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री प्रदीप चौधरी, सीबीइओ अरुणा कुमारीबड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों व अभिभावकों ने गरिमामयी उपस्थिति दी। विद्यालय के पूर्व छात्र, वर्तमान में अधिवक्ता राजस्थान हाईकोर्ट व राष्ट्रपति अवार्डी स्काउट श्री परमेश्वर दयाल दाधीच ने स्काउट गतिविधियों के संचालन हेतु 25 स्काउट कम्पलीट यूनिफार्म भेंट की। महेश सोनी द्वारा इक्कीस हजार व अन्य भामाशाहों द्वारा भी विद्यालय सहयोग की घोषणा की। भामाशाह व प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

विशेष शिक्षिका स्नेहलता शर्मा का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान

भरतपुर–सामर्थ्य सेवा संस्थान, झालावाड़ (राज.) द्वारा देशभर से प्राप्त नांमाकनों में से 12 राज्यों से मात्र 58 व्यक्तियों का चयन उनकी योग्यतानुसार किया गया। राजस्थान के भरतपुर जिले से नदबई ब्लॉक की विशेष शिक्षिका स्नेहलता शर्मा को उनकी गत 15 वर्षों से कार्यरत दिव्यांगता, सामाजिक सेवा एवं कोविड-19 के क्षेत्र की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सामर्थ्य ग्लोबल एक्सीलेंस राष्ट्रीय अवार्ड-2022 के लिए 27 मार्च, 2022, रविवार को जयपुर में मुख्य अतिथि विशेष योग्यजन आयुक्त श्री उमाशंकर शर्मा (राज्य मंत्री), राजस्थान सरकार एवं श्रीमती मिनाक्षी चन्द्रावत, उपाध्यक्ष- राज. समाज कल्याण बोर्ड़ (राज्य मंत्री) राजस्थान सरकार द्वारा भव्य समारोह में एक्सीलेंस अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। स्नेहलता शर्मा, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, जोगीपुरा, नदबई, भरतपुर में विशेष शिक्षिका पद पर कार्यरत है। राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित होना, भरतपुर जिले के लिए गौरव की बात हैं।

वॉलिंटियर प्रशिक्षण संपन्न

बूँदी–खटकड़ पीईईओ क्षेत्र के राजकीय प्राथमिक विद्यालय खड़ीबारा, केसरपुरा, बलदेवपुरा, कालबेलिया बस्ती खटकड़ में वॉलिंटियर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 38 वॉलिंटियर को एमटी श्री राकेश कुमार के नेतृत्व में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा के संस्थाप्रधान श्री जितेंद्र शर्मा ने बताया कि राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर के निर्देशानुसार गाँव में वॉलिंटियर्स का चयन किया गया था उनको प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। जिससे कि वह विद्यालय के विकास में कुशलता से योगदान कर सकें एवं वॉलिंटियर के रूप में अपनी भूमिका की समझ विकसित कर सकें तथा विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में सकारात्मक सहयोग प्रदान कर सके। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थाप्रधान श्री योगेश सोनी, श्री जगदीश प्रसाद मीणा, श्रीमती सुनीता शर्मा, श्रीमती कृष्णा हाडा आदि ने सहयोग प्रदान किया। कालबेलिया बस्ती खटकड़ विद्यालय में प्रशिक्षण के दौरान स्वयंसेवकों ने प्रसन्न चित्त होकर सकारात्मक सहयोग करने की पहल की। खटकड़ पीईईओ क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा, हरिपुरा जावरा की झोपड़ियां, भीमगंज, गुढ़ामकदु, गुलखेड़ी व राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खटकड़ में एक दिवसीय गैर आवासीय वॉलिंटियर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 78 वॉलिंटियर को एमटी श्री राकेश कुमार के नेतृत्व में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जावरा के संस्थाप्रधान जितेंद्र शर्मा ने बताया कि जावरा में प्रशिक्षण सत्र में 20 से अधिक वॉलिंटियर्स ने प्रशिक्षण लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री जितेंद्र शर्मा ने बताया कि पिछले 2 वर्षों में कोरोना महामारी के कारण छात्र-छात्राओं में लर्निंग गेप आ जाने के कारण उनका शिक्षा का स्तर कमजोर हुआ है वॉलिंटियर और शिक्षक मिलकर इस लर्निंग गेप को योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने से दूर किया जा सकता है। वॉलिंटियर्स शिक्षा के साथ-साथ अन्य प्रकार की गतिविधियों में भी वॉलिंटियर के रूप में कार्य कर सकते हैं जिसमें शिक्षा चिकित्सा खेल आदि विषय सम्मिलित किए गए हैं। हमें अधिक से अधिक स्वयंसेवकों को जोड़कर राज्य सरकार की इस महत्त्वाकांक्षी योजना को छात्र एवं विद्यालय हित हेतु सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थाप्रधान व पीईईओ खटकड़ श्री हुकम चंद जैन के निर्देशन में कार्य किया। विद्यालय के संस्था प्रधानों श्री जितेंद्र शर्मा, हेमराज मीणा, श्री सत्यनारायण वर्मा, श्रीमती निधि नामा, श्री विजय किशन आदि ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वॉलिंटियर्स प्रशिक्षण में आए हुए वॉलिंटियर्स का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रधानमंत्री संवाद का प्रसारण किया गया

जयपुर– बोर्ड परीक्षाओं के दौरान बच्चों को तनाव मुक्त रहने के टिप्स देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम के माध्यम से देश के छात्रों को संबोधित किया गया। इस कार्यक्रम के सीधे प्रसारण से जुड़ने के लिए महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय मानसरोवर के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के साथ माननीय शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार डॉक्टर बी.डी. कल्ला, श्री पवन कुमार गोयल अतिरिक्त मुख्य सचिव शिक्षा, श्रीमती रश्मि शर्मा राज्य परियोजना निदेशक समसा, श्री पुष्पेन्द्र भारद्वाज सामाजिक कार्यकर्ता एवं कांग्रेस प्रत्याशी सांगानेर, श्री घनश्याम दत्त जाट संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, श्री सुभाष चंद्र यादव मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जयपुर, श्री योगेन्द्र मुद्गल अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी, श्री मोटाराम उपनिदेशक आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती अनु चौधरी ने अतिथियों को पौधा प्रदान कर अभिवादन किया एवं विद्यालय विकास हित में चर्चा की।

जोरावरपुरा स्कूल में इको क्लब सदस्यों ने बाँधे परिण्डे और चुग्गा पात्र

भीलवाड़ा–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जोरावरपुरा मांडल, जिला भीलवाड़ा परिसर में शुक्रवार को पृथ्वी दिवस पर विद्यार्थियों ने पक्षियों के दाना पानी की व्यवस्था के लिये परिण्डे और चुग्गा पात्र बाँधे। प्रधानाचार्य रमेश अगनानी ने बताया कि इको क्लब नेशनल ग्रीन कोर योजना में छात्र छात्राओं राजकुमार वैष्णव, सत्यनारायण शर्मा, निर्मला कँवर, सुमन जाट, पलक बारोलिया, शिक्षक मदन लाल बलाई, सम्पत सिंह, राधेश्याम कटवाल ने परिण्डे बाँधकर दाना पानी डाला और पक्षियों का जीवन बचाने व प्राकृतिक संतुलन के लिये नियमित ये कार्य करने की जिम्मेदारी ली।

भामाशाह ने विद्यालय को कूलर भेंट किया

भीलवाड़ा–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जूना गुलाबपुरा जिला भीलवाड़ा में श्रीमती शांता देवी तोषनीवाल ने अपने पति की 15 वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर विद्यालय में एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट किया गया जिसकी लागत 35000 रुपये है।

विद्यालय में सेवा दिवस मनाया

जयपुर–आज एकादशी को राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरीगढ़ में सेवा दिवस के रूप में समस्त स्टाफ व बालिकाओं द्वारा मनाया गया। जिसके तहत पक्षियों के लिए पानी के परिंडे व चुग्गे के पात्र बांधे। प्रधानाध्यापक प्रेम दाधीच ने बताया कि गर्मी के दिनों में पक्षियों के लिए पानी की बहुत समस्या रहती है। इसके लिए प्रत्येक बालिका ने अपने अपने घरों पर भी सेवाभाव से प्रेरणा लेकर परिंडे बांधे है। इस अभियान से बालिकाओं में सेवा भावना को बल मिलेगा। जीवन का ध्येय मनुष्य मात्र के साथ पशु पक्षियों की सेवा भी रहे तो यह जीवन की सार्थकता है। इस अवसर पर स्टाफ के ओमप्रकाश सेन, सियाराम धाकड़, अजय सिंघल, मोहन सिंह, सरोज मीना, रामसिया मीना, प्रियंका दुबे ने भी परिंडे बांधे साथ ही एकादशी होने से गौसेवा हेतु ग्यारह ग्यारह सौ रुपये का सहयोग प्रदान किया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

श्रीमती फूलीदेवी अंशुल बोहरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केलवा, राजसमंद

(भामाशाह श्री तनसुख बोहरा एवं श्री नरेन्द्र बोहरा द्वारा निर्मित)

❐ मांगीलाल तेली

मेवाड़ सदैव से ही त्याग की भूमि रही है, यह परम्परा इस भूमि पर कालान्तर से आज तक यथावत चली आ रही है। महाराणा प्रताप कालीन भामाशाह को सम्मान देने एवं परम्परा को जीवित रखने हेतु राज्य सरकार ने भामाशाह योजना लागू की ताकि क्षेत्र का विकास भामाशाहों के सहयोग से अनवरत होता रहे। इसी क्रम में ग्राम केलवा, पंचायत समिति राजसमंद, जिला राजसमंद के भामाशाह परिवार श्रीमान तनसुख बोहरा एवं श्रीमान नरेन्द्र बोहरा ने ग्राम की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अलग-अलग क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करवाए। शिक्षा के महत्व को समझते हुए विद्यालय के पुराने भवन की जर्जर स्थिति एवं कमियों को देखते हुए स्वप्रेरित होकर अपनी माताजी श्रीमती फूलीदेवी एवं पुत्र श्री अंशुल बोहरा के नाम पर अत्याधुनिक भवन बनाकर राज्य सरकार को सौपने का समस्त ग्रामजनों के सामने संकल्प लिया। जिसकी अनुमानित लागत 1.07 करोड़ रुपये थी।

भामाशाहों का संक्षिप्त परिचय :-

भामाशाह श्री तनसुख बोहरा

जन्म तिथि	:	22.09.1966
पिता का नाम	:	स्व. श्री भेरूलाल बोहरा
शिक्षा	:	वाणिज्य स्नातक
जन्म स्थान	:	केलवा, राजसमंद
संतान	:	1. श्री अंशुल बोहरा
		2. श्रीमती आयुषि
		3. सुश्री आकांक्षा

भामाशाह श्री नरेन्द्र बोहरा

जन्म तिथि	:	05.07.1968
पिता का नाम	:	स्व. श्री भेरूलाल बोहरा
शिक्षा	:	वाणिज्य स्नातक
जन्म स्थान	:	केलवा, राजसमंद
संतान	:	1. श्री अर्चित बोहरा
		2. श्रीमती आलीशां
		3. सुश्री आंचल

वर्तमान कार्यस्थल :-

1. मैं. वेलकम मार्मो प्रा.लि. केलवा, राजसमंद
2. मैं. विविध मार्मो प्रा.लि. बामनटुकडा, राजसमंद

सहयोगकर्ता :-

जैसा कि विदित है कि सार्वजनिक कार्यों को पूरा करने में लोगों का सहयोग एवं प्रोत्साहन अति आवश्यक है। केलवा ग्राम जो कि राजनैतिक एवं शैक्षिक दृष्टि से समृद्ध है, सभी ग्रामवासियों ने बोहरा परिवार का साथ देने का निश्चय किया। इस कार्य की शुरूआत प्रेरक स्व. श्रीमान हरिओम सिंह राठौड़ (पूर्व सांसद), श्रीमती दीया कुमारी (सांसद राजसमंद), स्व. श्रीमती किरण महेश्वरी (विधायक एवं पूर्व मंत्री, राजसमंद), श्रीमान हरि सिंह राठौड़ (पी.सी.सी. सदस्य, राजसमंद) के द्वारा की गई। श्रीमान अरविंद कुमार पोसवाल जिला कलक्टर राजसमंद के द्वारा अतुलनीय प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध करवाया गया। वहीं विभाग के सी.एस.आर के प्रभारी श्री दिलीप परिहार ने महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

भवन निर्माण एवं लोकार्पण में माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान अशोक गहलोत, डॉ. सी.पी. जोशी विधानसभा अध्यक्ष, श्रीमान गोविंद सिंह डोटासरा तात्कालीन शिक्षा मंत्री एवं श्री उदय लाल आंजना प्रभारी मंत्री राजसमंद का योगदान सदैव प्रेरणा देता रहेगा। शिलान्यास एवं लोकार्पण में समस्त ग्राम जनों की उपस्थिति भी सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त भवन का निर्माण कार्य :-

भामाशाह श्री तनसुख बोहरा एवं श्रीमान नरेन्द्र बोहरा के द्वारा सुविधाओं युक्त नवीन भवन का निर्माण करवाया गया। इस भवन में कुल 13 कक्षा-कक्ष, एक विशाल हॉल, प्रधानाचार्य कक्ष मय शौचालय एवं स्टाफ कक्ष बनवाया गया। छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ के लिए अलग-अलग अत्याधुनिक शौचालय एवं मुत्रालय का निर्माण करवाया गया साथ ही विद्यालय की सुविधाओं हेतु कम्प्यूटर मय प्रिंटर सभी कक्षा-कक्षों हेतु व्हाईट बोर्ड भी उपलब्ध करवाए गए।

उक्त भवन 20792 स्कवायर फीट में बना हुआ है। जिसके मध्य में 80×120 का खुला प्रांगण है जिस पर पार्क विकसित किया जाना प्रस्तावित है।

प्रधानाचार्य
श्रीमती फूलीदेवी अंशुल बोहरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केलवा, राजसमंद (राज.)
मो: 9799592315

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह–मार्च 2022 में 50 हजार एवं अधिक का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	District	Amount
1	DINESH KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHEERWAS CHHOTA (211545)	CHURU	639800
2	RAM SINGH	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL RIJANI (211618)	JHUNJHUNU	300000
3	VIJAYPAL SINGH BALODA	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL RIJANI (211618)	JHUNJHUNU	300000
4	OLIVE TEX SILK MILLS PRIVATE LIMITED	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KIRODI NOHRA (216087)	JHUNJHUNU	275000
5	RANJEET SINGH	SHAHEED SURENDRA KUMAR GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PALTHANA SIKAR (213283)	SIKAR	250000
6	MANGHARAM CHOUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BINJWADIYA BILARA (219717)	JODHPUR	200000
7	ANIMESH JAKHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHABAN (211115)	HANUMANGARH	200000
8	LADU RAM JAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BENATHA JOGALIA (215487)	CHURU	200000
9	ISHWAR SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHEERWAS CHHOTA (211545)	CHURU	126000
10	SHREE RAM SHYAM STEEL TRADERS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DULRASAR (215314)	CHURU	119000
11	SUBHASH CHANDRA DARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GARINDA (213130)	SIKAR	113000
12	SAHI RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL 12 H HISHYAMAKI (212133)	GANGANAGAR	101000
13	SEEMA MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KOYALA (212745)	SAWAI MADHOPUR	100000
14	LALIT JAKHAR	SHAHID GANPAT SINGH GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SIHOT CHHOTI SIKAR (213269)	SIKAR	100000
15	SHRIRAM SAINI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KAYASTHPURA (227425)	JHUNJHUNU	100000
16	SANTOSH KUMARI	SHAHEED REKHA RAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AAKAWA (213288)	SIKAR	92000
17	BRAHM PRAKASH RANWA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL ADMALSAR (476792)	CHURU	90000
18	HEERA RAM	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AKADARA (220590)	BARMER	90000
19	DHARA SINGH MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANOTA (464623)	SAWAI MADHOPUR	75000
20	NANDA SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHILERIYA (215317)	CHURU	68000
21	NAURANG RAM BHINCHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUSUMDESAR (215570)	CHURU	62000
22	KHIRAJ SINGH BHAKAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BUCHAWAS (211552)	CHURU	60000
23	VIJAI PAL SINGH	GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL DEEPSAR (215567)	CHURU	57000
24	SAHIRAM	SHAHEED ISTIYAK AHMED AND SETH PHOOLCHAND JALAN GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NUA (211558)	JHUNJHUNU	56100
25	MANJU KUMARI	SHAHEED RAJKUMAR GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHAINSALI (215260)	CHURU	55000
26	SNAH KUMAR	SHAHEED RAJKUMAR GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHAINSALI (215260)	CHURU	54000
27	MUKAT BIHARI SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GOPINATH KAMAN (217003)	BHARATPUR	51500

Rajshala Education Department
सत्यमेव जयते

28	DR JYOTI SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SINGHASAN (213401)	SIKAR	51000
29	LALIT KUMAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL BORI (214933)	BANSWARA	51000
30	SANTOSH SOHU	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL WARD NO 2 BALARAN (449206)	SIKAR	51000
31	MANI BOYAL	SWATANTRATA SENANI SWARGIYA SHRI SANWATRAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SOLANA (215811)	JHUNJHUNU	51000
32	SANTA SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DABRI (212412)	HANUMAN-GARH	51000
33	POORAN MAL	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL UDAIPURA (493231)	SIKAR	51000
34	SUDHIR MATWA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DADIYA (213378)	SIKAR	51000
35	SHANKAR LAL MOCHI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SARAYAN (211538)	CHURU	51000
36	MANOHAR LAL SHARMA	GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL LACHHADSAR (215546)	CHURU	51000
37	VED PRAKASH SAHARAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SURPURA (212375)	HANUMAN-GARH	51000
38	VIJENDRA KUMAR SUROLIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BABAI (215987)	JHUNJHUNU	51000
39	ADITI MEHTA	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL JALELI CHAMPAWATA (476286)	JODHPUR	50000
40	LOKESH BHATT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ARNOD DISTRICT PRATAPGARH (217792)	PRATAPGARH	50000
41	VIJENDRA KUMAR SUROLIA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BABAI (215987)	JHUNJHUNU	50000
42	MANGARAM	SHAHEED NARANARAM GOVT. GIRLS UPPER PRIMARY SCHOOL JAKHARO KI DHANI NOSAR (497660)	BARMER	50000
43	DINESH CHANDRA SHARMA	SETH SHRI GOVIND RAM JHOKHIRAM GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL BHOJNAGAR (481269)	JHUNJHUNU	50000
44	HET RAM DOODI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RANJEETPURA (211351)	BIKANER	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–मार्च 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	280	3499865
2	JHUNJHUNU	138	1929385
3	SIKAR	114	1218851
4	NAGAUR	168	567844
5	JODHPUR	103	482271
6	HANUMANGARH	72	446339
7	BANSWARA	196	440709
8	BARMER	142	432384
9	GANGANAGAR	87	363174
10	PRATAPGARH	49	309651
11	CHITTAURGARH	65	301418
12	JAIPUR	72	270481
13	UDAIPUR	150	258209
14	ALWAR	91	254228
15	SAWAIMADHOPUR	29	247450
16	BHARATPUR	56	246942
17	BUNDI	87	240694
18	PALI	606	214285
19	BHILWARA	29	189523
20	AJMER	81	173072
21	RAJSAMAND	574	171824
22	KOTA	53	142285
23	BARAN	45	123430
24	BIKANER	24	94572
25	DUNGARPUR	17	92300
26	TONK	21	53551
27	DAUSA	34	52950
28	JAISALMER	71	48241
29	JHALAWAR	23	47232
30	DHAULPUR	20	45401
31	KARAULI	13	39821
32	JALOR	17	29655
33	SIROHI	5	11150
	Total	**3532**	**13039187**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मई, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

राजस्थान में सरकारी विद्यालयों की बदलती तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाखल
पं.स. सांचोर जिला जालोर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिरामी,
लूणी जिला–जोधपुर

आर.के. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, धमेंटा,
प.स. पिपलांत्री, राजसमंद

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, टपुकडा,
तिजारा, जिला–अलवर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुडला
जिला–राजसमंद

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रुलियानी,
जिला–सीकर

महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय,
विद्यानगर, जयपुर

श्रीमती फूली देवी अंषुल बोहरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
केलवा, जिला–राजसमंद

चित्र वीथिका : मई-जून, 2022

मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार माननीय श्री अशोक गहलोत अपने विधान सभा क्षेत्र के महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, सरदारपुरा जोधपुर में कक्षा 3 मास्टर हिमान्शु कंवरिया एवं बेबी आर्या गौर के बीच आपसी अंग्रेजी में संवाद पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए किया गया ट्वीट एवं विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से संवाद करते हुए माननीय मुख्यमंत्री महोदय।

अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय श्री पी. के. गोयल द्वारा अलवर के विद्यालयों का निरीक्षण के दौरान बोर्ड परीक्षा केंद्र माधोगढ़ एवं अकबरपुर में परीक्षा व्यवस्था का अवलोकन के साथ ही शिक्षा अधिकारी को संबंलन तथा बच्चों के साथ संवाद करते हुए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पालेरियों की मादड़ी, उदयपुर में काली बाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी वितरण समारोह में उपस्थित अतिथिगणों द्वारा स्कूटी वितरण।

राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. ललित के. पंवार एवं फाउण्डेशन अध्यक्ष डॉ. रूमादेवी आयोजित कार्यक्रम में पुरस्कृत शिक्षक फोरम, बाड़मेर अध्यक्ष श्री सालगराम परिहार का सम्मान करते हुए ।

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय हरीगढ़, खानपुर, झालावाड़ में एकादशी को सेवा दिवस के रूप में मनाते हुए गर्मी में पक्षियों के लिए परिण्डे बांधते हुए प्रधानाध्यापक प्रेम दाधीच,समस्त स्टाफ व विद्यार्थीगण ।